जल रही थी । वेदादि मतकी सन्तति
सब उस में जल रहीथी ॥ १ ॥ मलखेड
में पुरुषोत्तम की सन्तति पियारी । माता
पद्मावतीकी गोदीमें पल रही थी ॥२॥
ब्रह्मचर्य्यव्रत पिता ने क्रीडा से बाला-
पन में । दिया पर वो उससे आत्मा
शोभा बढ़ा रही थी ॥ ३ ॥ अविद्या से
जिन धरमपर छाई थी अंधियारी ।
धीमी सी एक बत्ती बुध ग्या में जल
रही थी ॥ ४ हिम शीत की सभा में
शास्त्रार्थ बौद्ध गुरु से । कर आत्मा वो
जग में जब जय को पा रही थी ॥ ५॥
जन मंडली जो पीडित मिथ्यात्व अग्नि
से थी । सम्यक्त्व जलसे आतम सुख
मोक्ष पा रही थी ॥ ६ ॥ उस यत्नसे ध-

रम का परचार क्यों न करते। अकलंक देव की जो आत्मा बता रही थी॥ ७॥

३ दादरा (जातिकी अपील)

तुमहीं हो हितैषी कोई और नहींहै ॥ टेक ॥ सर्वोत्तम जाति तुम्हारी, डूबी जाती मंझधारी। तुमहीं हो बचैया कोई और नहीं है ॥ तुम० १ ॥ कुपुत्रों ने कलंक लगाये, हमें नास्तिक वाम कहाये तुम दूर करैया कोई और नहीं है॥ तुम ॥ २ ॥ अपने पुत्रों की ख्वारी, लखि फटती छाती हमारी। तुम धीर धरैया कोई और नहीं है ॥ तुम० ३ ॥ बालवृद्ध विवाह कुरोती, इन रोगोंमें मैं बीती। तुमहीं हो चिकित्सक कोई और नहीं है ॥ तुम० ४ ॥ द्वेषासुर आन दबाया,

घर घरमें दांत लगाया । तुमहीं हो ध-रमवीर और नहीं है ॥ तुम० ५ ॥ रंडी ओर आतशवाजी, धर्म कृत्योंमें वरवादी । तुमहीं हो रिफार्मर कोई और नहीं है ॥ तुम० ६ ॥ अविद्या निशि अं-धियारी, घटा छाई चहुंदिशि कारी । तुम " चन्द्र ,, प्रकाशक कोई और नहीं है ॥ तुम० ७ ॥

४ दादरा (विद्याप्रचारकी अपील)

करो विद्या का तुम परचार जाति हितैषी ॥ टेक ॥ सब ही लोगोंने का-लिज खोले । तुमने न खोले, न बोले, क्यों जाति हितैषी ॥ करो० १ ॥ सवलोग उटकर काम में लागे । तुम भी अब जागो, न सोओ, अय जाति हितैषी

॥ करो० २ ॥ सब ने कुरीती का मुंह काला कीना । तुम भी भगादो, मिटादो अय जाति हितैषी ॥ करो० ३ ॥ सबही अपना धरम फैलाते । तुम भी फैलादो बजादो, ये डंका हितैषी ॥ करो० ४ ॥

५ कव्वाली (पूर्व समयकी कठिनता)

वह वक्त भी हमारे जिन धर्मका कठिन था । दुनियां में बुध धरमका जिस वक्त संघटन था ॥ १ ॥ उस वक्त में धरम का परचार तो क्या करते । जैनी का नाम लेतेही उसका तो मरन था॥२॥ आपत्ति की घटायें घुमड़ीथीं सब दिशा से । छाई थी अंधियारी जिन सूर्यका छिपन थी ॥ ३ ॥ इक वीर ने न कुछभी प्राणों की परवा करके । ब्रह्मचारी ने

धरम का छिपकर किया पठन था ॥४॥ शास्त्रार्थ सिंह ध्वनिसे वादी मृगी भगाकर। जैनी ध्वजाका चहुंदिशि किया उसने फरहरन था ॥ ५ ॥ अब तो मिला सुशासन विद्वान और धन जन। कहलाते फिर क्यों नास्तिक, जाती अधःपतनथा ॥ ६ ॥ अय कोमके हितैषी आंसू बहाने वालो। जागो उठो नहीं अब सोने का ये समय था ॥ ७ ॥

६ भजन (जैन जातिकी वर्तमान हालत)

हो गई कैसी यार हालत जैन जाति की ॥ टेक ॥ विद्या से मुखको मोड़ा। शिक्षा से नाता तोड़ा। करते आनाचार हालत० १ ॥ बच्चों का व्याह कराते। तन धन वल सभी नसाते। बनाते कायर

ख्वार ॥ हालत० २ ॥ बुड्ढों का व्याह र-
चाते । धन लेकर मजा उड़ाते । बढ़ाते
बिधवा नार ॥ हालत० ३ ॥ रंडी को रु-
पया देते । व्यभिचार की शिक्षा लेते
देयं सन्तान बिगार ॥ हालत० ४ ॥ आ-
तिशवाजी फुलवारी । रुपया दें बने अ-
नारी । कहे मूरख संसार ॥ हालत० ५ ॥
अश्लील सीठने गारीं । हा गावें पति-
व्रत नारीं । लज्जा भूषण टार ॥ हालत
॥ ६ ॥ मेलों में ज्योंनार कराते । बिर-
था ही द्रव्य लुटाते । करें ना धर्म प्र-
चार ॥ हालत० ७ ॥ नाटक नाशक सम
करके । सन्तान कुशिक्षित करके । देवें
भाव बिगार ॥ हालत० ८ ॥ ना संयम
धारण करते । गलियों में नाचते फिरते

होय क्या लाभ अपार ॥ हालत० ९ ॥ बड़े २ सामान बनावें। धनवाले जगत कहावें। होय ना धर्म प्रचार ॥हालत०१० लाखों प्रतिमा के होते। प्रतिष्ठा रोज कराते। नाम पर धन न्योछार ॥ हालत० ॥ ११ ॥ विद्या अरु धर्म को कैसा देना होता है पैसा। न जाने बने कंगाल ॥ हालत० १२ ॥ अब छाई निशि अंधियारी। करो धर्म "चन्द्र,, उजियारी। नहीं डूवो मंझधार॥हालत०१३॥

दादरा (धर्म प्रचारकी अपील)

फैलादो ये ज्योती धरम रवि की॥टेक॥ विन जैन सूर्य के प्रकाश जीव भटकते अब मार्ग प्रदर्शक नहीं क्यों किरणें छिटकते ॥ रे धर्म० १ ॥ करते तयार खेती

जो शिकमी काश्तकार । करते नहीं हो उसपै अब क्यों अपना अधिकार । रे धरम० २ ॥ लहरा रही है खेती खड़ी अब जो सामने, क्यों काटकर रखते नहीं हो घरमें आपने ॥ रेधरम० ३ ॥ रिफार्मरों ने ठीक किये खेत जोतकर । लहराओ खेती अपनी धर्म बीज डालकर ॥ रे धरम० ४ ॥

८ कव्वाली (जातीय शिक्षा)

ठहरो जरा तो सोचो तुम कहां को जारहे हो । अपने ही पूर्वजोंका रस्ता भुला रहे हो ॥ १ ॥ अकलंक पात्र केशरि समन्त भद्र स्वामी। कृत्यों पै आज उनके धब्बा लगा रहे हो ॥ २ ॥ प्राणों से भी उन्होंने रक्षित किया धरम को। सन्तान

आज उनको कायर बना रहे हो ॥३॥ विद्याका सूर्य जिन का संसार का प्रकाशक। संतान उनकी अन्धी मूरख बना रहे हो ॥ ४ ॥पाखंड करके खंडन फैला दिया धरम को। तुम धर्म नामसे ही मुंह क्यों छिपा रहे हो ॥ ५॥ प्राणों से भी पियारे अपने धरम को अब तुम नास्तिक वाममार्गी निन्दिल कहा रहे हो ॥ ६ ॥ श्री रामचन्द्र लक्ष्मण श्रीकृष्ण भीम युधिष्ठिर। संतान उनकी अब तुम घर में डरा रहे हो ॥ ७॥ थे वाल ब्रह्मचारी पूर्वज उन्हीं की सन्तति व्यभिचार शिक्षा कारण रन्डी नचा रहे हो ॥ ८ ॥ नाटक से नाश करके नुकते से पेट भरके। जलसा दिखाके नचके

मूरख कहा रहे हो ॥ ९ ॥ अय जाति के सुपुत्रो ! जागो क्यों पूर्वजों की। कीर्ती जो " चन्द्र,, उज्वल कालिख चढ़ा रहे हो ॥ १० ॥

९ कव्वाली (वाल विवाह व्यवस्था)

देखो तुम्हारी सन्तति अब कैसी हो रही है। माता पिता के कुत्सित कृत्यों पै रो रही है ॥ १ ॥ विद्या नहीं पढ़ाते ब्रह्मचारी नहीं बनाते। शादी को हो रचाते कायर हो रही है ॥ २ ॥ कर्तव्य था तुम्हारा शिक्षित उन्हें बनाना। कर्तव्य से तुम्हारे अधोगति को जारही है ॥ ३ ॥ सन्तति नहीं पढ़ाई गर्दन पर छुरी चलाई। स्त्री के फंदे पड़कर बोझे को ढो रही है ॥ ४॥ परमेह है सताता

आलस्य घर बनाता । रोगों ने आन घेरा बे मौत मर रही है ॥ ५ ॥ बच्चों की शादी करते बल वीर्य नाश करते अब इस तुम्हारी सन्तति की ख्वारी हो रही है ॥ ६ ॥

१० भजन (जाति उत्तेजक)

यही पहिचान है रे मुर्दे जिन्दे की मेरे भाइयो ॥ टेक ॥ जैसे मुर्दा पड़ा रहे बिन ज्ञान बोल और चाल । सुन-कर नास्तिक वाममार्गी करें न कुछ भी टाल ॥ यही० १ ॥ जैसे मुर्दे को नहीं होता कभी हिताहित ज्ञान । अपनी जाती जाय रसातल करें न तौभी ध्यान ॥ यही० २ ॥ वादी खड़े रहे हैं चहुं दिशि ले करके शमशेर । तौ भी ज़रा न होवें

विचलित ये मुर्दों के ढेर ॥ यही० ३ ॥ गीदड़ कव्वे मुर्दे को सब चोंथ २ करें खांय । अंग रूप जैनी भाइन को दूजे निगले जांय ॥ यही० ४ ॥ सारा जग अब हुआ जिन्दा तुम क्यों मुर्दा यार । जागो उठो करो अव जग में जैन "चन्द्र,, उ-जियार ॥ यही० ५ ॥

११ भजन (धर्मके दश लक्षण)

सुनिये चित्त लगाय दशधा धर्म सुख दाई ॥ टेक ॥ जीवों पै क्षमा नित कीजे समतारस को चख लीजे । दीजिये क्रोध भगाय ॥ १ ॥ मत कीजे मान बड़ाई । अभिमान बड़ा दुखदाई । राखिये मा-र्दव भाय ॥ २ ॥ सम राखियें बचन मन काया । नहिं भूल के कीजे माया । भाव

आर्जव सुखदाय ॥ ३ ॥ तुम झूंठ वचन मत बोलो । अब सत्य जवाहर खोलो । प्रतिष्ठा जग में पाय ॥ ४॥ सन्तोष लोभ तज कीजे। अंतर आतम शुध कीजे देह कर शुद्ध नहाय ॥ ५ ॥ विषय इन्द्री बश कीजे । जीवों पै दया नित कीजै करो बश मन बच काय ॥ ६ ॥ अंतर बाहिर द्वादश बिधि। कीजे तप जागेगी रिधि। दीजिये कर्म नशाय ॥ ७ ॥ आहार शास्त्र औषधि अर । निर्भय चारों दानन कर । होय सुख दुःख नशाय॥ ८॥ आकिंचन धर्मको करना । परिग्रह प्रमाण से रखना । छोड़ि सब शिवको जाय ॥ ९ ॥ करो ब्रह्मचर्य्यका पालन। यही धर्म सुक्ख का कारन। ज्ञान"शशि,,

उगि तम जाय ॥ १०॥

१२ भजन (सप्तव्यसन निषेध)

छोड़ो इन व्यसनोंका संग सत्यानाश मिटानेवाले ॥ टेक ॥ सम्पति जूवा खेल गवावें । इज्जत जूता खाइ नशावें ।तो भी जरा मजा नहिं पावें । इज्जत हुर्मत खोने वाले १ जो है महा घिनावन मांस निर्दय खावें आवे वास । जिनके रहम न दिलमें पास । क्योंकर वहिश्त पाने वाले २ दौलत खोकर पियें शराव । फिर ना रहे बदन में ताब । कुत्ते दें मुंह में पेशाव, दिलसे दया गंवानेवाले ३ धन यौवन चौपट कर छलसे । पिटवा कर निकलावे घरसे । दुखिया सुजाक और आतश से, रंडी वाजी करनेवाले ४ चोरैं सम्प-

ति प्राणन प्यारी । तौ भी रहते सदा दु-
खारी । वध वंधन सहते दुख भारी । देखो
चोरी करनेवाले ॥ ५ ॥ जोवें बनमें चरके
घास डरते पशू करें ना त्रास । तौ भी क-
रते उनका नाश । सीधे नर्कों जानेवाले
॥ ६ ॥ विषयी फंसे कामके फंद । निरखें
परनारी मुख " चन्द्र " पापों से न डरें
मति मन्द । झूंटा खाना खानेवाले ॥ ७ ॥

१३ भजन (कुरीत निवारण)

रोको वदरस्मोंका प्रचार जाती उ-
न्नति करनेवाले ॥ टेक । शादी करो न
बालापनको । खोवे वलवीरज अरु तनको ।
पैदा करे न बिद्या धनको । निष्फल ज-
न्म गंबानेबाले ॥ १ ॥ बुड्ढेको लड़की देजावे
बकरी ऊंट गले लटकावें । दौलत लेकर

मजा उड़ावें। लड़की जन्म रुलानेवाले ॥२॥ रांड नचा अपशकुन बनावें। कुर्बानी धन देइ करावें। खुश होकर धन धर्म गमावें। मरकर दोजख जानेवाले ॥ ३ ॥ जो आतिशबाजी छुड़वावें। खुश हो मालमें आग लगावें। हिंसा करके पाप कमावें। घूनी चाम सूंघनेवाले ॥ ४ ॥ मेटो कुरीत तम तज द्वन्द। भेंटो या से शुभ सुख "चंद्र" धंधे में ना होवो अंध। घरसे वे सुध रहनेवाले ॥ ५ ॥

१४ भजन (वेश्या खंडन)

कभी मत करना यार भूलके रंडीवाजी ॥ टेक ॥ आतिश सुजाक हो जावे। गठिया परमेह सतावे। मरें कर हाहाकार ॥ भूल० ॥ छल करके धन हर लेवे।

कंगाल तुम्हें कर देवे। पिटाकर देइ निकार ॥ मूल० २ ॥ पुरखा मर लड़का रहवें। तिरिया मर लड़की देवें। यही चाहें बदकार ॥ मूल० ३ ॥ रुपया में टका रखावे। खुश होकर गाय कटावे। करे कुर्बानी यार ॥ मूल ४ ॥ वेश्याले लड़की जाई। वह जगसे करे कमाई। होय तुम घर सुसरार ॥ मूल० ५ ॥ सन्तानका शील डिगावे। व्यभिचारी उन्हें बनावे। होउ तुम अब हुशियार ॥ मूल० ६ ॥ तुम कुशल जो अपनी चाहो। धन धर्म बचाना चाहो। करो अब शीघ्र सुधार ॥ मूल० ७ ॥

१५ दादरा (वृद्धविवाह)

चले डगमगी चाल मेरा हरियाला

वरना ॥ टेक ॥ शिर तेरे फूलोंका सहरा सेत पके सब बाल ॥ मेरा० १ ॥ तन सोहे अतलसका जामा भूल गई सब खाल ॥ मेरा० २ ॥ मुखमें एकहु दांत रहा ना बैठ गये दोऊ गाल ॥ मेरा० ३ ॥

१६ भजन (व्यर्थव्यय निषेध)

मत कीजे यार फिजूल खर्ची धनकी ॥ टेक ॥ सहि धूप ओस अरु शर्दी । आयू व्यतीत सब करदी । कमाया द्रव्य अपार ॥ १ ॥ नहिं धर्ममें धनको देते पापों को मोल हैं लेते । कुरीती करें प्रचार ॥ २ ॥ महफिल में रन्डी नचाते। खुशहो धन धर्मगंवाते। बढ़ाते हैं व्यभिचार ॥ ३ ॥ आतशबाजी छुड़वाते। जीवोंका होम कराते । लुटाते धन सुख-

कार ॥ ४ ॥ अब सभा में देउ कमाई जात्युन्नति होवे भाई। करो जिन धर्म प्रचार ॥ ५ ॥

१७ भजन (सिगरेट निषेध)

जरा होजाना हुशियार ओ सिगरेट के पीनेवाले ॥ टेक ॥ कडुआ मुख हो खुश्की लावे। दिल दिमाग में नुक्स करावे। आंखोका है तौर घटावे। हो जिरियान जो पीनेवाले ॥ ज़रा० १ ॥ गौरवका सब धुंआं उड़ाकर। कर सिगरटका धुआं फकाफक। कपड़ा भी निज देयं जलाकर। देखो चुरट बाज मतवाले ॥ ज़रा० २ ॥ पेड्रो आदिक सिगरट लावे। धन अरु धर्ममें आग लगावे। होकर दमा साथ दम जावे।

कानों से कम सुनने वाले ॥ जरा० ३ ॥ राजा भी कानून बनावे। बच्चा कभी न पीने पावे। तौ भी तुमको शर्म न आवे। ज्ञानका " चन्द्र ,, छपानेवाले॥जरा० ४॥

१८ भजन (ब्रह्मचर्य)

लेलो ब्रह्मचर्य्य का शर्ण जल्दी मुक्ती जानेवाले ॥ टेक ॥ या बिन जन्त्र मन्त्र सब कीले। सेवा देव करें या हीले। खाते खता कांछ के डीले। परत्रिय अंग देखनेवाले ॥ १ ॥ कर देते हैं बाल बिवाह। नाशें शील स्वास्थ क्यों आह। फिर ना पाते उन्नति राह। हा बिन मौतके मरनेवाले ॥ २ ॥ चाहिये बिधवा धर्म कमावे। शादी कर न कुकर्म करावे अंधी आंखों धूल उड़ावे। अपना मजा

चाहनेवाले ॥ ३ ॥ कहकर बांझ नपुंसक रोग । बालक अर्थ कराय नियोग। करते खूब मजेसे भोग। सबको धोका देने वाले ॥४॥ रहकर ब्रह्मचर्य्य अकलङ्क तारा हरा बौद्ध का टंक । कीना प्रकाश जैन "मयङ्क,,। मिथ्या तम घन हरने वाले ॥५॥

१९ दादरा (नेशनल)

इस जैन धरम पर आजानारे आजानारे सुख पाजाना रे॥टेक॥ ये है धर्म सभी आतमका जांच इसे अपना जाना रे ॥ इस० १ ॥ भूल अनादी हुई जो तुमसे उसको जान मिटा जानारे ॥ इस० ॥ २ ॥ रागद्वेष जो बन्धका कारण मिटा उसे मोक्ष पाजानारे॥ इस० ३ ॥ ना ह्यां जरूरी रिश्वल सिफारिश स्वयं शक्ति

प्रगटा जाना रे ॥ इस० ४ ॥ मत समझो यह धर्म अन्यका जान निज अपना जाना रे ॥ इस० ५॥ भाषित जिन सर्वज्ञोपदेशक तत्व स्वरूप समझ जानारे । ॥ इस० ६॥ वीता भटकते काल अनन्ता तदपि न तुम निज सुखजानारे ॥ इस० ॥७॥ "चन्द्र,, मनुष्यभव ज्ञान पाय कर आतम परमातम बना जाना रे ॥इस०८॥

२० दादरा (चेतावनी)

ना सोवो चेतन प्यारे जागो अब हित ठान ॥ टेक ॥ या कुमति सौति संग धाया । याने मद मोह पिलाया । दुख देकर नाच नचाया ॥ प्यारे० १ ॥ या कुमता का संग छोड़ो । दुखड़ों से मुखड़ा मोड़ो । जिन वानी नेहा जोड़ो

प्यारे ० २ ॥ ये छोड़ो पाप कमाना । जिन " चन्द्र ,, भजो भगवाना । कर आतम का कल्याना ॥ प्यारे० ३ ॥

२१ भजन (पूर्वजोंके और हमारे कृत्य)

कहां गये जैन जातिके वीर नैय्या पार लगाने वाले ॥ टेक ॥ कहां गये उमास्वामि महाराज । तत्वारथ मय रचा जहाज । क्यों नहीं रखते लज्जा आज जैनी लज्जा रखने वाले ॥ १ ॥ देखत पात्र केशरीसिंह । वादी गज भाजें कर चिंघ । आते अब तुम क्यों ना ढिंग । भव्योंकी भय हरनेवाले ॥ २ ॥ स्वामी रक्षक श्री अकलंक । नाशे जैन जाति आतंक । काटा बौद्ध धर्मका टंक । जैनी ध्वजा उड़ानेवाले ॥ ३ ॥ उन संतति

हम विद्या हीन । वाल व्याह कर धन बल छीन । फूटसे होरहे तेरातीन । सत्यानाश मिटानेवाले ॥ ४ ॥ गटपट खांय विदेशी खांड़ । रंडी और नचावें भांड़ सारी लोक लाज को छांड़। बद रश्मों के चलानेवाले ॥ ५ ॥ संभलो अब ना हो स्वच्छन्द । राखो रही जो तज कर द्वन्द । शुभ मति दायक भज जिन "न्यचंद्र,, जाती उन्नति करनेवाले ॥ ६ ॥

२२ भजन (अकलंक और निकलंक चरित्र)

धर्मपर किये प्राण न्योछार ॥ टेक॥ गुरुअकलंक और निकलंक रहे बाल ब्रह्मचार । गृह तज धर्म प्रचार न छिपकर पढ़े बौद्ध चटसार ॥ १ ॥ स्याद्वाद युत अर्थ करन ते प्रगट भेद भयो सार। भागे

दोनों भ्रात बौद्ध गुरु पीछे किये सवार २॥ कही श्री निकलंक भ्रात तुम कीजो धर्म प्रचार। छिप कर रहो नहीं दोउनके होंय प्राण न्योछार ॥ ३ ॥ धर्म हेतु अकलंक भ्रात बचमान रहैं छिप थान। अन्य पुरुष संग भाग श्री निकलंक दिये निजप्रान ॥ ४ ॥ श्री अकलंक जाइ हिम शीतल राजसभा भय टार। तारा देवी संग मास षट बाद कियो जयकार ॥ ५ ॥ बौद्ध धर्मका किया पराजय जैन धर्म परचार। फहरा ध्वजा जैनकी नैया का कीना उद्धार॥ ६ ॥ दिये प्राण निकलंक कियो अकलंक जैन उद्धार। धर्म प्रकाशा " चन्द्र,, सर्व मिल बोलो जयर कार ॥ ७ ॥

२३ भजन (धर्म प्रचार करनेकी अपील)

धरम जिन फैलादो घर घर द्वार ॥ टेक ॥ सच्चा मारग मोक्ष न पाकर भटकत हैं संसार। तिन्हैं बताओ जैन धर्म मग लीजे दया चितधार ॥ १ ॥ वीतराग विज्ञान अहिंसा परम धरम सुखकार। सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण मग मोक्ष करो परचार ॥२॥ तन मन धन न्योछावर कर मत डरो किसी परकार। प्राण जांय चाहें रहैं धर्म परचार करो प्रतिवार ॥ ३ ॥ श्री अकलङ्क बाल ब्रह्म-चारी पाये कष्ट महान। और धर्महित निकलंक गुरुने दीने अपने प्रान ॥४॥ श्री समन्त भद्र स्वामी अरु मानतुंग आ-चार। धर्म हेतु दुख सहे टोडरमल किये

प्राण न्योछार ॥५॥ तन धन ममता छोड़ धर्मवीरोंने किया परचार। मेटि तिमिर अज्ञान करो तुम भी जिन "चन्द्र,, उजार॥

२४ भजन (धर्मप्रचार करनेकी अपील)

करो जैन धर्म परचार सुजन क्यों देर लगाते हो ॥ टेक ॥ धारक सत धर्म वताते । क्यों नास्तिक वाम कहाते । करो दूर दोष मिथ्या क्यों कायर वनते जाते हो ॥ करो० १ ॥ डंका चहुं ओर वजाया जिन धर्म था जग में छाया । होकर अज्ञानी आज धर्म पर दाग लगाते हो ॥ करो० २ ॥ अकलंक सिंह गुरु आये वादी मृग देख पलाये । । होकर उनकी सन्तान हाय तुम आज डराते हो ॥ करो० ३ ॥ पूर्वजों का यश जग छाया

तन धन धर्मार्थ लगाया। तुम नचाके रंडी को धन कर ज्योंनार लुटाते हो ॥ करो ॥ ४ ॥ इक समय कठिन जब आया। तज प्राण धर्म फैलाया। तुम न्याय राज्य ऐसे में भी मुंह आज छिपाते हो ।करो०५। अब उठो कम्मर कस लीजे। दिग्विजय चहूं दिशि कीजै। कर जैन "चन्द्र" प्रकाश वृथा क्यों समय गमाते हो करो०॥६॥

२५ गजल पश्तो (जाति शिक्षा)

देखो मित्रो ये तुम्हारा क्या जमाना होगया। छोड़ आलस आंख खोलो अब सवेरा होगया ॥ १ ॥ दोष मिथ्या किस्वदन्ती छाया था तम धर्म पर। जैन तत्व प्रकाश मण्डल से उजाला

होगया ॥ २ ॥ नास्तिकों ने नाम ना-
स्तिक बहुत दिन हमको कहा। अबतो
नास्तिकपनका भण्डाफोर उनका हो
गया ॥ ४ ॥ भय नहीं अन्यायका यह
राज्य पंचम जार्ज का। और सिंह नि-
नाद से दिग्विजय जारी हो गया ॥५॥
बीरता गर हो सपूतो ! शेप है तो उठो
ज़रा। धर्मपर तन मन धनादिक सब
निछावर होगया ॥ ६ ॥ नगर कीर्तन
आमसभा शंका समाधानादि से। सच्चा
प्रचारक कार्य अनुकरणीय भी तो हो
गया ॥ ७ ॥ कर दिखाओ कार्य कुछ
तुम भी डरो मत अब ज़रा। जैनतत्व
प्रकाश मण्डल "चन्द्र,, उदयितहोगया.८।

॥ वन्देंजिनवरम् ॥

भजन स्त्रीशिक्षा ।
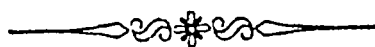
१—भजन ॥

करो स्त्री शिक्षा परचार जाती उन्नति करने वाले ॥टेक॥ है स्त्री पुरुषोंकी जोड़ी। स्त्री क्यों विद्यामें थोड़ी। मिलती नहीं इसीसे जोड़ी। सहने पड़ते दुखके साले ॥१॥ बालक बोल चाल ना सीखें। होवें ढीट न कारण दीखें। माता से जो शिक्षा सीखें। होवें सुशील आनंद वाले ॥२॥ स्त्री भोजन करना जाने। कपड़ा सोना भी पहचाने। घरका प्रवंध करना जाने। ये सब विद्याकी हैं चालें ॥३॥ घरमें सुख सम्पति जो चाहो। जीवनका फल लेना चाहो।

घर में शिक्षाको फैलाओ। आनंद „चन्द्र" उदय दुख टाले ॥४॥

२—दादरा ॥

मूरख भई नारी समाज सुधारा कैसे हो ॥टेक॥ लज्जा त्यागी शुची से भागी खो दई कुल की लाज ॥१॥ कुदेव पूजें जरा न धूजें त्यागे धर्म के काज ॥२॥ घर में लरतीं झगड़े करतीं करें बादल सम गाज ॥३॥ ठी ठी हसतीं करती मस्तीं समझें अपना राज ॥४॥ न धर्म जाने न आज्ञा मानें बचन कहें दुख दाज ॥५॥ कुशिक्षा चलतीं कुपट्ठ रहतीं हैं मुरख सरताजे ॥६॥ जवाहरलाल चलते सुचाल रटें आतम गुरु महाराज ॥७॥

भजन

चाहो जो स्वर्ग निवास तुम एक पति ब्रत धर्म निभालो ॥टेक॥ पतिब्रत धर्म से उत्तम गहना, नहीं दूसरा जगमें वहना । जो चाहो तुम इसको पहना, रहो पतिकी दास तुम। नित आज्ञा उनको पालो॥ एक० १॥ नारी के लिये पति की सेवा, है मानिन्द बराबर देवा। जो चख लोगी तुम ये मेवा, होगी न कभी निरास तुम। मन चाहा फल उपजालो ॥एक०२॥ रखिये शुद्ध ऐसी तुम काया, अन्य पुरुष की पडे न साया। जो तुम ने यह ब्रत निभाया, बनोगी देवी ख़ास तुम॥ जब चाहो तब अज़ मालो ॥एक० ३॥ पीर फ़क़ीर पुजारी प-

पड़े, स्याने और भगत मुसण्डे । जिन्हों ने गाड़े ठगी के झंड़े, जाओ न उनके पास तुम । मत उनसे कुछ बुझा लो ॥एक०४॥ भुत प्रेत चुडेल मसानी, चामंड और शीतला रानी। ये मिथ्या पूजन नादानी,नाहक़ मरो त्रास तुम। अर्हन् से ध्यान लगाओ ॥एक० ५॥ सीता और अंजना नारी. कुन्ती कौशिल्यादिक सारी। सब थीं पति की आज्ञाकारी, पढ़ देखो इतिहास तुम। उन जैसा चलन बनालो ॥ एक०६॥ कभी न घरमेंकरोलड़ाई।सास ससुरकोकरोबड़ाई। टहलकरो उनकी चितलाई,करो न उन्हें उदास तुम। खाओ जब उन्हें खिलालो एक०७ गन्दे राग कभी मत गाओ, व्याहोंमें कोयल न बुलाओ। स्वांग तमाशे में जब जावो,

कभी न देखो रास तुम। उन सब पर मिट्टी डालो ॥एक०८॥ लज्जा शर्म विवेक से रहना, शील व्रतका पहनो गहना। जिन वर वाक्य सत्य ही कहना, राखो इसमें विश्वास तुम। और ब्रह्मज्ञान में न्हालो ॥एक०९॥ जैनी कहे सुन लीजे वहना, तुम ने अपना धर्म न चीन्हा। ठगियों ने तुम्हें धोका दीना, सत की करो तलाश तुम। सत धर्म से प्रीति बढ़ालो ॥ एक० १०॥

४—भजन ॥

जो चेचक की बीमारी, कहें मूढ उसी को माता (टेक) बालक बहुत उसी में मरते, मूरख नहीं औषधी करते। मन में ध्यान माता का धरते, बोलें जात करारी। फिर-

भी ना होती साता, कहें मूढ़ उसी को माता। जो चेचक की बीमारी० ॥१॥ जो थी माता ख़ास तुम्हारी, हरदम रक्षा करने हारी। उसको त्याग डायन ये धारी, खाये वाल अपारी। है कैसा उल्टा नाता, कहें मूढ़ उसीको माता। जो चेचक की बीमारी० ॥ १ ॥ जो थी माता ख़ास तुम्हारी, हर दम रक्षा करने हारी। उसको त्याग डायन ये धारी, खाये वाल अपारी। है कैसा उल्टा नाता, कहें मूढ़ उसीको माता जो चेचक की बीमारी० ॥ २ ॥ इसका एक त्यौहार मनावें, ठंडा भोजन उस दिन खावें। अच्छे भी रोगी हो जावें, औंधी चाल निकारी। ना सच्चा मारग पाता, कहें मूढ़ उसीको माता, जो चेचककी बीमारी०

॥ ३ ॥ मित्रो ये उपदेश हमारा, त्यागो मिथ्या पूजन सारा। जिसको होय रोग ये भारा, करो औषधी सारी, जैनी सत मार्ग बताती, कहें मूढ़ उसी को माता, जो चेचक की बीमारी० ॥ ४ ॥

५—भजन ॥

जो बालक नांय पढ़ावें हैं शत्रू बाप महतारी(टेक) जिन के बाल अपढ़ रह जाते,युवा भये दुःख भारी पाते। बढ़ी तिजारत सभी गंवाते, कहो क्या व्यापार चलावें। बिन विद्या होती ख्वारी, है शत्रू-बापमहतारी। जो बालक नांय पढ़ावें०॥१॥ सभा और पंचायत माईं, अपढ़ बाल ना-शोभा पाईं।ज्यों हंसोंमें बगला जाइं,

ज़रा मानना पावें। ऐसे ही जांय धिक्कारी-
है शत्रू बाप महतारी। जो बालक नांय-
पढ़ावे० ॥२॥ राज काज में कुशल नहोते-
बिन विद्या खाते हैं गोते। धर्म कर्म को-
सभी डुबाते, ढोर समान कहावें। भव-
भव में होंय दुखारी, हैं शत्रू बाप महतारी-
जो बालक नाय पढ़ावें०॥६॥जैनी कह वै-
री वो भारी, जो बच्चे को रखे अनारी-
वैरी करे एक दो वारी, ये भव भव में भ-
टकावें। गम जाती आयू सारी, है शत्रू बा-
प महतारी, जो बालक नाय पढ़ावें॥४॥

६—भजन ॥

विधवा के धर्म सुनो तुम जोहो सत-
वंती नारी (टेक) रागद्वेषको मनसे छोड़ो,

मोह जाल जगका सब तोड़ो। उपदेशों के-
सहना कोड़ो, ब्रह्मचर्य्य व्रत धारी, जो-
हो सतवंती नारी ॥१॥ कड़वे वचन सभी-
के सहना, शुभ मारग में चलना रहना।
आंख निलज्ज न होने देना जिह्वा के रस
को टारी। जो हो सतवंती नारी० ॥२॥
यम नियमोंमें पूर्ण रहना, कोमल बात-
मनोहर कहना। त्यागो शोभित वस्तर ग,
हना, तू रहे कुटुम्ब की प्यारी। जो हो-
सतवंती नारी० ॥३॥ शान्त सरलता लाज
दया धर, क्रोध मान वैरी को हर कर, कु-
यश ससुर से बहुविध डरकर, जान धर्म
हितकारी। जो हो सतवतीनारी०॥४॥ गा-
ली मुख से कभी न गाना, घर वालों से-
रूठ न जाना। धंदा करके समय बिताना,

तू कुल को मती लजारी। जो हो सतवंती नारी० ॥५॥ पर पुरुषों से बात न करना, जीवमात्र की घात न करना। अनजानेका साथ न करना, त्याग सर्वथा जारी। जो-हो सतवंती नारी० ॥३॥ त्यागो विंदी पान चवाना, और मिस्सी सिंगार बनाना। भक्षाभक्ष को जो कर खाना, चलो धर्म अनुसारी। जो हो सतवंती नारी० ॥७॥ धर्म ध्यान में समय गमाना, भजन प्रभू का नित उठ गाना। कह जैनी मत धर्म डुवाना, रे जवलों जान तुमारी। जोहोसतवंती नारी० ॥८॥

७—भजन ॥

ये भेद शीलके जानो जो हो सतवंती नारी (टेक) पर पुरुषों से बात न करना

पिंडुक जनका साथ न करना। पर घर वासा रात न करना काम कथा मतगारी ॥जो० १॥ एक आसन पर कभी न बैठो, परपुरुषों के साथ न सेठो। पिता भ्रात पतिको तुम भेंटो। बनों कुटम्ब की प्यारी ॥जो० २॥ पर पुरुषों के अंग न निरखो, अंगकीर्ती सुन मत हर्षो। कुटिल सरलको मन से परखो। तू भूमी निगाह रखारी ॥ जो० ३॥ हाट वाट में खड़ी न होना इकले घर में जाय न सोना। जैनी समय व्यर्थ न खोना लज्जा से सुयश बढ़ारी ॥जो०४॥

८—भजन ॥

क्याभंग नशीली पीली जो उतरे नहीं उतारी (टेक) विद्याका पढ़ना प्रिय छोड़ा-

श्रद्धा से तुम मुखड़ा मोड़ा। कुमती के सं-
ग नाता जोड़ा कहां वुद्धि गई है मारी। जो-
हो सतवंती नारी०।१। भजन छोड़ कर गाली
गानो,गैरों के सहबोली ताना। उपदेशक,-
का कहा न माना, मत डूवो कूप अधा-
री। जो हो सतवंतीनारी०॥२॥ बाल विवा-
ह का करना त्यागो, लम्पट जन के संग-
से भागो। ग़फलत की निद्रा से ज़ागो,है-
कुल की लाज रखारी। जो हो सतवंतीना-
नारी०॥३॥ वस्त्र घने वारीक न पहनो शील
दया के गहने पहनो, पर पुरुषों को कभी-
न ठहनो, पति की बन हितकारी। जो-
हो सतवंती नारी० ॥४॥ कन्या को गा-
ली नहीं देना। प्यारी जीजी कहना बहना।

सब से कहोमनोहर बैना, जैनी कहे वि-
चारी । जो हो सतवंती नारी० ॥५॥

९—कव्वाली॥

करो तुमध्यान शिक्षापै यही विनती हमारी
है। उठो बहनो पढ़ो विद्या इसी में लाभ -
भारी है(टेक) बिना विद्या तुम्हारा नाम
अबला है अरी बहनो । बनो सबला तजो-
आलस कहैं भारत की प्यारी है॥१॥ कहाती
पंडिता देवी यदि तुम पढ़ती विद्या को ।
भलाई तुम में सब आती न कहते मूर्ख-
नारी हैं ॥२॥ समझते तुम को सब दासी न -
करते आव आदर कुछ पढ़ी ना एक भी वि-
द्या इसी से बहुत ख्वारी है ॥३॥ अरी बहनो-
सुनो बिनती पढ़ो विद्या चलो ढंगपै । कुरी
ति सब तरह त्यागो यही मरज़ी हमारी हैं ॥४

ने गावो ग।। उयां मुखसे नदेवो तालियांकर
से हंसो मत खिलखिलाकर तुमइसीमें
लाज भारी है॥५॥पढ़ो इतिहाससीताका कहा
क्या उसने रावण को। अरे मूरख दुराचारी
सती से विश्व हारी है ॥६॥ उछलकर कूद
करचलना धमक के साथ ही उठना।
अधरमी बात को करना तुम्हारेहक़में
ख़्वारी है॥७॥ अरी बहनो पढ़ो विद्या धर्म
को जिस से तुम जानो। अविद्या के स
बबसे हम पै सब ने तान मारी है ॥८॥व
को मत माता के आगे बको मत बाप के-
आगे। हंसो मत ग़ैर के सन्मुख इसी में
पाप भारी है॥९॥ करो भक्ती श्रीजिनकी
डरो मत स्याने भोपों से। कहें तुम को।
सभी सज्जन यह लड़को धर्म धारी है॥१०

यदी तुम चाहो गाने को तो गावो पंच कल्याणक । सुनें कहैं वे हर्ष कर देखी भाई जैनी नारी है ॥११॥

१०—गज़ल ॥

येकलियुग घोर आया है, धर्म से भ्रष्ट हैं नारी । कर्म सब तयाग कर अपने हुये आन लाचारी । टेक॥ पती पूजा नहीं जानें न उनके हुक्म को मानें । सनातन कहके हठ तानें हुई हैं धर्म से न्यारी ॥१॥ जो चेचक हो झालरा मोती बतावें [illegible] की ज्योती । गधा मुर्ग पूजें [illegible] [illegible] तयाग दई औषधीं सारी ॥२॥ न औषधी रोग का करतीं भूत प्रेतों से हैं [illegible] [illegible] कबरों पे सर धरतीं करीं [illegible] [illegible] खुआरी ॥३॥ पाखंडी धूर्त जो [illegible] [illegible]

और गंडा करवाये। पीपलादि पेड़ पुज-
वाये अक़ल दई खोय हत्यारी ॥४॥ तमाशा
देखने जातीं रासमण्डल में फिर आती।
मन्दरमें जातीं शरमातीं दया दर्शन से हैं हा-
री ॥५॥ न रसोई जानती करना न वृद्धोंके
गहें चरना। सदा झगड़े करे लरना गई
वृद्धी सभी मारी ॥६॥ खुशी के वक्त आती
हैंगलियां गा सुनाती हैं। जरा लज्जा न
खाती हैं हो कैसे धर्म वढ़वारी ॥७॥ सुता माता
सास भगनी सुने शिक्षा वुरी वकनी लगे
फिर वंशमेंअगनी हो फिर सन्तान व्यभिचा-
री ॥८॥ मृतक के घर में जाती हैं रुदन वहां
जा मचाती हैं। न ज्ञान उनको सुनाती हैं
नेन आसू करें जारी ॥९॥ रटो आतम वल्लभ
प्यारे जवाहरलाल लालकारे। वचन तुम
मानो हमारे करो मत घोर अन्धियारी ॥१०॥

श्रीजिनेन्द्राय नमः ।

॥ पञ्चकल्याण मङ्गल ॥

---()---
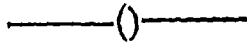
प्रथम गर्भ कल्याण मंगल ॥

प्रणमूं पंच परम गुरु गुरु जिन शासनो ।
सकल सिद्धि दातार सो विघ्न विनाशनो ॥
शारद अरु गुरु गौतम सुमति प्रकाशनो ।
मङ्गल करहु चौसङ्घ हि पाप प्रनाशनो ॥
पाप प्रनाशन गुण हि गरुवे दोष अष्टादश रहो ।
धरध्यानकर्म विनाश केवलज्ञान अविचल जिनलहो ॥
प्रभुपञ्चकल्याणक विराजित सकल सुरनर ध्यावहीं ।
त्रैलोक्यनाथ सुदेव जिनवर जगत मंगलगावहीं ॥ १ ॥
जाके गर्भ कल्याणक धनपति आइयो ।
अवधि ज्ञान परमाण सो इन्द्र पठाइयो ।
रचि नव बारह योजन नगर सुहावनो ।
कनक रतन मणि मण्डित मंदिर अतिबनो ॥

अति बनो पौरि पगार पुरिखा सुबन उपवन सोहने।
नरनारि सुन्दर चतुर भेष सो देख जनमन मोहने॥
तहां जनकगृह छहमास प्रथमहि रतनधारा वरसियो।
फुनरुचिकबासिनी जननी सेवा करहिं बहुविधिहरषियो।

सुर कुञ्जर सम कुञ्जर धवल धुरंधरो।
केहरि केसरि शोभित नख शिख सुन्दरो॥
कमला कलश न्हवन दोय दाम सुहावनो।
रवि शशि मण्डल मधुर मीन युग पावनो॥

पावन कनक घट युगम पूरण कमल सहित सरोवरो।
कल्लोल माला कुलित सागर सिह पीठ मनोहरो॥

रमणीक अमर विमानफणिपति भवन भुविछवि छाजहिं।
रुचि रतन राशि दिपंति दहन सुतेज पुञ्ज विराजहीं।२।

ये शुभ सोलह स्वप्ने सूती शयन में।
देखे माय मनोहर पिछली रैनि में॥
उठ प्रभात पिय पूछियो अवधि प्रकाशियो।
त्रिभुवन पति सुत होसी फल यह भाषियो

भापियोफल तिहिचित्त दम्पति परम आनन्दित भए।
छहमास परनवमास बीते रैनदिन सुख में गए॥

गर्भावतार महंत महिमा सुनत सब सुख पाइयो ।
भणरूपचन्द्रसुदेव जिनवर जगत मंगल गाइयो ॥ ४ ॥

द्वितीय जन्म कल्याण मंगल ।

मति श्रुतिअवधि विराजित जिनजब जनमियो
तीन लोक भये हर्षित सुरगण भरमियो ॥
कल्प वासि घर घंटा अनहद वाजियो ।
ज्योतिषि घर हरिनाद सहज गल गाजियो ॥
गाजियो सहजही शङ्ख भावनभवन शब्द सुहावने ।
व्यन्तर निलयपट्ट पटहिं वाजे कहत क्या महिमावने ॥
कम्पे सुरासन अवधि वलजिन जन्म निश्चय जानियो ।
धनराज तब गजराज माया मई निर्मय आनियो ॥ १ ॥
योजन लक्ष गजेन्द्र वदन शत निर्मए ।
वदन वदन वसु दन्त दन्त प्रति सर ठए ॥
सरप्रति सो पनवीस कमलनी छाजहीं ।
कमलनि कमलनि कमल पचीस विराजहीं ॥
राजतहिं कमल कमल अठोत्तर सो मनोहर दलवने ।
दलदलहिं अप्सरा नचहिं नव रस हाव भाव सुहावने ॥
मणि कनककिंकिणीवरविचित्रहिअमरमंडित सोहिये ।

धुनघंटचमर ध्वजा पताका देख त्रिभुवन मोहिये ॥
तिहिं करि हरि चढ़आयो सब परिवार सों ।
पुरहि प्रदक्षिण देतहि जिन जय कारसों ॥
गुपति जाय जिन जननी सुख निद्रा रची ।
माया मय शिशु राखहि जिन आनोशाची ॥
आनोशाची जिन रूप देखत नयन तृपत नहीं भये ।
तब परम हर्षित हृदय हरि ने सहस्र लोचन करलिये ।
पुनः कर प्रणाम सुप्रथम इन्द्र उछंगधर प्रभु लीनये ॥
ईशान इन्द्रसुचन्द्रछवि सिरछत्र प्रभुके दीनये ॥ ३ ॥
सनत्कुमार महेन्द्र चमर दोऊ ढारहीं ।
शेष शक्र जयकार शब्द उच्चारहीं ॥
उत्सव सहित चतुर विधि सुर हर्षित भए ।
योजन सहस निन्यानवैं गगण उलंघ गए ॥
गए सुरगिरि जहां पांडुकबन विचित्रविराजहीं ।
पांडुकशिला जहां अर्द्धचन्द्र समान रविछवि छाजहीं ॥
योजनपचास विशाल द्विगुण आयाम वसु ऊंचीगनी ।
वर अष्ट मंगल कनक कलशा सिंह पीठ सुहावनी ॥४॥
रचि मणि मण्डप शोभितमध्य सिंहासनो ।
थापो पूरब दिश मुख प्रभु कमलासनो ॥

बाजहिं ताल मृदंग वेणु बीणाघने ।
दुन्दुभि प्रमुख मधुर ध्वनि बाजे साजने ॥
साजने बाजहिं सची सबमिलधवल मंगल गावहीं ।
तहां करैं नृत्यसुरांगना सब देव कौतुक लावहीं ॥
भरिक्षीरसागर जल जो हाथों हाथ सुरगिरि लावहीं ।
सौधर्मअरु ईशान इन्द्र सो कलश लेय प्रभु न्हवावहीं ॥
वदन उदर अवगाह कलश गत जानिये ।
एक चार वसु योजन मान प्रमाणिये ॥
सहस अठोत्तर कलश प्रभुजीके सिर ढुरैं ॥
फुन श्रृंगार प्रमुख आचार सबै करैं ॥
कर प्रगटप्रभुमहिमामहोत्सव आन फुनमातहिं दयो ।
धनपतहि सेवाराख सुरपति आप सुरलोक हिं गयो ॥
जन्माभिषेक महंत महिमा सुनत सब सुख पावहीं ।
भनिरूपचन्द्र सुदेव जिनवर जगत मंगल गावहीं ॥ ६ ॥

तृतीय दीक्षाकल्याण मंगल ।

श्रम जल विना शरीर सदा सब मलरहित ।
क्षीर वरण वर रुधिर प्रथम आकृति सहित
प्रथम सार संहनन सुरूप बिराजहीं ।

तहां पंच मुष्टी लौंचकीनो प्रथमसिद्धहिं थुतिकरी।
मंडेमहाव्रतपंचदुद्धरसकल परिग्रह परिहरो ॥ ३ ॥

मणिमय भाजन केश धारकर सुरपति।
क्षीर समुद्र जल क्षेप गये अमरावती॥
तप सयम वल प्रभुजी को मन पर्य्य भयो।
मौन सहित तप करत काल कछु तहां गयो॥

गयो तहा कछु काल तप वल ऋद्धिवसु गुणसिद्धिया।
तहां धर्म ध्यानवलेन क्षयगई सप्त प्रकृति प्रसिद्धिया॥
क्षिपिसातवें गुणयत्न विन तहां तीन प्रकृतिजुवुधिवढे॥
करकरण तीन प्रथम शुकलवल क्षपक श्रेणी प्रभुजीचढे

प्रकृति छत्तीस नवें गुण थान विनाशियो।
दशवें सूक्ष्मलोभ प्रकृति तहां नाशियो॥
शुक्लध्यान पद द्वितिय पुनः प्रभु पूरियो।
वारवें गुण सोलह प्रकृती चूरियो॥

चूरियो त्रेसठ प्रकृति या विधि घातिया कर्मोंतणी।
तपकियो ध्यान पर्यन्त वारह विधित्रिकोक शिरोमणी॥
निष्कर्मकल्याणक सुमहिमा सुनत सव सुख पाइयो।
भनिरूपचन्द सुदेव जिनवर जगत मंगल गाइयो॥ ५॥

चतुर्थ ज्ञानकल्याण मंगल।

तेरहवें गुण स्थान सयोग जिनेश्वरो।
अनन्त चतुष्टय मंडित भये परमेश्वरो।
समोशरण तब धनपति बहुविधि निर्मयो।
आगम युक्ति प्रमाण गगन तल परिठयो॥
परिठयोचित्र विचित्र मणिमय सभामंडप सोहियो।
तिहि मध्यवारह वने कोठे बनक सुरनर मोहियो॥
मुनि कल्पवासिन अर्जिकातहां ज्योति वाण भवनत्रिया।
फुनभवन व्यन्तर कल्प सुरनर पशू कोठे बैठिया॥१॥
मध्यप्रदेश तीन मणि पीठ तहां बने।
गन्धकुटी सिंहासन कमल सुहावने॥
तीन छत्र सिर शोभित त्रिभुवन मोहिये।
अन्तरीक्ष कमलासन प्रभु तहां सोहिये॥
सोहिये चौसठ चमर दुरहिं अशोक तरु तहां छाजते।
फुनदिव्यध्वनि प्रतिशब्द नित तहां देव दुन्दुभी वाजते॥
सुर पुष्प वृष्टिः प्रभा मण्डल कोटि रवि छवि लाजते।
इम अष्ट अनुपम प्रातिहारिय वरविभूति विराजते॥२॥
दो सौ योजन मान सुभिक्ष चहुं दिशा।

गगन गमन अरु प्राणी वध न अहो निशा ॥
निर उपसर्ग अहार रहित जिन पेखिये ।
आनन चार चहूं दिश शोभित देखिये ॥
दीखें अशेष विशेष विद्या विभव घर ईश्वर पनो ।
छाया विवर्जित शुद्ध स्फटिक समान तन प्रभु का वनो ।
नहिं नयन पलक न लगें कदाचित केश नख समछाजहीं ।
यह घातिया क्षय जनित अतिशय दशविचित्र विराजहीं ॥
सकल अर्ध मई मागधी भाषा जानिये ।
सकल जीव गत मैत्री भाव वखानिये ॥
सब ऋतु के फल फूल वनास्पति मन हरैं ।
दर्पण सम मणि अवनि पवन गति अनुसरैं ॥
अनुसरै परमानन्द सबको नारि नर जे सेवता ।
योजन प्रमाण धरा सम्हारत जात मारुत देवता ॥
फुन करहिं मेघ कुमार गन्धोदक सुवृष्टि सुहावनी ।
पद कमल तलसुर रचहिं कमलसोधर निशशिशोभावनी
अमलगगण तलअरु दिशितिहि अनुसारही ।
चतुरनिकाई देव करैं जैकारहीं ॥
धर्म चक्र चलै आगै रवि जहां लाजहीं ।
पुन भृङ्गार प्रमुख वसु मंगल राजहीं ।

राजतहींदश अरु चार अतिशय देवरचित सुहावने।
जिनराज केवल ज्ञान महिमा और कहत कहावने॥
तव इन्द्र आन कियो महोत्सव सभा शोभित अतिवनी॥
धर्मोपदेश दियो तहां उचरी सुवाणी जिनतनी॥५॥

क्षुधा तृषा अरु राग द्वेष असुहावनो।
जन्म जरा अरु मरण त्रिदोष भयावनो॥
रोग शोक भय विस्मय अरु निद्राघनी।
खेद स्वेद मद मोह अरति चिन्ता गनी॥
गनिये अठारह दोष तिन कर रहित देव निरञ्जनो।
नवपरम केवल लब्धि मण्डित शिवरमणीमनरंजनो॥
श्री ज्ञानकल्याणकसुमहिमा सुनत सव सुखपाइयो।
भनिरूपचन्द्र सुदेव जिनवर जगत मंगल गाइयो॥६॥

पंचमनिर्वाण कल्याण मंगल।

केवल दृष्टि चराचर देखो सर्वही।
भव्यनि प्रति उपदेशो जिन षट्द्रव्यही।
भव भीत भविक जन शरणजे आईयो।
रत्नत्रय दश लक्षण शिव पन्थ पाईयो॥
पाईयो शिवपथ भविक फुन प्रभु तृतीय शुक्लारंभियो।

तहां तेरवें गुणथान अन्त प्रकृति वहत्तर नाशियो ॥
चौदवें चौथे फल शुक्ल प्रभु वहतर तेरह जेहती।
अघाति वसु विधि कर्म पहुंचे समयमें पंचमगती ॥
लोक शिखर तनुवात वलय में जा ठयो।
धर्म द्रव्यबिन आगे गमन न तिन भयो ॥
मदन रहित मुनवरतहां अम्बर जारिसो।
किमपि हीन निजतनु तै भये प्रभु तारिसो॥
तारिसो अविचलद्रव्य पर्ययअर्थ पर्यय क्षण क्षई।
निश्चयनयेन अनन्त गुण व्यवहारनयवसु गुणमई ॥
वस्तुः स्वभावविभावविरहित शुद्धपरणतिपरिणये।
चिद्रूप परमानन्दमण्डितशुद्ध परमातम भये ॥ २ ॥
तन परमाणु दामिन पर सव खिर गये।
रहे शेष नख केश रूप जे परिणये ॥
तव हरि प्रमुख चतुर्विधिसुरगण शव सच्चो
माया मय नख केश सहित प्रभु तनु रच्यो ॥
रचि अगरचन्दन प्रमुखपरिमलद्रव्यजिनजय कारियो।
पदपतत अग्नि कुमार मुकटानल सुविधिसंस्कारियो ॥
निर्वाण कल्याणक सुमहिमा सुनत अति सुख पाईयो।
भनिरूपचन्द्रसुदेव जिनवर जगत मंगल गाईयो ।३।

मैं मतहीन भगति वश भावना भाईयो।
मंगल गीत प्रवन्ध सो जिन गुण गाईयो ॥
जो जन सुनहिं वखानहिं स्वरधर गावहीं।
मनोवाञ्छित फल सो नर निश्चय पावहीं ॥
पावहीं आठों सिद्धि नवनिधि मन प्रतीति जो आनहीं।
भ्रमभावछूटहिं सकल मन के जिन स्वरूप सो जानहीं ॥
पुनः हरहिं पातक टरहिं विघ्न सो होंय मंगल नितनये।
भनिरूपचन्द्र त्रिलोकपति जिनदेव चौसंगहिजये ॥४॥

श्री जिनायनमः।

भूधरजैनशतक।

श्रीऋषभदेवकी स्तुति।

पोमावती छन्द।

ज्ञान जहाज बैठ गणधरसे गुण पयोधि जिस नांहि तरे हैं।
अमर समूह आन अवनी सों घस घस सीस प्रणामकरे हैं।
किधौं भाल कुकर्म्म की रेखा दूर करन का बुद्धिधरे हैं।
ऐसे आदिनाथ के अहनिंशि हाथ जोर हम पांव परे हैं ॥१॥
कायउत्सर्ग मुद्रा धर वन में ठाडे ऋषभ रिद्धि तज दीनी।
निश्चल अङ्ग मेरु हि मानों दोनों भुजा छोर जिन लीनी।
फसे अनन्त जन्तु जग चहला दुःखी देख करुणा चित चीनो
काढन काज तिन्हें समरथ प्रभु किधौं बांह दीरघ यह कीनो॥२

(१) अवनी=जमीन (२) अहनिस=रात दिन।

करनो कछू है न करते कारज तातें पाणि प्रलम्ब करे हैं।
रह्यो न कछु पायन सैं पौवो ताही तैं पद नांहि टरे हैं।
निरख चुके नैनन सब यातैं नेत्र नासिका अनी धरे हैं।
कहा सुने कानन काननयों जोग लीन जिन राज खरे हैं ॥ ३ ॥

छप्पै छन्द ।

जयो नाभि भूपाल बाल सुकुमाल सुलक्षण।
जयो स्वर्ग पाताल पाल गुणमाल प्रतिक्षण।
दृग्विशाल वरभाल लाल नखचरण विरज्जहिं।
रूप रसाल मराल चाल सुन्दर लख लज्जहिं।
रिपु जाल काल रिसहेशहम फसे जन्म जम्बालदह।
यातैं निकाल बेहाल,अति भो दयाल दुख टाल यह ॥४॥

श्रीचन्द्राभप्रभुस्वामीकी स्तुति।

पोमावती छन्द।

चितवत वदन अमलचंद्रोपम तज चिन्ता चित होय अकामी।
त्रिभवन चन्द्र पाप तप चन्दन नमत चरण चन्द्रादिक नामी।
तिहुं जगछई चन्द्रका कीरती चिहनचंद्र चिन्तत शिवगामी ॥
वन्दूचतुर चकोर चन्द्रमा चन्द्र वरण चन्द्राप्रभुस्वामी ॥५॥

श्री शान्तिनाथ स्वामी की स्तुति ।

मत्तगयन्द छन्द ।

शान्ति जिनेश जयो जगतेश हरै अघ.ताप निशेश कि नांई ।
सेवत पाय सुरासुर धाय नमै सिर नाय महीतल तांई ।
मोलि विषे मणिनील दिपै प्रभु के चरणों झलकै वहु झांई ।
सूंघन पाय सरोज सुगन्धि किधों चल के अलि पंगति आंई ॥६

श्री नेमिनाथ स्वामी की स्तुति ।

घनाक्षरी छन्द ।

शोभित प्रियंग अंग देखे दुख होय भंग लाजत अनंग जैसे दीप भानु भास तें। बाल ब्रह्मचारी उग्रसेन की कुमारी जादों, नाथ तें निकारी कर्म कादों दुखरास तें। भीम भव कानन में आनन सहाय स्वामी अहो नेमिनामी तक आयो तुम्हें तासतें। जैसे कृपासिंधु बन जीवन की बन्द छोडि यों हि दास की खलास कीजे भव फांस तें ॥ ७ ॥

श्रीपार्श्वनाथ स्वामी की स्तुति ।

सिंहावलोकन अलंकार छप्पैछन्द स्तुति ॥

जनम जलधि जलयान जान जन हंस मानसर ।

सर्व इन्द्र मिल आन आन जिस धरैं सीस पर।
पर उपकारी बान बान उत्थप्य कुनय गण।
गणसरोज बन भान भान मम मोह तिमरघन।
घन वर्ण देह दुख दाह हर हर्षत हेत मयूरमन।
मन मतमतंग हरिपार्स जिन मत बिसरहु छिन जगतजन॥

श्रीवर्द्धमान अर्थात् महावीरस्वामी की स्तुति।

दोहा छन्द।

दृढ कर्माचल दलन पवि भवि सरोज रविराय।
कञ्चन छवि कर जोर कवि नमत बीर जिन पाय॥ १॥

पोमावती छन्द।

रहो दूर अन्तर की महिमा बाह्य गुण वर्णन बल कापै।
एक हजार आठ लक्षण तन तेज कोटि रवि किरण न तापै।
सुरपति सहस आंखअञ्जलि सों रूपामृत पीवत नहिं धापै
तुम बिन कौन समर्थ वीर जिन जगसों काढ मोखमें थापै।

श्री सिद्धों की स्तुति।

मत्तगयन्दछन्द।

ध्यान हुताशन में अरि ईंधन झोंक दियो रिपु रोक निवारी

शोक हरा भवि लोकन का वर केवल भान मयूख उधारी
लोक अलोक विलोक भये शिव जन्म जरामृत पंक पखारी
सिद्धनथोक बसै शिव लोक तिहीं पग धोक त्रिकाल हमारी ११
तीरथनाथ प्रणाम करें जिन के गुण वर्णन में बुध हारी।
मोम गयो गल मोख मझार रहा तिहिं व्योम तदाकृत धारी
जन्म गहीर नदी पति नीर गए तिर तीर भये अविकारी।
सिद्धनथोक बसे शिवलोक तिहीं पगधोक त्रिकाल हमारी।

श्रीसाधु परमेष्ठी को नमस्कार।

घनाक्षरी छन्द।

शीत ऋतु जोरें अङ्ग सब ही सकोरें तहां तन को न मोरें नदी धोरें धीर जे खरे। जेठ की झकोरें जहां अण्डा चील छोरें पशु पक्षी छांह लोरें गिर कोरें तप ये धरे। घोर घन घोरें घटा चहों ओर डोरें ज्यों ज्यों चलत हिलोरें त्यों त्यों फोरें बल ये अरे। देह नेह तोरें परमारथ से प्रीत जोरें ऐसे गुरु मेरे हम हाथ अञ्जलि करें। १३

११। भानमयूख = सूर्य की किरणें। पंक = कीचड़। व्योम = आकाश। गहीर = गहिरा। १२ तीर्थनाथ = तीर्थंकर १३ गिरकोरं = पहाड़ की चोटियां।

श्रीजिनवाणी को नमस्कार।

मत्तगयन्दछन्द।

चीर हिमाचल तैं निकसी गुरुगौतमके मुख कुण्ड ढरी है।
मोह महाचल भेद चली जग को जड़ता तप दूर करी है।
ज्ञान पयोनिधि मांहि रली बहु भङ्ग तरङ्गन तैं उछरी है।
ता शुचिशारद गङ्गनदी प्रतिमैं अञ्जुली निजशीशधरीहै १४
या जगमंदिर में अनिवार अज्ञान अंधेर छयो अति भारी।
श्रीजिनको धुनि दीपशिखाशुचि जो नहीं होय प्रकाशनहारी
तौ किस भांति पदारथ पांति कहां लहते रहते अविचारी।
या विधि संत कहैं धन हैधन,हैं जिन वैन बडे उपकारी।१५।

श्रीजिनबाणी और परमतवाणी अंतर दृष्टांत।

घनाचरीछन्द।

कैसे कर केतकी कनेर एक कहि जाय आक दूध गाय दूध अन्तर घनेरो है। पीरो होत रिरी पै न रीसकरै कंचन को कहां कागवाणी कहां कोयलकी टेर है। कहां भानतेज

१४। पयोनिधि = समुद्र।

१६। रिरी = पीतल। कंचन = सोना।

भागे कहां भागिया विचारो कहां पूनो को उजारो कहां मावस अन्धेर है। पक्ष तज पारखी निहार नैन नीके कर जैन बैन और बैन इतनो ही फेर है ॥ १६ ॥

कब ग्रह वास सौं उदास होय वन सेंउ वेऊं निज रूप रोकूं गतिमन करी की। रहि हौं अडोल एक आसन अचल अंगसही हौं परिषहशीत घाम मेघ झरीकी। सारंगसमाज खाज कबधौं खुजावे आन ध्यानदल जोर जीतूं सेना मोह अरी की। एकल विहारी यथा जात लिंग धारी कब होऊं इच्छाचारी बलहारी वाह घरी की ॥१७

राग वैराग अन्तर कथन।

घनाक्षरी छंद।

राग उदय भोग भाव लागत सुहावनेसे विना राग ऐसे लगें जैसे नाग कारे हैं। राग ही से पाग रहे तनमें सदीव जीव राग गए आवत गिलानि होत न्यारे हैं। राग ही से जग रीति झूठी सब साच जानें राग मिटै सूझत असार

१७। गति = चाल। मनकरी = मन रूपी हाथी। सारंग = हिरण। जातलिंग = नग्नवेश (दिगंबर)।

खेल सारे हैं। रागी वीतरागी के विचार में वडो है भेद
जैसे भट्ठा पच्छ काऊ काऊ को वयारे हैं॥ १८

भोग निषेध कथन।

मत्तगयंद छंद।

तू नित चाहत भोग नये नर पूरव पुण्य विना किम पैहै। कर्म संयोग मिलै कहिं जोग गहे जब रोग न भोग सकै है। जो दिन चारक व्योंत बन्यो कहिं तो फिर दुर्गति में पछतैहै है। या हित यार सलाह यही कि गई कर जाहि निवाह न व्है है॥ १९

देहनिरूपणकथन अर्थात् देहके निर्णय में।

मत्तगयन्द छन्द।

मात पिता रज वीरज सों उपजी सब सात कुधातु भरी है। माखिन की पर माफिक वाहर चाम कि बेठन बेठ धरी है। नातर आय लगैं अब ही वगु वायस जीव बचै न घरी है देह दशा यहि दीखत भ्रात घिनात नहीं किन बुद्धिहरीहै २०

---

१८ कर = हाथ से। २०। वायस = काग

संसार दशा निरूपण वर्णन ।

घनाक्षरी छन्द ।

काउ घर पुत्र जायो काउ के वियोग आयो काउ राग रङ्ग काउ रोआ रोई करी है। जहां भान ऊगत, उछाह गीत गान देखे सांझ समय तहां थान हाय हाय परी है। ऐसी जग रीत को विलोक कें न भीत होय हा हा नरमूढ तेरी वुद्धिकौन हरी है। मानुष जनम पाय सोवत विहाना जाय खोवत करोडन की एक एक घरी है ॥ २१ ॥

सोरठाछन्द ।

कर कर जिन गुण पाठ्ये जात अकारथ रे जिया।
आठ पहर में साठों घडी घनेरे मोल की ॥ २२ ॥
कानी कौडी काज किरोडन को लिख देत खत।
ऐसे मूरखराज जग वासी जिया देखिये॥ २३ ॥

दोहाछन्द ।

कानी कौडी विषै सुख नव दुख करज अपार।
बिन दीये नहीं छूटते बेशक दाम उधार॥ २४ ॥

---

२ भान = सूर्य । विहाना = वृथा । २४ बेशक = थोडासा।

शिष्य उपदेश कथन ।

छप्पै छन्द ।

दस दिन विषै विनोद फेर वहु विपत परम्पर ।
अशुच गेह यह देह नेह जानत न आप जर ।
मित्र वन्धु सनवन्धि और पर जन जे अङ्गी ।
अरे अन्ध सनवन्धि जान स्वारथ के सङ्गी ।
परहित अकाज अपनो न कर मूढराज अव समझ उर ।
तज लोक लाज निज काज को आज दाव है कहत गुर ॥२५

घनाक्षरी छन्द ॥

जौलौं देहतेरी काउ रोगनै न घेरी जौलौं जरानांह नेरी जासौं पराधीन परि है। जौलौं जम नामा वैरी देय न दमामा जौलौं मानै आन वामा वुद्धिजाय न विगरि है । तौलौं मित्र मेरे निज कारज समार लीजे पौरुष थकैंगे फिर पाछै कहा करि है। अहो आग आवै जव झोंपरी जरन लागै कूवा के खुदाये तव कौन काज सरि है ॥ २६ ॥

---

२५ परम्पर = पंक्ति । जर = जड़ ।

सौ बरस आयु ताका लेखा कर देखा सब, आधि तो अकारथ ही सोवत विहाय रे। आधी में अनेक रोग बालवृद्ध दशा योग और हू संजोग केते ऐसे बीत जांय रे। बाकी अब कहा रही ताही तूं विचार सही कारज की बात यही नीको मन लायरे। खातिरमें आवे तो खलासो कर हाल नाहीं काल घाल परै है अचानक ही आयरे॥ २७॥

बाल पने बाल रह्यो पाछै गृह काज भयो लोक लाज काज बांधो पापन को ढेर है। आपनो अकाज कीनो लोकन में यश लीनो परभव विसार दीनो विषै विष जे रहे। ऐसे ही गई विहाय अल्प सो रही आय नर परयाय यह अन्धे की बटेर है। आये श्वेत भईया अब काल है अवैया इम जान नर सियाने तेरे अबौं भी अन्धेर है॥ २८॥

मत्तगयन्द छन्द॥

बालपने न संभाल सक्यो कछु जानत नांह हिताहित ही को यौवन वैस बसी वनिता उर कै नित राग रह्यो लछमी को यौं पन दोइविगोय दिये नर डारत क्यों नरकै निज जी को आये हैं श्वेत अजौं सठचेत गई सोगई अब राख रहीको॥२९॥

२८। पन = पीड़ा। २९ वनिता = स्त्री।

घनाक्षरी छन्द ॥

सार नरदेह सब कारज को जोग येह यही तो विख्यात बात वेदनमें वचै है। ता मै तरुणाई धर्म सेवनको समय भाई सेये तूने विषै जैसे माखी मधु रचै है। मोह मद भोरा धन रम्भा हितहेत जोरा अब योंहि दिन खोय खाय कोदों जिममचै है अरे सुन बौरे अब आपे सोस धोरे अजौं सावधान होरे नर नरक सों बचै है ॥ ३० ॥

मत्तगयन्द छन्द ॥

वायलगी क्यावलायलगोमद मत्तभयो नर भूतलग्यो है।
वृद्धभये न भजे भगवान विषै विषखात अन्धातन क्यों है।
सीस भयो बुगला सम श्वेत रह्यो उर अन्तर श्याम अजौंही
मानुषभो मुक्ताफल हार गंवार तगा हित तोरत योंही ॥३१॥

संसारी जीव चिंतवन कथन ॥

मत्तगयन्द छन्द ॥

चाहतहै धन होय किसोविध तो सब काजसरैं जियराजी।
गेह चुनाय करूं गहना कछु व्याह सुतासुत वांटिये भाजी।

३०तरुणाई = जुवानी। रामा = स्त्री। ३१श्वेत (श्वेत) = सफेद

चिन्तत यों दिनजात चले यम आय अचानक देत धकाजी
खेलत खेल खिलार गए रह जायरुपो शतरञ्जकी बाजो ।।२२

तेज तुरंग सुरंग भले रथ मत्त मतंग उतंग खरे हैं ।
दास खवास अवास अटाधन जोर करोरन कोश भरे हैं ।
ऐसे भये तो कहा भयो हेनर छोड़ चले जब अन्त छडेही ।
धाम खरे रहि काम परे रहि दामगरेरहि ठाम धरेही ।।२३।।

अभिमान निषेध वर्णन ।।

घनाक्षरी छन्द ।

कञ्चन भण्डार भरे मोतिन के पुञ्जपरे घने लोग द्वार खरे मारग निहारते । यान चढे डोलते हि झीने स्वर बोलते हि काहूकी तो ओर नेक नीके न चितारते । कौलौं धन खांगे कोउ कहै यों न लांगे तेउ फिरै पाय नांगे कांगे पर पग झारते एते पै अयाना गरभाना रहा विनोपाय धृग है समझ तेउ धर्म न सम्हारते ।।२४।।

देखो भर जोबन में पुत्रको वियोग भयो तैसेही निहारी

---

२२ । खर्पी = खिलारी । २३ । तुरंग = घोडे । मतंग = हाथी ।
२४ । कंचन = सोना ।

निज नारी काल मगमें। जेजे पुण्यवान जीव दीसतें थे जगत ही में रंकभये फिरैं तेउ पनहि न पगमें। एते पै अभाग धन जीतवसों धरे राग होय न वैराग जाने रहूंगो अलग मैं। आंखनसों देख अन्ध मूसे की अन्धेरी धरै ऐसे राजरोग को ईलाज कहा जग में ॥ ३५ ॥

दोहा छन्द।

जैनवचन अञ्जनवटी, आंजैं सुगुरु परवीन।
राग तिमिर तवहु न मिटे, बडो रोग लखलीन ॥३६॥

निज व्यवहार कथन ॥

घनाक्षरी छन्द।

जोई दिन कटै सोई आयुमें अवश्य घटै बून्द बून्द बीतै जैसे अञ्जलि को जल है। देह नित छीन होय नेत्र तेज हीन होय यौवन मलीन होय छीन होय बल है। आवै जरा नेरी ताके अन्तक अहेरी आवै परभौ नजीक जाय नरभौ निफल

३५। रंक=कंगाल। ३६। अंजन=सुरमा। परवीन= चतुर। तिमिर=नेत्ररोग। ३७ जरा=बुढापा अन्तक=यम

है। मिलकै मिलापीजन पूछत कुशल मेरी ऐसी हो दशा में मित्र काहे की कुशल है ॥ ३७ ॥

वृद्ध दशा कथन।

मत्तगयन्द छन्द ॥

दृष्टि घटि पलटी तनकी छवि बंकभई गतिलंक नई है। रूसरही परनी घरनी अति रंक भयो परयंक लई है। कांपतनार बहै मुख लार महामति संगत छाड़ गई है। अंग उपंग पुरान भये तिसना उर और नवीन भई है॥ ३८ ॥

घनाक्षरी छन्द ॥

रूप को न खोज रह्यो तरु ज्यों तुषार दह्यो भयो पतझर किधौं रही डार सूनी सी। कूबरी भई है कटि दूबरी भई है देह ऊबरी इतेक आयु सेर मांहि पूनी सी। यौवन ने विदा लीनी जरा ने जुहार कीनी हीन भई सूध बुद्धि सबी बात ऊनी सी। तेज घट्यो ताव घट्यो जीतव सों चाव घट्यो और सब घटे एक तिस्ना दिन दूनीसी ॥३९॥

३९। तुषार = बर्फ। कटि = कमर (लंक)।

घनाक्षरी छन्द ॥

अहो इन अपने अभाग उदय नांह जानी वीतराग वानी सार दया रस भीनी है। यौवन के जोर थिर जंगम अनेक जीव जानजे सताये कहां करुणा न कीनी है। तेई अब जीव रास आये परलोक पास लेंगे वैर देंगे दुख भई ना नवीनी है। उनही के भयका भरोसा जान कांपत है याही डर डोकराने लाठी हाथ लीनी है ॥ ४० ॥

जाको इन्द्र चाहें अहमिन्द्र से उमां है जासों जीव मोक्ष मांहै जाय भोमल वहावै है। ऐसो नर जन्म पाय विषे विश खाय खोय जैसे कांच सांटै मूढ माणक गमावै है। माया नदी बूड भीजा काया वल तेज छीजा आयापन तीजा अब कहा वन आवै है। तातैं निज सीस ढोलै नीचे नैन कीये डोलैं कहा वड बोलैं वृद्ध वदन दुरावै है ॥ ४१ ॥

मत्तगयन्द छन्द ॥

देखहु जोर जरा भटको यमराज महीपति के अगवानी।
उज्जल केश निशान धरे बहु रोगनकी संग फौज पलानी।

४०। करुणा = दया। ४२ जरा भट = वृद्धावस्था रूप शूरमा

काय पुरी तज भाग चलो जिस आवत योवन भूप गुमानो ।
भूधर ई नगरी नगरी दिन दौयम खोयहिनाम निशानो ॥४२॥

दोहा छन्द ॥

सुमति छोर यौवन समैं सेवत विषै विकार ।
खल सांटे नहिं खोइये जन्म जवाहर सार ॥ ४३ ॥

कर्तव्य शिक्षा कथन ॥

—(घनाचरी छन्द)—

देव गुरु सांचे मान सांचो धर्म हिये आन सांचोहि बखान सुन सांचे पन्थ आचरे । जीवन की दया पाल झूठ तज चोरी टाल देख न विरानीबाल तिशना घटावरे । अपनी बडाई पर निन्दा मत करै भाई यही चतुराई मद मांस को बचाव रे । साध षट कर्म साधु संगत में बैठ जीव जो है धर्म साधन को तेरे चित चाव रे ॥ ४४ ॥

सांचो देव सोई जामैं दोष को न लेश कोई वाहि गुरु जाके उर काहू की न चाह है । सही धर्म वही जहां करुणा प्रधान कही ग्रन्थजेई आदि अन्त एकसो निबाह है । यही जग रत्न चार इनको परख यार सांचे लेउ भूठे डार नरभो

का लाहा है। मानुष विवेक विना पशु की समान गिना तातैं यही ठीक बात पारनी सलाह है ॥ ४५ ॥

देव लक्षण मत विरोध निराकरण।

छप्पै छन्द ॥

जो जग वस्तु समस्त हस्त तल जेम निहारैं।
जग जन को संसार सिन्धु के पार उतारैं।
आदि अन्त अविरोध वचन सबको सुखदानी।
गुण अनन्त जिस मांहि रोपकी नाहीं निशानी।
माधो महेश ब्रह्मा किधौं वर्धमान के बोद्ध यह।
ये चिन्ह जान जाके चरण नमो नमो मुझ देव वह ॥ ४६

यज्ञ विषे जीव होम निषेध ॥

घनाक्षरी छन्द ॥

कहैं पशु दीन सुन यज्ञ के करैया मोह होमत हुताशन मैं कौनसी बडाई है। स्वर्ग सुख मैं न चहूं देउ मुझे यों न कहूं घास खाय रहूं मेरे यही मन भाई है। जो तू यही जानत है वेद यों बखानत है यज्ञ जलो जीव पावै स्वर्ग सुखदाई है।

४६। माधो = विष्णु। ४७। हुताशन = आग।

जूवा निषेध कथन ॥

छप्पै छन्द ।

सकल पाप संकेत आपदा हेत कुलच्छण ।
कलह खेत दारिद्र देत दीखत निज अंखयन ।
गुण समेत यश शेत केत रवि रोकत जैसे ।
औगुणन का खेत लेत लख बुधजन ऐसे ।
जूवा समान इस लोक में और अनीत न पेखिये ।
इस विसन रायके खेलको कौतक हूं नहि देखिये ।५१॥

मांस निषेध कथन ॥

छप्पै छन्द ॥

जंगम जी को नास होय तब मांस कहावै ।
सपरश आकृत नाम गन्ध उर घिन उपजावै ।
नरक योग निरदई खांहि नर नीच अधरमी ।
नाम लेत तज देत अशन उत्तम कुल करमी ।

---

५१ । हेत — कारण । कलह — लडाई ।

यह मनुज मूल सवतैयुगो कमफल रास निवास नित।
मामिन अनभ इसको सदा बरजो दोष दयाल चित ॥५१॥

मदिरा निषेध कथन ॥

दुमिला छन्द।

कृम राग कुबास सुरापद है शुचिता सब छूवत जातस ही।
जिसपान किये नधि जाय हिये जननी जनजानत नार यही।
मदरा सम ओर निषेध कहा यह जानमले कुलमैं न गही।
धिकहैं उनको वह जीभजलो जिन मूढनके मतलीन कही ॥ ५२

वेश्या निषेध कथन ॥

दुमिला छन्द ॥

आखेट (शिकार) निषेध कथन ।

घनाक्षरी छन्द ।

कानन में वसैं ऐसे आनन गरीव जीव प्रानन सों प्यार प्रान पुन्जी जिस पास है । कायर सुभाव धरैं न कासों दीन द्रोह करै सब ही सों डरैं दांत लिये तृण रहैं हैं । काहू से न रोप पुनि काहू पै न पोप चाहैं काउके परोप पर दोप नाहिं धरैं हैं । नेक स्वाद सार वे को ऐसो मृग मारवेको हाय हाय रे कठोर तेरो कैसे कर बहे है ॥५५॥

चोरी निषेध कथन ।

छपैछन्द ।

चिन्तातजै न चोर रहत चौंकायल सारै ।
पीडैं धनी विलोक लोक निर्दई मिल मारै ।
प्रजापाल कर कोप तोप पर रोप उड़ावै ।
मरै महादुख देख अन्तनीचो गति पावै ।
बहु विपत मूल चोरी विसन प्रघट त्रास आवै नजर ।
परवित अदत्त अङ्गार गिन नीत निपुण परसै न कर ॥५६॥

---

५६ । कर = हाथ ।

पर कामनि को मुखचन्द्रचितै मुंदजांय सदा यह टेव गहैं।
धन जीवन है तिन जीवनकी धनहै जननोउर मांझ वहैं ॥५९

कुशील निन्दा कथन।

मत्तगयन्द छंद।

जे पर नार निहार निलज्ज हंसैं विलसैं बुध हीन बड़ेरे।
झूठन को जिम पातल पेख खुशी उर कूकर होत घनेरे।
जे जन को यह टेव सदा तिनको इस भो अप कीरति हैरे।
है परलोक विषै विजली सु करै शत खण्ड सुखा चल केरे।६०

जो एक एक व्यसन सेवन सों नष्ट भये तिनके नाम।

छप्पैछन्द।

प्रथम पांडवा भूप खेल जूआ सब खोयो।
मांस खाय बकराय पाय विपता बहु रोयो।
बिन जाने मद पान योग जादौगण दज्झे।
चारदत्त दुख सहे वेसवा बिसन अरुज्झे।
नृप ब्रह्मदत्त आखेटसों दुज शिवभूत अदत्तरति।
पररमणि राच्यरावणगयो सातों सेवत कौन गति।६१

६१। पररमणी = परस्त्री (सीता)।

दोहा छन्द।

पाप नाम नरपति करै नरक नगर में राज ।
तिन पठये पायक बिसन निज पुर बसती काज ॥६२॥
जिनकै जिनवर बचनकी बसो हिये परतीत।
बिसन प्रीत ते नर तजो नरक बास भयभीत ॥६३॥

कुकवि निन्दा कथन।

मत्तगयन्द छंद।

राग उदय जग अन्धभयो सहजै सब लोकन लाज गमाई ।
सीख विना नर सीख रहा वनिता सुख सेवन की चतुराई ।
तापर और रचैं रस काव्य कहा कहिये तिनको निठुराई ।
अन्ध असूझन को अंखियां मधे मेलत हैं रज राम दुहाई॥६४॥
कञ्चन कुम्भन की उपमा कहि देत उरोजन को कविवारे।
ऊपर श्याम विलोकत कै मणि नीलमकी ढकनी ढकछारे।
यों सत वैन कहैं न कुपण्डित ये युग आमिष पिण्ड उघारे।
साधन झारदई मुहछार भए इसहेत किधौं कुचकारे ॥६५॥

६५। कंचनकुम्भ=सोने के कलश। ६७ मतंग=हाथी।

विधातासों तर्क कर कुकवि निन्दा कथन।

मत्तगयन्द छंद।

हे विधि भल भई तुमतें समझे न कहां कसतूरि बनाई।
दीन कुरङ्गन के तनमें तिन दन्त धरें करुणा नहि आई।
क्यों न करी तिन जीभन जे रस काव्य करें पर को दुखदाई
साध अनुग्रह दुर्जन दण्ड दुऊ सधने विसरी चतुराई ॥६६॥

मनरूप हस्ती वर्णन।

छप्पै छन्द।

ज्ञान महावत डार सुमति सांकल गह खण्डै।
गुरु अंकुश नहि गिनै ब्रह्म ब्रत वृक्ष विहण्डै॥
कर सिद्धान्त सर हानि केल अघरज सों ठानै।
करण चपलता धरै कुमति करणी रति मानै॥
डोलत सुछन्द मदमत्त अति गुणपथिक आवत डरै।
वैराग खम्भ तें बांध नर मन मतङ्ग विचरत बुरे॥६७॥

गुरु उपकार कथन।

घनाक्षरी छन्द।

ढईसी सराय काय पान्थि जीव बस्यो आय रत्न त्रय

निध जापै मोक्ष जाको घर है। मिथ्या निशकारी जहां मोह अन्धकार भारी कामादिक तसकर समुहन को थर है। सोवे जो अचेत सोई खोवै निज सम्पदा को तहां गुरु पाहरू पुकारैं दया कर हैं। गाफिल न हूजै भ्रात ऐसो ही अन्धेरी रात जागरे वटेऊ जहां चोरनको डर है ॥६८॥

चारों कषाय जीतन उपाय कथन।

मत्तगयन्द छन्द।

छेम निवास छिमाधुवनी विन क्रोध पिशाच डरै न टरैगो।
कोमल भाव उपाय बिना यह मान महामद कौन हरैगो।
आर्जव सार कुठार विना छल बेल निकन्दन कौन करैगो।
संतोष शिरोमणिमन्त्र पढेविन लोभफणी विष क्यों उतरैगो६९

मिष्टवचन बोलन उपदेश।

मत्तगयन्दछन्द॥

कांहेको बोलत बोल बुरे नर नाहक क्यों यशधर्म्म गमावै॥
कोमल बैन चवै किन ऐन लगै कछु है न सबै मन भावै।

६८। तसकर=चोर। ६९। फणी=सांप।

तालु छिदै रसना न विधै न घटै कुछ अङ्क दरीद्र न भावै।
जीव कहै जिया हान नहीं तुझ जी सब जीवनको सुखपावै॥७०

धैर्यधारण शिक्षा वर्णन।

घनाक्षरी छन्द।

आयो है अचानक भयानक असाता कर्म ताके दूर करवेकों बली कोउ हैरे। जेजे मन भाये तैं कमाये पुन्यपाप आप तेही अब आये निज उदै काल लहरे। अरे मेरे वीर काए होत है अधीर यामै काउको न सीर तू अकेलो आप सहरे। भये दलगीर कुछ पीर न विनश जाय याहीतै सयाने तू तमाशा-गीर रहरे॥ ७१ ॥

होनहार दुर्निवार कथन।

घनाक्षरी छंद।

कैसेकैसे बली भूप भूपर विख्यात भये बैरी कुल कांपै नेक भौंहों के बिकार सों। लंघेगिर सायर दिवायर से दिपैं जिन

---

७० । रसना = जिव्हा = जीभ । ७१ । सीर = सांझ ।
७२ । सायर = सागर । दिवायर = दिवाकर (सूर्य) ।

कायर किये हैं भट किरोड़न हुंकार सों। ऐसे महामानी मौत आये हूं न हार मानी उतरे न नेक कभी मानके पहार सों। देव सो न हारे पुनि दाने सों नहारे और काऊ सों न हारे एक हारे होन हार सों ॥ ७२ ॥

कालसामर्थ कथन।

घनाक्षरी छन्द।

लोहमई कोट कई कोटन की ओट करो कांगरन तोप रोप राखों पट भेरके ॥ चारोंदिश चेरागण चौकस होय चौकी दें चहूं रङ्ग सेना चहों ओर रहो घेरके ॥ तहां एक भोहरा बनाय बीच बैठो पुनि बोलोमत कोउ जो बुलावै नाम टेर के। ऐसो परपञ्च पांति रचो क्यों न भांति भांति कैसे हूं न छोडें हम देखो यम हेर कै॥ ७३ ॥

अज्ञानी जीव दुखी हैं ऐसा कथन।

मत्तगयन्द छन्द।

अन्तक सों न छुटै निश्चैपर मूरख जीव निरन्तर धूजै।

७२। बहुरंग = चतुरंग = हाथी, घोडे, रथ, पयादे। चमूं = फौज। ७४। अन्तक = यम (काल)।

चाहत है चित मैं नित ही सुख होय न लाभ मनोरथ पूजै।
तू पर मन्दमति जगमै भाई आस बंध्यो दुख पावक भूंजै।
छोड़ विचक्षण ये जड़ लक्षण धीरजधार सुखी क्यों न हूजै।७४

धैर्यधारण शिक्षा वर्णन।

मत्तगयन्द छन्द।

जोधन लाभ ललाट लिख्यो लघु दीरघ सुकृतके अनुसारै।
सोइ मिले कुछ फेर नहीं मरुदेश कि ढेर सुमेर सिधारै।
कूप किधों भर सागर मे नर गागर मान मिलैजल सारै।
घाटक बाध कही नहि होय कहा करिये अवसोच विचारै॥७

आशानाम नदी वर्णन।

घनाक्षरी छन्द।

मोह से महान ऊंचे पर्वत सा ढर आई तिहूं जग भूतल को पाय बिसतरी है। विविध मनोरथ मैं भूरि जल भरी वहु तिशना तरङ्गन सों आकुलता धरी है। परभ्रमभंवर जहाँ राग से मगर तहां चिंता तट तुङ्ग वृक्ष धर्म ढाय ढरी है।

ऐसी यह आसा नाम नदी है आगाध महा धन्य साधु धीर धर तरणी चढ़ तरी है ॥ ७६ ॥

महामूढ़ वर्णन ।

-:(घनाक्षरी छन्द):-

जीवन कितेक तामें कहा बीत बाकी रह्यो तापै अन्ध कौन कौन करै हेर फेर ही । आप को चतुर जानै औरन को मूढ माने सांझ होन आई है विचारत सवेर ही । चाम ही के चक्षुन सों चितवै सकल चाल उरसों न विचारै कर राखो है अन्धेरही । बाहे बान तानकै अचानक ही ऐसो यम दीखे है मसान थान हाड़न को ढेर ही । ७७ ।

केती वार स्वान[१] सिंह[२] सावर[३] सियाल[४] साप[५] सिन्धुर[६] सारङ्ग[७] सूसा[८] सूरी[९] उदरही परो । केतीवार चील[१०] चमगादर[११] चकोर[१२] चिरा[१३] चकवाक[१४] चातक[१५] चंडूल[१६] तन भी धरो । केतीवार कच्छ[१७] मच्छ[१८] मैंडक[१९] गिंडोला[२०] मीन[२१] शङ्ख[२२] सीप[२३] कौडी[२४] हो जलूका[२५] जल में

---

७६ । तरणी = बेडी ।

७७ चषु = आंख । ७८ सिन्धुर = हाथी । चकवाक = चैंकवाँ

तिरो। कोई कहे जाय रे जिनावर तो बुरो मानै यों न मूढ आनै मैं अनेक बार हो मरो। ७८।

दुष्ट जन वर्णन ॥

छप्पै छन्द ॥

कर गुण अमृत पान दोष विष विषम समप्पै।
वंक चलन नहिं तजै युगल जिव्हा मुख थप्पै।
तकै निरन्तर छिद्र उदैपर दीपन रूच्चै।
बिन कारण दुख करै रविश कबहूं नहिं मुच्चै।
वर मौनमन्त्रसों होय वश संगत कीये हान है।
बहु मिलत बान यातैं सही दुर्जनसांप समान है ॥७९॥

विधातासों वितर्क कथन।

घनाचरी छन्द।

सज्जन जोर चेतो सुधा रस सों कौन काज दुष्ट जीव किया कालकूटसों कहा रही। दाता निरमापे फिर थापे क्यों कलप वृक्ष याचक विचारे लघु तृण हू तैं हैं सही। इष्ट के संयोग तैं न सीरो घन सार कुछः जगत को ख्याल इन्द्र जाल

७९। वंक = टेढी। ८०। काल कूट = जहिर

सम है सही। ऐसी दोय बात दीखै विध एक ही सो तुम आप को बनाई मेरे धोके मन है यही ॥ ८० ॥

चौबीस तीर्थंकरों के चिह्न वर्णन।

छप्पैछन्द।

१ २ ३ ४
गऊपुत्र गजराज वाजि बानर मन मोहै।
५ ६ ७ ८ ९
कोक कमल सांथिया सोम सफरीपति सोहै।
१० ११ १२ १३ १४
श्रीतरु गैंडा महिष कोल पुन सेही जानों।
१५ १६ १७ १८ १९ २०
वज्र हिरन अज मीन कलश कच्छप उर मानों।
२१ २२ २३ २४
शतपत्र शङ्ख अहिराज हरि ऋषभदेव जिन आदि ले।
श्रीवर्द्धमान लों जानिये चिन्ह चारु चोवीस ये। ८१।

श्रीऋषभदेवजीके पूर्व भव कथन।

घनाक्षरीछन्द।

१ २
आदि जैवरमा दूजै महाबल भूप तीजै स्वर्ग ईशान

८१। वाजि = घोडा। सफरी पति = मच्छ। कोक = चकवी। अज = बकरा। शतपत्र = कमल। अहि = सांप। हरि = सिंह

ललितांग देव भयो है। चौथे वज्रजंघ राय पांचवें युगल देह सम्यक हो दूजे देवलोक फिर गयो है। सातवें सुबुधि देव आठवें अच्युतइन्द्र नौमें भो नरिन्द्र वज्र नाभिनाम भयो है। दशमें अहमिन्द्र जान ग्यारमें ऋषभमान नाभि वंश भूधर के माथे जन्म लियो है।

श्रीचन्द्रप्रभुस्वामी के पूर्वभव कथन

गीता छन्द

श्रीवर्म भूपति पाल पुहमी, स्वर्ग पहले सुरभयो।
पुनिअजितसेनछैःखण्ड नायक, इन्द्रअच्युत में थयो।
वर पद्मनाभि नरेश निर्जर, वैजयन्त विमानमें।
चन्द्रप्रभस्वामी सातवेंभव भये पुरुषपुराणमें॥ ८३॥

श्रीशान्तिनाथ स्वामीके पूर्व भव कथन।

सवैया इकतीसा।

सिरीसेन आरज पुनि स्वर्गी अमित तेज खेचर पद पाय।

८४। पर्याय = देह का बदलना॥

५ ६
सुर रवि चूल स्वर्ग आनत मैं अपराजित बलभद्र कहाय।
७ ८ ९ १०
अच्युत इन्द्र वज्रायुध चक्री फिर अहमिन्द्र मेघरथ राय
११ १२
सरवारथ सिद्धेश शान्त जिन ये प्रभुकी बारह पर्याय॥८४॥

श्री नेमिनाथ जीके भव वर्णन ॥

छप्पै छन्द

पहिले भववन भील दुतिय अभिकेतु सेठघर। तीजै सुर सौधर्म्म चौम चिन्ता गति नभ चर। पंचम चौथे स्वर्ग छठै अपराजित राजा। अच्युत इन्द्र सातवैं अमर कुल तिलक विराजा। सुप्रतिष्ट राय आठम नवैं जन्म जयन्त विमान धर। फिर भये नेमि हरिवंश शशि ये दश भव सुधि करहु नर ॥८५॥

श्रीपार्श्वनाथ जी के भवान्तर नाम।

सवैया इकतीसा।

विप्र पूत मरू भूत विचक्षण वज्र घोष गज गहन मंझार।

८५। भव — जन्म।

सुरमुनिसहस्ररश्मि विद्याधर अच्युत स्वर्ग अमरी भरतार।
मनुज इन्द्र मध्यम ग्रैवेयक राजपुत्र आनंद कुमार।
आनतेन्द्र दस में भव जिनवर भये पार्श्व प्रभु के अवतार॥८६॥

राजा यशोधर के भवों का कथन।

मत्तगयन्द छन्द।

राव यशोधर चन्द्रमती पहिले भव मण्डल मोर कहाये। (१)
स्याहक सर्प नदी मधमच्छ अजाअज भैंस अजा फिर जाये। (२ ३ ४ ५ ६)
फेर भये कुकडा कुकडी इस सात भवान्तर में दुख पाये। (७)
चून मईचरणायुध मारकथा सुन सन्त हिये नरमाये॥८७॥

सुबुद्धि सखी प्रति वचनोत्तर।

घनाक्षरी छन्द।

कहै एक सखी स्यानी सुनरी सुबुद्धि रानी तेरो पति दुखी देख लागै उर आर है। महा अपराधी एक पुग्गल है छः मांह सोई दुख देत दीखै नाना प्रकार है। कहत सुबुध आली कहा दोष पुग्गल को अपनोहि भूल लाल होत आप

८७। अजा = बकरी। अज = बकरा॥

त्वार है। खोटोदाम आपनो सराफै कहा लगै वीर काऊको
। दोष मेरो भौंदू भरतार है॥ ८८॥

गुजराती भाषा में शिक्षा।

कडकाछन्द।

ज्ञानमय रूप रूडो वनो जेहूं न लखे क्यों न रे सुख पिण्ड
भोला। वेगली देहथी नेह तोसोंकरै पहनी टेव जो मेह बोला
मेरनै मानभव दुक्ख पाम्या पछै चैन लाधो नथी एकतोला
ली दुख वृक्षन बीज बोवै तुमैं आपथी आपनै आप बोला

द्रव्यलिङ्गी मुनि निरूपण कथन।

मत्तगयन्द छन्द।

शीत सहैं तन धूप दहैं तरु हेट रहैं करुणा उर आनैं।
झूठ कहैं न अदत्त गहैं वनता न चहैं लछि लोभ न जानैं।
मौन वहैं पढ भेद लहैं नहिं नेम जहैं व्रत रीत पिछानैं।
यों निवहैं परमोखनहीं विन ज्ञान पहैं जिनवीर वखानैं।९०

---

८८ भौंदू=महामूढ। ९० लछि=लक्ष्मी।

अनुभव प्रशंसा कथन ।

घनाक्षरी छन्द ।

जीवन अलप आज बुद्धि बल हीनता मैं आगम अगाध सिन्धु कैसे तहां डाक है । द्वादशाङ्गमूलएकअनभोअभासकला जन्म दागहारी घनसार की सलाक है । यहां एक सीख लीजै याही को अभ्यास कीजै याही रस पीजै ऐसा वीर जिन वाक है । इतनों ही सार यही आतमको हितकार यही लो संसार फिर आगै ढूकढाक है ॥ ९१ ॥

श्री भगवानसों बिनती ।

घनाक्षरी छन्द ।

आगम अभ्यास होय सेवा सरवज्ञ तेरी सङ्गत सदीव मिलो साधरमी जनकी । सन्तन के गुणको बखान यह बान परै मेटोटेव देव पर औगुण कथन की । सभ ही सों ऐनसुख दैन मुख बैन भाखो भावना त्रिकाल राखो आतमीक धनकी जोलूं कर्मकाटखोलूं मोक्ष के कपाट तोलूं यही बातहूजो प्रभु पूजो आस मनकी ॥ ९२ ॥

---

९१ । अलप = थोडा । आगम = शास्त्र । ९२ कपाट = किवाड़, दरवाजा ॥

जैनमत प्रशंसा कथन ।

दोहा छन्द ।

छये अनादि अज्ञानतै जग जीवन के नैन ।
सभ मत मूठी धूलकी अञ्जन जगमैंजैन ॥ ९३ ॥
भूल नदी के तिरनको और जतन कछु हैन ।
सभ मत घाट कुघाट हैं राजघाट है जैन ॥ ९४ ॥
तीन भवन में भर रहे थावर जङ्गमजीव ।
सभ मतभक्षक देखिये रक्षक जैन सदीव ॥ ९५ ॥
इस अपार भवजलधि मैं नहिंनहिं और इलाज ।
पाहन वाहन धर्मसभ जिनवरधर्म जिहाज ॥ ९६ ॥
मिथ्या मत के मदछिके सभ मत वाले लोय ।
सभ मत वाले जानिये जिनमत मत्त न होय ॥ ९७ ॥
मत्त गुमान गिर पर चढे वडे भये जग मांह ।
लघु देखैं सभ लोक को क्यो ही उतरत नांह ॥ ९८ ॥
चाम चक्षुसों सभ मती चितवत करत न वेर ।
ज्ञान नैनसो जैन ही जोवत इतनो फेर ॥ ९९ ॥

---

१०१ शिव सरवर =मोक्षरूप सरोवर ।

ज्यों बजाज ढिग राखकै पट परखै परवीन।
त्यों मनसे मत को परख पावै पुरुष अमीन ॥ १००॥
दोय पक्ष जिनमत विषै निश्चै अर व्यौहार।
तिन विन लहै न हंस यह शिव सरवर को पार ॥१०१
सीसै सीसै सीस हो तीन लोक तिहुंकाल।
जिनमत को उपकार सभ मत भ्रम करहु दयाल १०२
महिमा जिनवर वचन की नहीं वचन बल होय।
भुज बलसों सागर अगम तिरै न तारै कोय ॥ १०३ ॥
अपने अपने पन्थ को पोखै सकल जहान।
तैसे यह मत पोखना मत समझै मतवान ॥ १०४ ॥
इस असार संसार मैं और न शरण उपाय।
जन्म जन्म हूजो हमैं जिनवर धर्म सहाय ॥ १०५ ॥

घनाक्षरी छन्द।

आगरे में धर्मबुद्धि भूधर खण्डेलवाल बालक के ख्याल सों कवित्त कर आनें हैं। ऐसे ही करत भयो जैसिंघसवाई सूबा हाकिम गुलाबचन्द तहाँ तिहि थानें हैं। हरीसिंघसाह

१०५ । शरण = रक्षक

के सुवंश धर्मरागीनर तिनके कहेसै जोड़कीनो एक ठानै है फिर फिर प्रेरै मेरे आलसको अन्तभयो जिनकी सहाय यह मेरे मन मानै है ॥ १०६ ॥

संतरहसै इक्यासिया पोह पाख तम लीन ।
तिथ तेरस रविवार को शतक संपूरणकीन ॥ १०७

इति श्रीभूधरजैनशतक सम्पूर्णम् ।

कर्त्ता खंडन का फोटो।

लावनी

अर्थात्—वह लेख कि जिस में यह सिद्ध किया है कि ईश्वर सृष्टि का कर्ता हर्ता नहीं है, जिस को जिनधर्म्म सेवक ज्योतिप्रसाद ए०जे० सुपुत्र लाला नत्थूमल जैनी मुहल्ला चाहपारश देववन्द निवासी ने वनाया, और उन की आज्ञानुसार उमेदसिंह मुसद्दीलाल अमृतसर निवासी ने छपवाया ॥

सूचना।

सेवक को वहुत वड़ा विचार है कि इस लेख को पढ़ कर वहुत से भ्रातृगण मुझे अप्रमाण दूषित ठहरावेंगे परंतु जो वह भाई न्याय दृष्टि से पक्षपात रहित होकर विचार वान होय पढ़ेंगे तो अवश्य है कि वह सत्य भेद पाकर

अत्यन्त आनन्दित होंगे इस कारण सर्व पुरुषों से प्रार्थना है कि इस लेख को न्याय पूर्वक ध्यान सहित पढ़ैं और सुनैं जिस से सत्या सत्य का निर्णय हो॥

लावनी।

कर्तावादी कहैं जीवका कर्ता हर्ता परमेश्वर।
सृष्टी को रच जीव बनाये इसमें सन्देह पड़े नज़र।
अगर रची सृष्टी ईश्वरने फिर क्यों अंतर दियाहै डाल।
एक सुखी एक दुखी बनाया एक धनी निर्धन कंगाल॥
ऊंच नीच क्यों पुरुष बनाये एक दयालू एक चंडाल।
सब जीवोंपर समदृष्टी क्यों रहा न इसका कहीये हाल।
अगर कहोगे अपने भक्त को वह रखता हरदम खुशहाल
करैं बुराई जो ईश्वर की उसे देत दुख अति विकराल।
तो खुशामदी हुआ ईश्वर बड़ा दोष यह करिये ख्याल।
अगर कहो अनुसार कर्म के देता है सुख दुख धन माल।
तबतो यह बतलाओ जीव के संग कर्म लागे क्यों कर।
कर्तावादी कहैं जीवका कर्ता हर्ता परमेश्वर॥ १॥
जब ईश्वर ने प्रथम जीव को पैदा किया जगत के माह।
उस दम कर्म जीव के संगमें लगे हुये थे या कि नाह॥

अगर कहोगे कर्म संग थे यह तो बात हुई बे राह।
किये कर्म बिन कर्म कहां से आय जीव को किया तबाह ॥
अगर कहोगे कर्म नहीं थे संग जीव के जन्मत बार।
फिर यह आये कर्म कहां से इसका बतलाओ विस्तार ॥
किये कर्म क्यों पैदा ईशने करे जीव को जो लाचार।
कर्म जीव पर करा ईशने क्यों सुख दुख यह दीना डार॥
झूठ बात यह हुई सरासर मनमें समझो जरा चतुर।
कर्ता वादी कहैं जोवका कर्ता हर्ता परमेश्वर॥ २॥
अगर कर्म अनुसार ईशसे दंड सभी पाता संसार।
तबतो दंड लहा गनिका ने करै भोग फैला व्यभिचार॥
जिसके कारन प्रगट रहा दिख भ्रष्ट हुये जगमें नर नार।
अगर कहो स्वाधीनपने से करती है गनिका यह कार॥
फिर कहते सर्वज्ञ ईशको तीन काल की जाने बात॥
तब क्यों रची देह गनिकाकी जब उसको था इतना ज्ञात।
हो करके स्वाधीन यह गनिका भ्रष्टाचार करैं जग बीच॥
तब तो दोष हुआ ईश्वरको किया जान यह करतब नीच।
ईश्वर के सर्वज्ञ पने में लगैं दोष अरु सुनो ज़िकर।
कर्तावादी कहैं जीबका कर्ता हर्ता परमेश्वर॥ ३॥
दुष्ट लोग जीवों को मारैं वे रहसी से हरते प्राण।

किये ईश्वर ने क्यों पैदा जब उसको था इतना ज्ञान॥
अगर कहोगे घाती द्वारा दंड लहै हैं जीव अजान।
आज्ञा से ईश्वर की अपने करतब का फल भोगा आन।
जब घातक ने ईश्वर की आज्ञा से कीना जीव संहार॥
फिर क्यों उनको दोष लगावें पापी दुष्ट कहै संसार।
जैसे किसी धनी घर चोरी करी चोर धन लिया अपार॥
धनी पुरुष के कर्म योग से करवाई चोरी करतार।
दंड मिला निरदोष चोर को था ईश्वर का दोष मगर।
कर्ता वादी कहै जीव का कर्ता हर्ता परमेश्वर॥ ४॥
अगर कहोगे घाती नर का है अपराध बात लो मान।
फिर क्यों पैदा किये ईशने पापी जन चण्डाल महान॥
अगर जान कर इन्हे बनाये तब ईश्वर चंडाल समान।
अगर किये बिन जाने पैदा तब तो है मूरख नादान॥
हुआ नष्ट सर्वज्ञ पना अब रक्षक पन पर करिये गौर।
जब करना है जगकी रक्षा तब क्यों कीने ठग अरु चोर
अगर कहोगे मान पान का यही किया चोरों के तौर।
फिर क्यों पहरेदार बनाये फिरें जगाते कर २ शोर॥
तब तो दगा बाज है ईश्वर जब करता यह कपट मकर।
कर्ता वादी कहै जीव का कर्ता हर्ता परमेश्वर॥ ५॥

और यह भी कहते हो ईश्वर सब के घट में रहा है व्याप
जब ईश्वर घट २ का वासी फिर तो आप करै पुन पाप ॥
आपही ईश्वर पाप करै है जग जीवोंको दे संताप।
यह अन्याय है प्रगट नीति से इसको तो मानोगे आप ॥
और दूसरे जब घट २ में ईश्वर का प्रकाश निवास।

फिर स्वाधीन जीव ही कैसे हरदम रहै ईश जब पास ॥
सच अरु झूठ कपट छल जग में पाप पुन्य जितने व्यवहार
सभी कराता है परमेश्वर जीव करै होकर लाचार।
करै ईश्वर भरै जीव दुख यह ईश्वर में बड़ी कसर।
कर्ता वादी कहै जीव का कर्ता हर्ता परमेश्वर ॥ ६ ॥

घट २ व्यापी जब परमेश्वर तब मेरे घट वास जरूर।
मगर ईश के करता पन का मैं खण्डन करता भरपूर ॥
तबतो अपना खुद ख़ण्डन वह करै मेरा नहीं ज़रा क़सूर
अगर मेरा अपराध कहो तब रहै नहीं ईश्वर का नूर।

फिर कहते हो निरंकार वह जिसका नहीं कोई आकार।
मगर बिना आकार रचै क्या वस्तु दिल में करो विचार ॥
अंग हीन नर क्या कर सक्ता हाथ पैर बिन जब लाचार।
है अचरज की बात बिना आकार रचै ईश्वर संसार ॥

ऐसी भ्रष्ट बात को माने नहीं कोइ भी ज्ञानी नर।
कर्त्ता वादी कहें जीव का कर्ता हर्त्ता परमेश्वर ॥७॥
फिर कहते हो परमेश्वरको ज्योतिस्वरूप सदा सुनकार।
निरंकार पन नष्ट होगया जब उसका है रूप आकार ॥
सर्व शक्ति नहीं रही ईश मे जब सब जीव हुये स्वाधीन।
सर्व ज्ञान नहीं रहा ईश में नहीं दयालू करो यकीन॥
नहीं रहा घट २ का व्यापी समदृष्टी भी रहा न ईश।
रक्षक पन नहीं रहा ईश में निर्विकार भी नहि जगदीश।
जो २ गुन तुम वर्णन करते कर्त्ता पन मे रहैं न एक।
नहीं जीव का कर्ता ईश्वर मानो लोगो करो विवेक॥
ईश्वर होता है महा दोषी उसको कर्ता कहो अगर।
कर्ता वादी कहें जीवका कर्ता हर्ता परमेश्वर॥ ८॥
एक बात का और गुणीजन जरा ख्याल से करियो ख्याल
ईश्वर ने रच करके सृष्टि क्यों सिर अपने धरा बबाल॥
अपने सुख आनन्दमें उसने व्यर्थ फिकर क्यो लीना डाल।
हुआ फायदा क्या ईश्वर को फैलाया यह माया जाल॥
अगर कहोगे ईश्वर ने रच जग को हुनर दिखाया है।
मै हूं ऐसा बली गुणी जन मेरी यह सब माया है॥
तब तो करतब उन्हें दिखाया खुदही जिन्हें बनाया है।

वड़ा घमण्डी म.न के मारे जग का जाल विछाया है॥
किस कारन से दुनिया को रच किया ईशने प्रगट हुनर।
कर्ता वादी कहे जीव का कर्ता हर्ता परमेश्वर॥ ९ ॥
कर्ता पनका कहा हाल अव हर्ता पन का सुनो जिकर।
अपने हाथ वनाकर वस्तु नही हरै कोई ज्ञानी नर॥
अगर चतुर नर किसी वस्तु को वना वना दे खंडित कर
उसे कहै सव मूरख दुनिया यह तो आती साफ नजर॥
लिख कर साफ इवारत जो मेटै अपने हाथ वसर।
समझो उसको गलत इवारत या कुछ उसमें रही कसर।
कहो जीव रचने में ईशने की गलती या भूला डगर।
या मूरख पन किया ईशने हरे जीव पैदा कर २॥
नही ईश्वर हरै किसी को दोष लगावे उसके सर।
कर्ता वादी कहैं जीवका कर्ता हर्ता परमेश्वर॥ १०
करो झूंठ अरु सच को निर्णय पक्षपात को तज गुणवान।
कर्ता पन में परमेश्वर के होता है सव भ्रष्ट जहान॥
ईश्वर के सिर दोष लगैं अति पापी कपटी अरु नादान।
तुम ईश्वर को दोष लगावो फिर वनते हो भक्त महान॥
अरे भाई जो कर्म करोगे उसका फल भोगोगे आप।
कहै शास्त्र सुत करै भरे सुत वाप करै सो भोगे वाप॥

भक्ती के कारण परमेश्वर नहीं माफ करता है पाप।
दोष लगाओ मत ईश्वर को वर्ना भोगोगे संताप।
पक्षपात को तजकर ज्ञानी यही वातलो हिरदय धर।
कर्ता बादी कहे जीवका कर्ता हर्ता परमेश्वर ॥११
नहीं ईश्वर कर्ता हर्ता जगत जीवका आदि न अंत।
निज २ कर्म योग से सुख दुख पावे जीव जक्त भ्रमंत॥
नहीं ईश्वर दंड देत है नहीं ईश्वर करत हरंत।
राग द्वेष से रहित मोक्ष में अजर अमर ईश्वर भगवंत॥
पाप करे सो लहै जीव दुखपुन्य करेसुख लहै अपार।
पाप पुन्य के नाश करे पर बीतराग पन है सुखकार॥
बीतराग पन से लहै मुक्ती आवागमन कर्म को टार॥
वही जीव ईश्वर परमेश्वर ज्योति स्वरूप सिद्ध दातार।
समझन कारण गुणी जनों के यह काफी है चन्द सतर॥
कर्ता वादी कहे जीवका कर्ता हर्ता परमेश्वर॥ १२

द० ज्योतीप्रसाद ए०जे।

इति शुभम् समाप्तम् मङ्गलमस्तु कल्याणमस्तु

* वन्दे जिनवरम् *

कुरीतिनिवारण

(चन्द्रसेन जैनवैद्य लिखित)

जिसको

चन्द्रसेन जैनवैद्य, मंत्री जैनतत्त्व प्रकाशिनी
सभा इटावाने सर्वके लाभार्थ
छपाकर प्रकाशित किया ॥

ट्रेक्ट नं० ४

श्री वीर निर्वाण सम्वत् २४३९

पञ्चमावृत्ति	क्रम संख्या	की० एकपैसा
४०००	१३०००	सैकड़ा १) रु०

(कृष्णप्रेस इटावा में छपा)
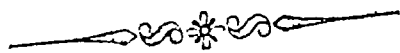
प्रथम ही मंगलके अर्थ तथा नास्तिकता के परिहार
के अर्थ और पूर्व पुरुषोंकी कृतज्ञता प्रगट करनेके अर्थ
परम इष्ट को नमस्कार रूप मंगलाचरण करता हूं।

श्लोक—अकलङ्क गुरुर्जीयादकलंकपदेश्वरः ।
बौद्धानां बुद्धिवैधव्ये दीक्षागुरुरुदाहृतः ॥

अर्थात् वह अकलंक गुरु जयवंत होहु जो अकलंक
पद के ईश्वर है तथा जो बोद्धों की बुद्धि को वैधव्य
(रंडापा) करनेके वास्ते जो दीक्षागुरु कहे गये हैं। जहां
जैसा कार्य करना होता है वहां वैसा ही कारण भी मि-
लाया जाता है पूर्व समयमे इस जैनजाति की अवन-
ति दशा होरही थी और उस समयमें इन अकलंक गुरु
ने इस जैन जातिका उद्धार किया था इसी भांति आ-

कल इन कुरीतियों से इस जातिकी अवनति दशा हो रही है इसी हेतु आज फिर उन्हीं अकलंक गुरु का नाम स्मरण करना आवश्यक हुआ जिससे उनके नाम स्मरणसे हमारे हृदयमें ऐसी शक्ति उत्पन्न होवे कि जिससे इन कुरीतियोंका काला मुंह करके फिर यह जाति उसी उन्नतिकी दशाको प्राप्त होवे। आज कल हमारी जाति में बहुतसी कुरीतियां फैली हुई हैं किन्तु जिन २ कुरीतियोंकी प्रायः अधिकता है आज उन्हीं का वर्णन करना हमारे व्याख्यानका मुख्य उद्देश्य है। प्रथमही जब हम दृष्टि उठाकर देखते हैं तो ज्ञात होता है कि इस जातिमें खराबी उत्पन्न करानेका कारण 'बालविवाह, है सबसे पहिले हमको यह जानना आवश्यक है कि यह बाल विवाह की चाल कबसे और क्यों चली पुस्तकें देखने से ज्ञात हुआ कि बादशाहोंके वक्तमें (मुसल्मानी राज्य के समयमे) जो कोई बादशाह या उनके कुमार आदि जब किसी हिन्दू की सुन्दर युवती लड़कीको देखले थे तो यथा तथा प्रकारसे उसको अपने महलमें लाकर रखते थे जैसे कि चन्द्रावलि पर औरंगज़ेब बादशाह के लड़के अशरफखांने जबरदस्तीकी और आखीर में चन्द्रावली ने अपनी आत्महत्या की इसी भांति जब देखा गया

कि अत्याचार बढ़ते जाते है और उसके निवारण क-
रनेका और कोई उपाय ही नहीं है। तब सब लोग अपनी
अपनी लड़कियोका विवाह छोटी उमरमे करने लगे क्यो
कि विवाह होनेके पश्चात् वह लोग विवाहता स्त्रियो
पर हाथ नहीं डालते थे। इसी भांति आज तक यह रि-
वाज चला आता है। परन्तु अब हमको विचारना चा-
हिये कि अबतो हमको न्यायशील गवर्नमेन्टका शासन
मिला है तब तो उस रीतिको जिससे कि हमारी जाति
सत्यानाश होने पर है छोड़ दे परन्तु आजकल हम भे-
ड़ियाधसान वाली कहावतको पूरी करते हैं कि ज्यों ही
आगेकी एक भेड़ कुएमे गिरने लगी कि सब की सब बिना
विचारे उसके पीछे कुएं मे गिरजाती है इसीभांति आज
कल प्रायः मनुष्य कहा करते हैं कि हम तो अपने पुरानो
की रीति पर चलते है पर यह विचार नहीं करते है कि
यह वक्त अब उसका नहीं।

प्रियमित्रो! देखिये कि बाल्यावस्थामें विवाहकर
देनेसे और कच्ची उमरमें वीर्य स्खलित हो जाने पर
फिर वह लड़का किसी कामका नहीं रहता है न तो
वह पढ़ सकता है और न कुछ घरका ही काम कर स-

क्ता है क्योंकि मगज में अब इतनी ताक़त नहीं है जिससे बात याद रह सके, हमने सैकड़ों ऐसे लड़के देखे है जो विवाह होनेके पश्चात् पढ़ना छोड़ बैठे है दूसरे उन मे उठने बैठने विचार करनेकी शक्ति नहीं है जिस्से कि कुछ घरका क़ाम करसकें फिरतो सदैव किसी न किसी वैद्य, डाक्टर या हकीमकी दवाकी आवश्यकता ही वनी रहती है ज़रासा भी उनसे किसी कामके लिये चाहा कि उसी वक्त जवाव मिला कि हमारी तो तवियत अच्छी नहीं है आप स्वयंकर लीजिये' तीसरे वह ऐसी अवस्थामें धार्मिककार्य क्या कर सकते हैं वह बात आप स्वयं विचार सकेंगे। अफसोसकी वात है कि ऐसी हालत देखते और जानते हुएभी हम इस रीतिको अपनी जाति से दूर नहीं करते है। देखिए किसी कविने क्या कहा है

चौपाई—बाल विवाह विपति विस्तारी। कोटिन अवला कीन दुखारी॥ वालक मृत्यु करत हैं ख्वारी। अल्प आयु कीने नरनारी॥ जाहीने सब कार्य विगारे। राजनसे किसार करडाले॥ वल पौरुष सव ही हर लीना। पुरुषनको नारी समकीना॥ ब्रह्मचर्य्य मर्याद विगारी। विद्या सुमति सभ्यताहारी॥ वुद्धि धैर्य सा-

हससे हीने । बिगत वीरता कायर कीने ॥ निर्बलता निजरूप दिखाया । पुरुषारथ का मूल गमाया ॥ अति दुर्बल नर देत दिखाई । घुटने पकड़ उठत तरुणाई ॥ चिन्ता आलस भी घर जाले । सबके पीत रंग कर डाले ॥ शोक सर्प सब तन छायो । कोऊन याते बचत बचायो ॥ प्रतिघर आलसकीन बसेरा । शुभ उद्यमको भयो निवेरा ॥ ज्योति हीन बहिरे करदीने । बाल विवाह यही फल लीने ॥

प्यारे जाति सुधारको ! आप रात दिन इसी फिक्र में रहते हैं कि इस जातिकी घटती क्यों होती जाती है अब आप भली भांति समझ लीजिये कि इस बाल्य विवाहके होनेसे अनेक बाल बिधवायें होती जाती हैं क्योंकि बाल्य विवाहित लड़कोंकी हमेशा तन्दुरुस्ती ख़राब रहनेसे प्रायः उदीर्णा मरण ही होजाया करताहै इसी कारण उन बाल विधवाओंसे सन्तान उत्पन्न न होने से इस जातिकी मर्दुमशुमारी घटतीही जातीहै इससे आप यदि जातिकी वृद्धि करना चाहते होंतो बस प्रिय सज्जनो ! विचारो, और उठो अब सोनेका समय नहीं है और शीघ्र ही इस कुरीति को निकाल कर जात्युन्नति करके सुखी हूजिये ॥

दूसरी कुरीति हमारी जातिमें " वृद्ध विवाह ,, है। खेदके साथ कहना पड़ता है कि यह रीति " ऊंट के गले में बिल्ली ,, वाली कहावत है जैसे किसी ऊंट के गलेमें बिल्ली बांधी जावे तो भला उसका क्या जोड़ है इसी भांति बतलाइये महाशय ! जिनकी हिलती हुई गर्दन मना करती है कि अब व्याह मत करो सफेद बाल मानो मृत्युका परवाना जिनको प्राप्त हुआ है बहरे कान और आखोंकी कम दृष्टि से मानो जिन को नसीहत होती है कि तुम भोगोंकी आकाङ्क्षा मत करो पर वह तो मानतेही नहीं हैं इसी वास्ते मानो इन्होंने इनसे अपना वास्ता छोड़ दिया है ऐसे बूढ़े पुरुषों से यदि बालिका विवाह दी जावे तो क्या उपर्युक्त कहावत ठीक नहीं होती है? वह यह नहीं सोचते कि हमारा विवाह किसी बुड्ढी औरतके साथ होनेसे जैसा हमको खेद होगा वैसा ही उस बालिकाको भी होगा फिर दो चार महीने जिये भी फिर पीछेसे सिवाय विधवाओंके कुलकी वृद्धि करनेके सिवाय और क्या हो सकता है। तीसरी इसीके साथमें हत्यारी "कन्या विक्रय ,, का रिवाज चल पड़ा है जो प्रायः ऐसे ही विवाहके शौकीनोके बदौलत होता है । प्रिय मित्रो !

बिचारिये । जिस लड़की का निर्माल्य द्रव्य के लेने से कितना परहेज़ किया जाता है कि उसके गांवके कुए का पानी भी नहीं लेते हैं उसीका यदि द्रव्य लेकर हम मजा उड़ावें तो भला हम क्या कहे जावेंगे। दूसरे जो द्रव्यके लोभके कारण अपनी सुकुमार बालिका को एक बूढ़ेके साथ विवाह देना क्या निर्दयताका कारण नहीं है? हमारी शर्म और धर्म कर्म बिलकुल नाश होगया जब कि हमने ऐसे२कार्य करने प्रारम्भ किये हम जैनी होकर दया धर्मकी डींग मारते हुए भी ऐसी कार्यवाही करें तो हमको शर्म आना चाहिऐ। अब मैं इसकी बाबत कुछ विशेष न कह कर सिर्फ एक उदाहरणकहके खतम करूंगा॥ एक पुरुष से किसी अनुचित कार्यके हो जानेसे गुरू ने प्रायश्चित्तबताया कि तू पांच कौर मलिनांशकेखानेसे उद्धार हो सकेगा यह सुनकर वह बहुत ही खेदित हुआ और बोला महाराज हम मनुष्य होकर और हमारेमें नासिका रहते हुये मलिनांश कैसे खावेंगे तब गुरूने बि-चार करकेकहा कि जिसने कन्या वेंचीहो उसके यहांपांत में तू पांचकौर खाके उठ आना तो तेरा प्रायश्चित्त पूरा हो जावेगा इस भांति सुनकर वह जहां कन्या बेचनेवाले

के यहां पांति होरही थी वह भी जाकर शामिल हुआ और परोस होनेके पश्चात् पांचकौर खाके ज्योंही उठ भागा त्योंही सब लोगोंने उस्से कहा कि भाईसाहब यो पात छोडकर कहां भागेजातेहो इसको सुनकर उसनेकहा कि भाई हमारे गुरूने पांचकौर मलिनांशके खानेका प्रायश्चित्त बतायाथा चूंकि यहकन्या विक्रयका निर्माल्य द्रव्य हमारे मलिनाशसमानहै इसी हेतु हम पाच कौर खाके भागतेहैं इतना सुनकर सबलोग उठबैठे और उस कन्या विक्रय करनेवालेकीबहुतनिन्दाकी तथा जातिसे वाह्य करदिया। प्रियमित्रो ! सोचो विचारो इस कुरीति को शीघ्रही दूर करो नहीं तो उन सुकुमार कन्याओंकी आहसे तथा इस पाप कर्मसे सत्यानाश होजावेगा।

चौथी सब कुरीतियोंकी नानी पापकी निशानी वेश्या प्रचार है। हे भ्रातृगण ! पंचम कालसे इस वेश्या के वशीभूत होकर जो २ हानियां और व्याधिया उत्पन्न हो रही हैं वह अनेकानेक है इन्हें कौन नहीं जानता बड़े शोकका स्थल है कि हम मनुष्यमात्र भी पतंग आदि एकेन्द्रियजीवोकीभांति रूपके वशहो साक्षात हानि जानते भी इस वेश्याके वशीभूत हो जाते है सच है

श्लोक

परमधर्मनदाश्वनमीनकान्शशिमुखीवडिशैनसमुद्धतान्।
अतिसमुल्लसतेरतिमुर्मुरेपचतिहाहतकस्मरधीवरः ॥

अर्थात् शोकका स्थल है कि स्त्रियोके हाव भावपर मोहित होकर मछलीके समान कामदेव रूपी धीवर के हाथमें प्राण खो बैठते हैं ॥

अब देखिये कहां मन रहित (अज्ञानी) मछली और कहां ज्ञानवान सैनी जीव ।

और भी कवित्त

कायासे काम जात, गांठहू से दाम जात नारी हूसे नेह जात रूप जात रंगसे । उत्तम सब कर्मजात कुलके सब धर्मजात गुरुजनसे शर्मजात, आपनि मति भंगसे॥ रूप रग दोऊ जात शास्त्र से प्रतीत जात प्रभुजीसे नेह जात मदनकी उमंगसे। जप तपकी आश जात सुरपुरको वास जात, भूषण विलास जात वेश्याके प्रसंगसे ॥१॥

भ्रातृवर ! वेश्याके सम्पूर्ण औगुण आपको केवल एक ही कवित्तद्वारा विदित होगये तथापि यह एक ऐसा विषय है कि इसके विषयमें जितना कहाजाय लाभ-दायक ही है ॥

लावनी

मत करौ प्रीति वेश्या विष वुझी कटारी। है यही सकल रोगनकी खानि दुखकारी ॥ टेक ॥

औषधि अनेक हैं सर्प डसेकी भाई। पर इसके काटेकी नहीं कोई दवाई ॥ गर लगें वानतो जीवित हू रहिजाई ॥ पर इसके नैनके वानसे होय सफाई ॥ है रोम रोम विष भरी करोना यारी। है यही सकल रोगनकी खानि दुखकारी ॥ १ ॥

यह तन मन धन हरलेय मधुरवोलीमें। बहुतोंका करै शिकार उमर भोलीमें ॥ कर दिये हजारों लोट पोट होली में। लाखो का दिल कर दिया कैद चोली में ॥ गई इसी कर्मसे लाखो ही ज़मीदारी । है यही सकल रोगनकी खानि दुखकारी ॥ २ ॥

होगये हजारोके वल वीर्य छारा। लाखोंका इसने वंश नाश कर डारा ॥ गठिया प्रमेह आतिशने देश विगारा। भारत गारत होगया इसीका मारा ॥ कर दिये हजारो इसने चोर और ज्वारी। है यही सकल दुर्गुण की खानि दुखकारी ॥ ३ ॥

इस वेश्या ही ने मद्य मांस सिखलाया। सब धर्म कर्म को इसने धूर मिलाया॥ और दया क्षमा लज्जा को मारभगाया। ईश्वर भक्तीका मूल नाश करवाया॥ हों इसके उपासक रौरवके अधिकारी। है यही०॥ ४॥

वह नवयुवकोंको नैन सेनसे खावे। और धनवानों को चट्ट गट्ट करजावे॥ धन हरण करै फिर पीछे राह बतावै। करै तीन पांच तो जूते भी लगवावे॥ पिटवा कर पीछे लावै पुलिस पुकारी। है यही सकल रोगों की खानि दुखकारी॥

फिर किया पुलिसने खूब अतिथि सत्कारा। हो गई सज़ा मिला मज़ा इश्क का सारा॥ जो झूंठ होय तो सज्जन करो विचारा। दो त्याग झूंठको सत्य बचन स्वीकारा॥ अब तजो कर्म यह अतिनिन्दित दुखकारी। है यही सकल रोगोंकी खानि दुखकारी॥६॥

पाठकगण! कहिये कैसा मज़ा मिला रुपयेका रुपया गया और व्याजमें जूते खाये। प्रायः यही दुर्दशा वेश्या प्रेमियोंकी होती है। पर शोक! कि भारतवर्ष के धनाढ्य और रईस महाशय स्वतः अपनी आंखों को मूदकर इस विषय कूपमें गिरते जाते हैं। यहां तक कि अन्तमेंवह

घड़े पदके धारी पिताओंके नामको धब्बा लगाते हुये आप बड़े घर (कारावास) में विश्राम लेते हैं। हाय! आज इस दुष्ट कालका कैसा प्रभाव है कि बड़े २ प्रतिष्ठत घराने जिनके पितामह महान् ब्रह्मचारी थे, आज इस वेश्या के प्रसंग से दिन २ दीनता, क्षीणता और अप्रवीणता को पहुंच रहे हैं। वे यह नहीं सोचते हैं कि हमने उत्तम जाति और धनाढ्यके घर जन्म लियाहै इस वास्ते यह अमूल्य नरभव पाकर इस प्रकार से सांसारिक सुख होते हुये कुव्यसनो में क्यो फंसना चाहिये! किन्तु ऐसा सोचें कैसे? धन है संपति है! सबहै! पर धर्म मे रुचि नहीं है!! न सद्ज्ञानके देनेवाली विमल विद्या ही है! तब कहिये न कि मोक्ष और स्वर्ग के मार्ग को कौन पहिचाने? यहां तो यह कहावत है कि—

कवित्त।

परिपूरण पापके कारणते, भगवन्त कथा न रुचे जिनको। एक रांड बुलाय नचावत है नचावत है निश को दिन को॥ मिरदंग भनै धिक है धिक है सुरताल पुछै किनको किनको। तब हाथ उठाय के नार कहै धिक है इनको, इनको, इनको॥ १॥

भाइयो। धनाढ्यो और रईसो। इस वेश्याका कभी नाम न लीजिये। सुनिये—

दोहा—धमक दमक दिन चार की, पुनि सुखायगी खाल।
नासे तुम मानो कही, मत पड़ वेश्या जाल॥
वेश्याको मन सघन वन, कुचघन पर्वत घोर।
तिहि पंथ में वचि रहो, लगे सुमन शर चोर॥

और भी सुनिये—

सवैया—ज्ञाननसै अरु मान नसै वलतेजकी हानि सवैकर डारी। संगति धीरज धर्मनसै कुलकानकी वाति बिसारी॥ व्यर्थसमय अनमोलनसे खलसोवत माह निशाअंधियारी शीलसो उत्तम रत्न नसे नर तोहू न चेततहैं व्यभिचारी।१। मांस भखेरु सुराह चखे न वुरासु लगे गणिका दई मारी। रांड़कला परवीन सदा रतिलीन न धर्म अधर्म विचारी॥ लालहरे शुचिता तनकी जनरूप हरै रु करै अपकारी। यार दुखारी भिखारी करैपर तौहू न चेतत हैं व्यभचारी २

वस आप से विचारवान् पुरुषों के सन्मुख विशेष कहनेकी आवश्यकता नहीं है। केवल यही प्रार्थनाहै कि जिस दुखकारी जग नारीके मारे हमारे धन धर्म बुद्धि वलका नाश हो रहा है उस कुरीतिको अपनी जाति से निकाल शीघ्र वाह्य कीजिये।

पांचवी कुरीति विवाह आदिकमें आतिशवाज़ी छु-
ड़ाना है। आजकल सब मनुष्य इस बातकी कोशिश
बहुत करते हैं कि कोई ऐसा काम किया जावे जिससे
मेरा नाम होवे तथा निशानी भी बनीरहे, चाहे धन
सब खर्च होजावे परन्तु धर्मके लिये कोई कुछ खर्चना
नहीं चाहते हैं। परन्तु अफ़सोसके साथ कहना पड़ता
है कि इस आतिशवाज़ी के छुड़ाने से न तो कुछ नाम
होता है और न कुछ निशानी ही रहती है सिवाय इस
के कि आतशवाज़ी छूटनेसे सैकड़ों हज़ारों जीव मर-
जावें और पीछे से मट्टीके ठीकरे रहजावें दैवयोग से
कभी किसीके घरमे आतशवाज़ी छूटने के समय आग
लगगई तो "हरेशरण" मुक़द्दमा लगे और ज़िल्लत
उठावें। प्यारे जैनी भाइयो! क्या अब हममेंसे बिल्कुल
ही बुद्धिरफूचक्कर होगई जो ऐसे२ काम करते हुये भी
अपने में बड़प्पन मानते हैं। देखिये एक कवि क्या
कहता है कि—

॥ दोहा ॥

पशुअन की भिल्ली लगै प्रथम पाप यह जान।
सो हिंसा सब शिर परै जानत नाहिं अजान॥

॥ चौपाई ॥

जाहिनीच लोकादि बनावै। पशुकीझिल्ली सबैलगावै ॥
लगे अग्नि चरिन्द उड़ावै। रोग जनक दुर्गन्ध बढ़ावैं ॥
कौन अविद्या जगमें आई। अतिनिंदित यहरीति चलाई
घृणितकार्यमे प्रीतिहै दूनी। सूंघे सब चमड़े की धूनी ॥
देखत नयन कछुक सुख पावैं। धुंवां नयनकी ज्योति घटावै। जबहीं तासें अग्नि लगावै। लाखन जीव तहां जरि जावै ॥ मक्खी मछर जरत अनन्ता। धनी लोग है तिनके हन्ता॥ इसने कितने ग्राम जलाये। नगरमांहिं बहुग्रह फुकवाये ॥ अग्नि घरों में जबही लागे। बहुत जीव तब जलहिं अभागे ॥ अग्नि लगनका पातक भारी। ताको समझत नाहिं अनारी॥ सुन्दरवस्त्र बहुत जलजावैं। कितने मूर्ख आंख फुरवावैं॥ वहुत पुरुष घायल हुइ जावैं। अंग भंग हुइ घरको आवैं ॥

दोहा–कितने मनुष्य मरगये, इस बवाल में आय।
जोविश्वास न आवहीं निश्चय देउं कराय ॥

छटवीं कुरीति फुलवारी विवाह आदिक में बनवाना है जिसमे सिवाय फिजूलखर्चीके और फुलवारीके टुकड़े २ हो जानेके और कुछ हाथ नहीं आताहै देखिये॥

दोहा—हानि बहुत फुलवारिकी किंचित कहूं सुनाय।
प्रथम हानि यह जानिये वृथाद्रव्य लुटिजाय॥
चौ०—जब चालै घरसे फुलवारी। वड़े जतन होवै रखवारी
पुलिस मांहि बहु खर्च करावे। तब समधीके घरतक जावे॥मारगमाहिं कबहूं लुटि जावे चितमे वडो शोक उपजावे॥जब सबही लूटे फुलवारी। धक्का मुक्की होवत भारी॥कितने मानुष कुचल जो जावे। हाथ पैर मुख दांत तुडावें॥ होत परस्पर मार पिटाई। बहुत ठौर हो चुकी लड़ाई॥ लूटसांहि तस्कर चल आवे। भूषण वस्त्र सबै लै जावे॥ दोहा॥ वृथाखेल फुलवारिमे खोवै द्रव्यलगाय। काहू काज न आवहीं टूंक२ उड़जाय॥
दोहा—पगिया भूषण भीड़में चोर छीन लेजाय।
लडकनके भूषण छिनें फिर पीछे पछताय॥

सातवीं कुरीति विवाह आदिमें गाली गाना है। जो भारतवर्ष लज्जावती स्त्रियोसे भूषित कहा जाता है शोकके साथ प्रकट करना पड़ता है कि आज वेही स्त्रियां बाप मा भाई बहिन छोटे वड़े आदिके सामने निर्लज्ज होकर अश्लील और फ़ोहिश गालियां गातीहैं कहांतक कहा जावे ऐसी २ वात स्त्री पुरुष एकान्तमे

भी कहने में शायद शर्माते होंगे लेकिन वही बातें सरे आम सब पञ्चोंके सामने खूब जोर२ से गा २ कर कही जाती हैं 'ऐसी २ कुरीतियां तुममें न होना चाहिये, यह वहुत अनुचित वात है,, इत्यादि यह सव शिक्षा यदि स्त्रियोंको दी जावे तो हमने पहिले ही से उनमें ऐसी समझ नहीं उत्पन्न होनेदी है जो वे हेयोपादेयका बिचार कर सकें अर्थात् स्त्रीशिक्षाका प्रचार विल्कुल ही उठा दिया है ऐसा होने पर उनको जैसी संगति मिलती है परणम जाती हैं। दूसरे यदि कुछ समझ भी हे तो उनको ऐसा सिरपर चढ़ा रक्खा है कि वह हमारी बातही नहीं मानती हैं। यदि उनको रोकने के वास्ते उनके मालिकोंसे कहा जावे तो वे कहदिया करते हैं कि साहब हम क्या करें हमारा कुछ वस नहीं चलता है ऐसा होनेपर लोग उनकी निन्दा करते हैं तथा समाजमें शर्म उठाना पड़तीहै। तब वह सभा आदिमें आना भी छोड़ बैठते हैं! भाइयो! सोचो इस में उन उपदेशदाताओं का क्या क़सूर है। आपके काम ही ऐसे हैं जिनसे आपको शर्म तथा निन्दा उठाने पड़ती है। देखिये मुझे एक दृष्टान्त याद आयाहै कि

पड़ती है। देखिये मुझे एक दृष्टान्त याद आया है कि एक मनुष्यको उनके घरवाले उसके ऊट पटांग कार्य्य देखकर उस्से भोंदू कहा करते थे इस हेतु वह नाराज़ होकर परदेश निकल गया रास्तेमे प्यास लगी तो एक कुए पर जहां उसके मनखरे से नीचे मोरी में पानी आता था और उस कुए पर पुर चल रहा था जाकर मुंह लगादिया और चुल्लूसे पानी पीने लगा जव पी चुका तव देखा कि पानी वरावर चलाही आताहै तो उसके रोकनेके वास्ते शिर हिलाने लगा पर वह पानी कव रुकनेवाला था वरावर चला ही आता था यह देख लोगोंने कहा कि यह वड़ा भोंदू है। यह सुनकर उसने कहा कि भाई तुमने भी कैसे जान लिया कि मैं भोंदू हूं इस दुखके मारे तो मैं घर ही से निकल आया हूं लोगोंने कहा कि तेरे कामही भोंदू जैसे हैं फिर क्या किया जावे। इसी हेतु प्यारे मित्रो ! ऐसी निंद्यकुरीति को अपनी जाति से शीघ्र निकालिये और स्त्री-शिक्षा का प्रचार कर समाजमे प्रतिष्ठा प्राप्त कर सुखी हूजिये। आंठवीं कुरीति विवाह आदिकमें वहुत मिठाई आदि का परोसना है जिसमें कि सिवाय धन लुट जाने और वांकी की वची हुई मिठाई भंगियोंके घर

जाने के सिवाय और कुछ नहीं है। जो धन कैसी २ कठिनतासे धूप ओर शर्दी गर्मी सहनकर बन पहाड़ समुद्र परदेश में रहकर अपने को तकलीफ देकर पित्ता मारकर इकट्ठा किया जाता है क्या वह इस तरह भगियों के घर भरने के लिये है ? किन्तु अपने सांसारिक सुखों तथा धर्म कार्यों में लगाने के लिये है। इस हेतु यह कुरीति भी इस जाति से निकालना चाहिये।

इत्यादि और भी कई कुरीतियां हैं परन्तु इनकी विशेषता है इस हेतु इतनीही कही गई हैं दूसरे हमारे जाति हितैषियों द्वारा ये बन्दकरदी जावेंगी तो और भी सुधार योग्य बातें लिखी जावेंगी।

प्रिय सज्जनो ! टुक ध्यान दीजिये ! और सोचिये। कि कुरीतियोंसे क्या खराबियां हुई और हो रही हैं। इससे अब बहुत सोचुके और अब जागिये और जाति सुधार कीजिये नहीं तो वह कहावत होगी कि—

समय गये पुनिका पछताने। काहा वर्षा जब कृषी सुखाने॥

इससे जो गई सो गई, अब राख रही को। अब मैं अपने व्याख्यान को पूर्ण करता हूं और अनुचित शब्दों के कहने की क्षमा मांगता हूं॥

जै बोलो ! जैन धर्मकी जै !! इति समाप्तम्।

* वन्दे जिनवरम् *

वृद्ध विवाह

रात्रि के दस बजने का समय है चारों ओर सूनसान है केवल एक मकान मनुष्यों की सजावट से सजा हुआ है इसी मकान के एक कमरे में चाण्डाल चौकड़ी से घिरे हुए एक वृद्ध पुरुष बैठे हुए हैं आपके बालों ने और दातों ने आपको पूरा इस्तीफ़ा दे रक्खा है चेहरे की खूबसूरती अमचुर के ऐसे गालो ने और झुर्रियो ने लूटली है इस से जाहिर होता है कि ये अजायब घर की ही शोभा बढ़ाने वाले रत्न हो रहे हैं लाला का नाम कुलबोरूमल है आप के पिता लाला दमड़ीमल कितने ही के रुपये हजम कर बेईमानी और दगाबाजीको अपना मित्र बना सूमता की सहायता से एक बड़े धनपात्र गिनेजाते थे और उन्होने यह निश्चयकर लिया था कि अव्वल तो हम मरेहीगे नहीं यदि मरभी गये तो इस धन को साथ लेते जायेंगे किन्तु ये अभिलाषा उनकी पूरी न होने

पाई बीचमें ही उन्हें यमलोक जाना पड़ा अब यह उनही के सपूत हैं जो तकिया लगाये बैठे हैं पीछे एक आदमी लालाकी कमर दाब रहा है लाला एक बड़ी चिन्तामें मग्न हैं इनके समीप चार मनुष्य जा बैठे हैं उनको देखने से यह ज्ञात होता है कि लाला के ऊपर आज चौग्रही लगी है इनमें से अव्वल नम्बर प्रोहित लंठाधिराजजी हैं जिन्होंने अपनी सारी उम्र दगाबा-जी और फरेब करने में ही बिताई है इसीसे आप स बसे अव्वल नम्बर का सार्टीफिकट पाये हुये हैं। इस कार्यमे विघ्न पड़नेके ही कारण से आपने विद्या नही पढ़ी लोभ के बस हो आपने सैकड़ों छोटी २ कन्या-ओं के विवाह कबर की तैयारी वाले बूढों से करा २ के खूब धन भी संचित करा है इसी से आप ने सिद्धान्त से पाप करके धन पैदा करने की यही सहज तरकीब निकली है। इसी से आप दया से बहुत दूररहते है और न आपको उन बेवाओ को देखकर तरस आती है जो बड़े २ ऊंटों के गले में बकरी सी बांधी जाती है दया कहा से आवे कि-

सी ने सच कहा है "मांसाहारीकुतोदया" जि
को कन्या दलाली का शौक हो जाता है फिर उस
को नर्कका ख्याल नहीं रहता न कन्याओ के गलेमें
फांसी लगाने का ख्याल रहता है केवल कमीशन
खाकर मौज उड़ाना एक धर्म याद रहता है आप
(याने) पुरोहित लंठाधिराज जी उन्हीं महात्मा
के वंश को कालिमा देने वाले पैदा हुए हैं जिन म-
हात्माओं को दया तथा परोपकार इत्यादि व्रत जीवन
पर्यन्त अटल रहता था दिल से वदनामी का ख्याल
विलकुल जाता रहा है सच है "लोभश्चेदगुणेनकिम्"
जिस के लोभ है उस को और औगुणों की क्या
जरूरत है ये ही कीर्ति को मही में मिला सकता है
जो हो धूर्त आप इतने हैं कि झूंठ और जिद्द मे
आपने वकीलों को भी मात कर दिया है आज लाला
को भी नर्क में भेजने के हेतु आपने दर्शन दिये हैं ।
क्यों न दर्शन दें ऐसे २ पुरुप ही तो अपनी आढ़त
द्वारा जीवों को यमलोक भेजते हैं ॥

लाला के सामने जो दूसरे पुरुष हैं वह वैद्यराज हैं और इनकी टोपी पर बड़े २ अक्षरों से वैद्यराज लिखा हुआ है आपका नाम व्याधि सिंधु है अर्थात् व्याधि का समुद्र है आप पढ़े लिखे तो बहुत ही कम हैं किन्तु धूर्त्त पक्के हैं इन के पिता ने इनको इसी बात में पक्का कर दिया है दूसरी शिक्षा इन को यह भी मिली है कोई भी दवा हो रोगी को देना १०० में से ५० मरेंगे पांच अच्छे हो जायेंगे इसी आधार पर अंधे की तरह टटोल २ के वैद्यक करते हैं कितने रोगियों को आप मृत्यु की गोद में पहुंचा चुके हैं कितने साध्यरोगी आप की दवा से सदा के लिये असाध्य हो गये हैं दो चार दीर्घ जीवी आप की दवा से कुछ २ आराम पागये हैं बस यही दृष्टान्त आप के वैद्यक का है लाला की कमर मे पीड़ा है श- रीर मे भी कमजोरी अधिक रहती है इसी कारण यमराज के सहोदर अक्सर आया करते हैं आप ऐसे वैद्यों के विषय में किसी कवि ने यथार्थ ही कहा है कि "वैद्यराजनमस्तुभ्यम् यमराजसहोदरः । यम-

स्तु हरति प्राणान् वैद्यः प्राणान्धनानिच ।" लाला के समीप जो तीसरे मनुष्य और हैं यह एक खानदानी रईस के लड़के हैं और वह अपना बहुत सा धन वेश्या के समर्पण कर चुके हैं किन्तु अब इनके पास कुछ नगद नारायण का जोर नही रहा इसी कारण दुनियां की सैर कराने के लिये नित्य नई चुपड़ी बाते किया करते हैं और लाला भी सब से अधिकतर खातिरदारी इन्होंकी करते हैं आपका इस्म मुबारक लाला जुडावन प्रसाद है चौथे कुछ उदाससे मालूम होते हैं शायद यह भी लाला साहेबके मित्र हैं किन्तु इनकी खातिर कम होती है कारण कि ये साफ कहने वाले और निर्लोभ पुरुष हैं आपका नाम लाला किशोरीलाल है। कुछ देरके बाद लालाने कहा प्रोहित जी आप जानते ही हैं कि मेरे कोई औलाद नहीं है और गृहस्थी का सुख और गृह की शोभा बिना स्त्री के नहीं होती हाय ! क्या यह जीवन विना स्त्री के ही व्यतीत होगा धन और सम्पूर्ण आभूषणों को कौन पहनेगा और मैं किस प्रकार आंखों का सुख देखूंगा आप ऐसे चतुर प्रोहित रहते भी

मुझ को तकलीफ होवे लाला की बात सुन कर प्रो· हित लठाधिराज हंस कर बोले लाला जी आप घब· ड़ाते क्यों हैं आप की तो कुछ उम्र ही नहीं है आप से बूढ़ों २ का ब्याह बंदेने वालोंमें खिजाब लगवाकर और उम्र कम बता २ करा दिया आप जानते हैं कि इन बातोंमें रुपये की जरूरत है बस एक दम थैली खोल दीजिये फिर एक नही दो ब्याह लीजिये यह तो कुञ्जी हमारे हाथ में है लाला। खुश हो कर अन्दाज से कितने रुपये का खर्चा है । प्रोहित जी—कम से कम ३०००) रु० तो लगैगा ॥

लाला। मन ही मन मग्न होकर प्रोहित जी को रुपया देते है। कहिये प्रोहित जी अब तो आप को दिलजमई हुई । अब जहा तक इस काम को जल्दी हो तै कीजिये क्योंकि हम को एक २ दिन वर्ष के तुल्य काटने पड़ते हैं बस अब शीघ्र जाइये और काम सिद्ध कर लाइये ।

प्रोहित जी। काम सिद्ध ही समझिये ।

दूसरा परिच्छेद ॥

* प्रोहित लठाधिराज जी का मकान *

प्रोहित जी आज बड़े हर्षित मन बैठे है मन ही

सन आजकल के आनन्द का ठिकाना नही है सच है आनन्द क्यों न हो जब थोड़े ही परिश्रम से हजारों की वोहनी होती है। यकायक प्रोहित जी ने हंस कर कहा फलाने की मा आज तो वड़ी चिड़िया हाथ लागी।

पुरलानी जी। हंस कर क्या क्या वताओ तो।

प्रोहित जी—बगल में से थैली निकाल कर देते हैं गिनो २ भीतर सन्दूक में रक्खो यह वंदे ही के फिरके हैं जो ऐसे घपडूलों को फांस फूस कर हजारो लेता हूं और वह खुशी २ देते हैं सच है (गैर को अपना बनाना कोई हम से सीख ले) पढ़े तो बदे कुछ भी नही है परन्तु बड़े २ फदे याद हैं आज कल समय के फेर से पढ़े लिखे भूखों मरते हैं अच्छे २ इन्ट्रेंस और मिडिल पास मारे २ फिरते है परन्तु हम को लोग हाथों हाथ लेते हैं उल्टी सीधी करमपत्री मिलवाई और मामला तैयार करा देते है फिर चाहे मुरदा दोजख में जाय चाहे विहिश्त मे दो ही महीने में बिटिया क्यों न रांड़ हो जाय अपनी तो मौज है और हमारे फंदे निराले हैं जो इस

में फंसा वो जिन्दगी भर को रोता है। अरी जरा चिलम तो भरला ॥

पुरतानीजी का चिलम भर कर देना और पुरोहितजी हुक्का पीते २ गप सप लड़ाते हैं वाह २ हमसे बढ़ कर भी किसी का रोजगार है एक २ दिन मे हजारों पैदा करना हमारा ही काम है विना रुपया लगाये हाथ पैर डुलाये सच्ची झूंठी लगाय पैसा पैदा करना हमारा ही काम है और ऐसे २ कर्मों को करके फर्स्टक्लास के ब्राह्मण बनने का हमारा ही काम है। इतने में नौकर ने लोटा सामने रक्खा लसठाधिराज जी ने लोटा लेकर दिशा मे परस्थान किया ॥

तीसरा परिच्छेद ॥

लाला कर्कटदासजी अपने घरमें बैठे हुए हैं इन के एक कन्या है जिसकी अवस्था बारह वर्ष की हो गई है तेरहवें साल का आरम्भ हुआ है कन्या का नाम और ही कुछ रक्खा गया था किन्तु अब इसके गुणो ने नाम को अपने ही गुणों से प्रका-

शित कर दिया है कर्कशादेई की माता ने उसके पिता से कहा कि कन्या दिन २ बडी होती जाती है इस के विवाह की भी कुछ फिक्र है। लाला ने हंसते २ उत्तर दिया कल पुरोहित लठाधिराजजी आये थे और उन्हों ने एक लड़के के वारे में कहा था वही सम्बन्ध पक्का हो रहा है हाथ उठा के पांच उंगली दिखाता है ॥

स्त्रीने झट पास आके हंसते २ कहा क्या पांच सौ। लालाने कहा हां २ और उस के कोई हैं भी नहीं अन्त में सब अपना ही है कर्कशा की माता, किन्तु लाला कोई २ कहते हैं कि कन्या का धान्य बडा निकृष्ट होता है अन्त में वड़ी बुरी हालत होती है विरादरी का भी डर है लोग क्या कहेंगे कि रुपये के लोभ से विटिया को बूढ़े के साथ विवाह दी।

लाला—विटिया का धान्य हजम करना तो अपनी खान्दानी चाल है रहा नर्क स्वर्ग सो हम ऐसों को नर्क हो ही नही सकता अव हम से वहस में यमराज जी जीतेंगे तव देखा जायगा और बदनाम तो मूरख होते हैं जिन्हें ऐब छिपाना नहीं आता

आज तक हमने कितने ही काम किये दान देके फेर-लिये जालसाजी धोखावाजी दुनियां के सब ऐब कोई हम ने न छोड़े परन्तु किसी ने नही जाना यदि जाना भी तो हमारे व्याख्यान के आगे किसी की चल नही सक्ती है लाला ये कह पान का बीड़ा चवाते हुए वाजार की सैर को चलते हुये ॥

चतुर्थ परिच्छेद ॥

संध्या का समय है लाला कुलवोरूलाल जी कमरे मे बैठे हैं इन के समीप केवल इन के मित्र लाला किशोरीलाल जी हैं और कोई भी नही है ॥

लाला किशोरीलाल एक अच्छ खानदानी आदमी हैं और साफ कहने वाले निष्कपट सच्चे आदमी हैं इसी से लाला कुलवोरूलाल आप की खातिर अच्छी तरह नही करते थे यह लाला किशोरीलाल भी जानते हैं किन्तु सन्मित्र होने के कारण कभी २ इन के गन्दे ख्यालों को दूर करने के लिये आजाते हैं लाला कुलवोरूलाल पैसे में १ कौड़ी भर जो कुछ सत्कर्म करते हैं केवल उन्हीं के निहोरे से लाला की विवाह की

इच्छा जान किशोरीलाल ने कहा लाला अब जरा ध्यान देकर हमारी भी दो चार बातें सुनिये मनुष्य के तीनपन आप नाच चुके अब आप का यह चौथा पन है अब केवल ईश्वर के आराधन मे ही विताना चाहिये जिस समय का जो कर्त्तव्य है वही करना उचित है। इस अवस्था में विवाह करना अपने हाथ से अपने पैर में कुल्हाड़ी मारने के समान है शास्त्र भी लिखता है कि 'वृद्धस्य तरुणी विषं" अर्थात् वृद्धको तरुणी विषके समान फल देती है कि "दूसरे नीतिकार यह भी लिखते हैं कि "आत्मवत् सर्वभूतेषु यःपश्यति सपण्डितः" अर्थात् अपनी समान जो सब प्राणियों को जानता है वही पण्डित है तब यदि मान लिया जाय कि आप युवा होते और उस समय आप का किसी धनवान बुढ़िया से विवाह किया जाता तो आप जरूर कुढ़ते उसी प्रकार विचारना चाहिये कि स्त्रियों के हृदय में भी वृद्ध को देख अत्यन्त दुःख उत्पन्न होगा कुछ तो पाप से डरो जानबूझ के किसी की कन्या के गले में फांसी लगाते हो अब कब तक जिओगे किस आशा से विवाह करते हो अब इसी पन

में अन्त है एक या दो वर्ष से अधिक नहीं चल सक्ते यदि चले भी तो किस अर्थके "धोबी का कुत्ता न घर का न घाटका" कुछ सोचो तो सही एक तो बाल्य विवाह के अन्धाधन्ध के कारण कितनी ही कन्याये रांड़ होती जाती हैं खैर इस में उन बालकों के पिता माता का दोष है जो अनसमझ बालकों के पैरों में विवाह रूपी बन्धन को बांध विधवाओ की वृद्धि का बीज बोते हैं कारण कि कलिके प्रभाव से अवस्था का कुछ ठीक नहीं है तब ऐसे समय में बहुत छोटे बालक बालिकाओं का विवाह करना अनुचित है ।

दूसरे आप तो जमाने को देख चुके है क्या आप लाला तेपचीमल झझड़मल को भूल गये जिन्हों ने बुढापे में बिवाह कर अपना फजीता कराया जीते जी रो २ कर बीता अन्त को प्राण ही उनके गये किन्तु उनकी स्त्री का दुष्टस्वभाव न गया अब भी उसके डर से सब कांपते है प्रातःकाल से सन्ध्या तक कलह ही में वह रहती है लड़ाई पैदा करके बढ़ा देना तो उस का नित्य का काज ही है जिस सुख के लिये जिस सन्तान के लिये लाला ने बिवाह किया था उतनी ही

उनकी कीर्ति मट्टी में मिल रही है इस से आप विवाह का नाम न लाइये और उतने ही धनको अच्छे कामोंमें लगाइये। धन ईश्वर इसलिये नहीं देता है कि बुरे कामोंमें लगाया जाय लाला कुलबोरूलाल नेत्र लाल २ करके हूं हूं चले वहां से हमें सिखाने ! विवाह करने में रुपया खर्चना बुरे कामोंमें लगाया जाता है यही तो बड़े समझदार की दुम हैं ?

किशोरीलाल ने कहा लाला होशमें रहिये अमीरों को कई बोतलों का नशा रहता है जो खानदानी अमीर नही होते आप जो प्रोहितों को कन्या दलाली में रुपया देते हैं और बिटियोके बापको रुपया दे बिटिया मोल लेते हैं यह पाप नहीं है ॥

लाला हां ! हां !! जाना तो तुम्हारी इच्छा है कि हम विवाह न करें अरे कोई है इसे निकालो हमारा बुरा चेतता है और भी तो हमारे मित्र हैं जो हमारी हा में हां मिलाया करते हैं यह बड़ा बुद्धिमान बनता है निकल जा हमारे आगे से लाला के गुस्से के मारे मुंह में फेना भर आया आखें लाल २ होगई शरीर कापने लगा लाला कुलबोरूलाल की बातें सुन किशोरीलाल ने क्रोधमें होकर कहा लाला हा जी तो

वह कहे कि जिसकी इच्छा तुमको उल्टे उस्तरे से मूड़ने की हो यहां तो जो अपना धर्म था सो कर दिया है किसी ने ठीक कहा है ।

सवैया—आंधरे को प्रतिबिम्ब कहा बहिरे को कहा सुर रागको ताने । आदिके स्वाद कहा कपिको पर नीच कहा उपकार को माने॥ भेड़ कहांलौ करै बुकवा हरवाह जवाहिर का पहिचाने । जाने कहा हिजरा रति की गति आखरकी गतिका खरजाने ॥ १ ॥

पञ्चम परिच्छेद ॥

आज सारे शहरमें लाला के बिवाह की धूम है पुरोहित लंठाधिराज और उनकी बीबी मये अपने पुत्र पोंगादास सहित इसकी तैय्यारी में लगे हैं धीरे२ विवाह मे शामिल होने वाले महात्मा आने लगे लाला अमीर हैं जाफत भी होगी अब क्या है टीड़ीदलकी तरह लालाके मकानमें स्त्री और पुरुषोंकी भीड़ हो रही है लाला का चित्त आज अत्यन्त प्रसन्न है बीबी के दिल की राम जाने देखते २ संध्या का समय निकट

आया बिटिया वाले की तरफसे बहुत से लोग कर्कट-मल के साथ वर के दरवाजे पर आये लालाकुलबोरू-लाल दर्वाजे से निकल घोड़े पर सवार हुए घोड़ा भी इन के बोझ से थका जाता था लाला को इधर उधर दो आदमी थामें हैं और उनके आगे एक वेश्या गाना गाती जाती है।

दादरा।

चले डगमगी चाल मेरा हरियाला बन्ना ॥
आखोंसे नही सूझे जिनको श्वेत पके सबलाल ॥ मेरा० ॥
चेहरे पै मुर्दनी विराजे बैठिगये दोऊ गाल ॥ मेरा० ॥
कानों से कम सुने देह की भूलगई सब खाल ॥मेरा०॥
धोती तक पहिरावे चाकर नाताकत बेहाल ॥ मेरा० ॥
आपुन दिल बहु खुशी बहूके शिरपर नाचे काल ॥मेरा०॥

कुछ समय उपरान्त लाला ने ससुरालके दरवाजे पर पैर रक्खा लड़के को देखने को सब ही स्त्रियां उत्सुक होती है इस ही कारण लाला कर्कटमल के यहां देश व परदेश की स्त्रिया सब ही इकट्ठी थी देख के कितनी तो ठट्ठा मार के हंसी और. कितनी ही मन्द २ मुस-क्याय के रहगई और कितनी जो दयावान थी उन के

नेत्रों में आंसू भर आये कि हाय कर्कशादेई के भाग फूट गये अरे इस बुड्ढेको देखो मरने चला है विवाह की सूझी है आपसमें औरतें तो ऐसी बातें कररहीं थीं किन्तु लाला और तने जाते थे मारे खुशीके जो दरवाजे के भीतर घुसे घुसते ही लाला के मूंड़ मे ठोकर लगी ठोकर लगते ही लालाको मूर्छा आगई चारों ओर से पखा होने लगा वैद्यराज भी पास ही खड़े थे कहा कुछ नहीं लाला को गुलाब के दो कलशों से नहलाओ और इसी समय लाला नहलाये गये और होशमें आते ही भीगी वटेर से लथड़पथड़ भीतर लाये गये लाला के शिर में दर्द अधिक होने लगा और व्याधा से पीड़ित होने लगे उस वक्त वैद्यराज जी ने लाला कर्कट मल जी से बुलाकर कहा मैं एक नुस्खा लिखे देता हूं आदमी को भेजकर बाजार से मगवाकर पिला दीजिये अभी शिर का दर्द अच्छा होजायगा ॥

इतने ही में प्रोहित लंठाधिराज जी ने कहा लाला जी अब देर न कीजिये, मुहूर्त टलाजाता है और लाला जी का हाथ पकड़ ज्यों त्यों कर चौक पर बैठाया और शुभशायत से व्याह करा दिया।

षष्ठम परिच्छेद ।

(लाला कुलबोरूलाल का मकान)

लाला की बीबी भी कल्लेदराजी में कम नहीं है, मुटापा आप का देख के घी का कुप्पा भी मात होता है देह का घमण्डा भैंस के समान है चेहरे की खूबसूरती भी इन्हीं जोड़ों की है बीबी को देखके यही वाक्य पूर्ण घटित होता है (राम मिलाई जोड़ी कोई अन्धा कोई कोढ़ी) बीबी के घरमें एक बिधवा नन्द और लाला के चचा की स्त्री के घराऊ और कोई नहीं है घर में एक मजदूरिन और एक नौकर है इसका नाम शायद छेदा कहार है बीबी का चेहरा देखके भय मालूम होता है कल्लेदराजी सुनके कान भन्ना जाते हैं वेशरमी देखके वेश्या भी मात होजाती है चचियासास व नन्द छोटी वा लाला ही आपका शिकार हैं जिस पर क्रोध आया उसी को झाड़डाला किसी कवि ने ऐसी स्त्रियों के विषय में ठीक ही कहा है—

"तोपे रहें रार २ करे घर को न कारबार होत भिनसार द्वार २ लड़ आवती । सास जो वहूके नातने सिखावे बातओपे पीसि २ दांतऊनगरि आवती ।

भाषत प्रदान या गनेको जेठ देवरको खसमके खानको खवीसिन सी धावती । कुलकी कुठारिनी उखारिनी कुटुम्बन को ऐसी नीच नारि ते कुलटा कहावती ॥

विवाह के कुछ ही दिन गुजरे होंगे। लाला कुल बोरूलालने बीबीसे कहा अब क्या तू कुछ भी घरका काम न करेगी बीबी ने क्रोध में हो कहा बस बुड्ढे चुप रह खबरदार जो कुछ बोला डूबजा चुल्लू भर पानी मे शरम नहीं आती नीच नहीं तो तुझे ठीक करूंगी दो व्याह कर चुके हो और औरतें सीधी पाई हैं॥

लाला—क्योंरी तू मुझे ठीक करेगी क्या मैंने इसी सुख के लिये बुढ़ापे में व्याह किया है यह कह बड़ी जोर से डौंकता है ॥

बीबी ने कहा अरे चल लुच्चे चिल्ला २ के क्यों गला फाड़ डालता है ॥

अब लाला क्रोधकर बीबी के ऊपर झपटे बीच ही में छेदा कहार ने लाला को रोका वृद्ध तो येही लड़खड़ा के ज़मीन पर गिरे और झार पोंछ के उठ के फिर बीबी पर गालीकी बौछार करने लगे और लगे दुहथ्थड़ छाती पीटने लाला का यह स्वांग देख

कर बीबी ने कहा दैइमार सिलपर मूंह अब मक्कर दिखाता है नदी में बूड़ मर रोता क्यों है।

लाला ने कहा अरी राड़ निकल मेरे घर से ?

बीबी—तुझे निकाल के निकलूंगी।

बीबी की सहायता पर छेदा कहार था इसीसे बीबी दुगुने बल से गर्ज कर कहती थी और यों भी वह बुढ़ऊ के गला घोटने भरे को बहुत थी।

लाला अब हाय २ करके शिर पीटने लगे।

लाला को देख बीबी कुए में डूबने पर उतारू हुई अब तो लाला के होश उड़ गये पैर पकड़ के मनाने लगे।

सप्तम परिच्छेद।

लाला कुलबोरू लाल बैठे हैं सामने पुरोहितजी भी बैठे हैं अपना करार तो प्रथम ही पाचुके हैं कुछ शुकराना लेना है कि इसी समय घर से मजूरिन ने आकर कहा लाला आपकी बीबी सवेरे से गुस्सा में भरी बैठी है जो आता है उसे जानो काटे खाती है सवेरे से न कुछ खाया है न पानी पिया है यह सुनते ही

भाषत प्रदान या गनेको जेठ देवरको खसमके खानको खवीसिन सी धावती । कुलकी कुठारिनी उखारिनी कुटुम्बन को ऐसी नीच नारि ते कुलटा कहावती ॥

विवाह के कुछ ही दिन गुजरे होंगे । लाला कुल वोरूलालने बीबीसे कहा अब क्या तू कुछ भी घरका काम न करेगी बीबी ने क्रोध में हो कहा बस बुड्ढे चुप रह खबरदार जो कुछ बोला डूबजा चुल्लू भर पानी मे शरम नहीं आती नीच नहीं तो तुझे ठीक करूंगी दो व्याह कर चुके हो और औरतें सीधी पाई हैं ॥

लाला—क्योंरी तू मुझे ठीक करेगी क्या मैंने इसी सुख के लिये बुढ़ापे में व्याह किया है यह कह बड़ी जोर से डौंकता है ॥

बीबी ने कहा अरे चल लुच्चे चिल्ला २ के क्यों गला फाड़े डालता है ॥

अब लाला क्रोधकर बीबी के ऊपर झपटे बीच ही में छेदा कहार ने लाला को रोका वृद्ध तो थेही लड़खड़ा के ज़मीन पर गिरे और झार पोंछ के उठ के फिर बीबी पर गालीकी बौछार करने लगे और लगे दुहथ्थड़ छाती पीटने लाला का यह स्वाग देख

कर बीबी ने कहा देहमार सिलपर मूंह अब मक्कर दिखाता है नदी में बूड़ मर रोता क्यो है।

लाला ने कहा अरी रांड़ निकल मेरे घर से ?

बीबी–तुझे निकाल के निकलूंगी।

बीबी की सहायता पर छेदा कहार था इसीसे बीबी दुगुने बल से गर्ज कर कहती थी और यों भी वह बुढ़ऊ के गला घोटने भरे को बहुल थी।

लाला अब हाय २ करके शिर पीटने लगे।

लाला को देख बीवी कुए में डूबने पर उतारू हुई अब तो लाला के होश उड़ गये पैर पकड़ के मनाने लगे।

सप्तम परिच्छेद।

लाला कुलबोरू लाल बैठे हैं सामने पुरोहितजी भी बैठे है अपना करार तो प्रथम ही पाचुके हैं कुछ शुकराना लेना है कि इसी समय घर से मजूरिन ने आकर कहा लाला आप की बीबी सवेरे से गुस्सा में भरी बैठी है जो आता है उसे जानो काटे खाती है सवेरे से न कुछ खाया है न पानी पिया है यह सुनते ही

लाला के होश जाते रहे कहा अच्छा चलो हम आते हैं इतना कह लाला और प्रोहित जी मकान के भीतर आये देखते है कि कर्कशादेई बालों को खोले मैली धोती पहिने बैठी है क्रोध के कारण नेत्र लाल हैं लालाको और पुरोहित को देख और क्रोध में हो उतार २ गहना लाला के ऊपर फेंकने लगी और सब चूडी तोड़ के लाला के मूड़पर पटकने लगी उस समय ऐसा मालूम होता था कि मानो लाला पर पुष्प की वृष्टि हो रही है लाला ने हाथ जोड़ के कहा माफ़ करो क्रोध को दूर करो यह सुन कर्कशादेई का क्रोध और बढ़गया बोली चुप बुड्ढ फिर तेरी देह खुजलाई है ठहरजापहले इस दुष्टपुरोहित से समझलूं यह कह दातपीसती हुई पुरोहित जी पर दौड़ी और दोनों हाथों से लगी पुरोहितजी को दुहत्थड़ जमाने ले दो हजार की थैली ले दो हज़ार शुकराने में खूब धन जोड़ा है पुरोहित की चुटिया पकड़ जमीन पर घसीटती है पुरोहित हाय २ छोड़ो २ अब ऐसा काम न करूंगा दुहाई है २ फ़र्सम खवा के कर्कशादेई ने छोड़ा ।

इतने ही में एक नौकर ने कहा लाला चौबे जी आये हैं।

चौबे जी—लाला की आज्ञा की राह न देखकर भीतर पहुंचगये भलोहोय जजमान जै जमुना मैया की जै दुलहा दुलहन की जै ऊंट बदरिया की कैसी भली जोड़ी बनी है। आज तो दून चौबे को मोतीचूर के लडुआ और पेड़ा झुका चौबे बूटी के नशान मे हैं॥ लाला ने अपनी प्रशंसा सुन मुट्ठी बन्द करके दो आने पैसे दिये।

अष्टमपरिच्छेद ॥

लाला कुलबोरूलाल पलंग पर पड़े हुए करवटें ले २ कर आह भर रहे हैं पाठक आप यह जानते हैं यह आह काहे की है यह दुख भरी आह किसी चन्द्रवदनी के कटाक्ष से व्यथित हुए की नहीं है और न ये आह देश की दुर्दशा वा किसी आफत में फसे, हुये दीन मनुष्य पर दया की है॥

यह आह कर्कशादेई के हाथसे पिटनेकी है लाला की कमर और मूंड़ और घुटनियों में अत्यन्त पीड़ा है दुःख ही में पड़े २ अपने पुराने मित्रकी बात याद आती है हाय २ मैंने वृथा ही उस अपने हितैषी मित्र का अपमान किया हाय इस दुष्ट पुरोहित ने मेरे पीछे क्या बलाय लगाई खाना पीना दुशवार है इस तरह की बातें विचार लाला ने एक नौकर के द्वारा लाला किशोरीलाल को बुला भेजा लाला किशोरीलाल ने अपनी सज्जनता के कारण लाला की उन बातों का ख्याल न करके मित्र पर दुःख देख शरीक हुये।

लाला ने कहा मित्र जब दुर्दिन आते हैं तब हितकी बात कहने वाले शत्रु से मालूम होते हैं इसी कारण आप का अपमान किया था अब मुझे मालूम होता है कि मेरा समय नजदीक ही है।

किशोरीलाल ने कहा मित्र इसी भांति अक्सर लोग पछताते हैं कारण कि जो बुद्धि कार्य के पीछे दुःख भोगने पर होती है सो यदि पहिले हो तो का-हे को धोखा खाय किसी कवि ने ठीक कहा है—

करणी करे तो क्या डरे, क्यों करके पछताय।
बोये पेड़ बबूर के आम कहां से खाय ॥

इसी प्रकार अधिकतर जो विना विचारे कार्यको कर डालते हैं उनको दुःख ही उठाना पड़ता है और उन पर उन वेवाओं का कोसना पड़ता है जो विचारी वृद्ध के साथ विवाह कर उस के जीते जी दुःखी और मरे पर जीवन पर्यन्त रड़ापा भोगती हैं और जो खराब निकलती हैं वह अपने कुल का नाम उजागर करती हैं उनका आनन्द आप देख ही चुके हैं किशोरीलाल ने इसी प्रकार की बातें कहीं ॥

लाला ने कहा मित्र आप सब यथार्थ ही कहते हैं किन्तु मेरी तवियत अब बहुत सुस्त हो गई है और दिन २ क्षीण होती जाती है यदि आप की राय हो तो वैद्य व्याधिसिन्धु जी को दिखा दिया जाय किशोरीलाल जी ने कहा अच्छी बात है उसी समय नौकर जाकर वैद्यराज जी को बुला लाया।

वैद्यराज ने नब्ज देखी और पुड़िया दी किन्तु लाला को पुड़िया ने फायदा न किया वही हुआ

"मरज वढ़ता गया ज्यों २ दवा की " अन्त को लाला का अन्त का समय आपहुंचा नाड़ी ने स्थान छोड़ दिया यह देख एकाएकी वैद्यराज ने कहा लाला को जमीन पर उतारो उतारो लाला अब थोड़े हो समय के पाहुने है लाला ने नेत्र फाड़ के चारों ओर देखा अन्त में लाला कुलबोरूलाल ने जीवन लीला समाप्त की जैसे आये थे वैसे ही चल बसे केवल एक विवाह कर विधवा का पन्थ वढ़ा मुंह में कालिष लगा चल वसे ॥
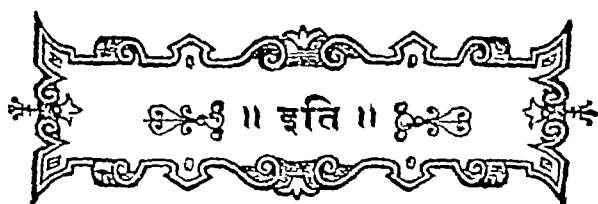
प्रस्तावना।

विज्ञानसे यह वात सिद्ध हो चुकी है कि वहुतसी विमारीया मासाहारसेही होती है। जो विमारिया विशेषकरमासाहारियोमे होती है, प्राय: वनस्पतिकी खुराक खानेवालोमें नहीं होती। इतनाही नहीं उन विमारियोका योग्य पथ्यही वनस्पति है ऐसा विद्वान् डाक्टरोंने निश्चय किया हैं। विद्वान् विज्ञानवेत्ताओंने यहवात कुछयोंही नहीं कहडाली. उन्होंने रासायनिक पृथक्करण करकरके खूब अनुभव लेलेकर इस तरहका निर्णय किया है। उसका कुछ २ ज्ञान इस छोटीसी पुस्तकके पढनेसे हो जायगा। मासाहारसे जव तन्दुरुस्तीमे वडा नुकसान पहुचता है तव वनस्पतिका आहार तन्दुरुस्तीको वडा लाभदायक है। यह सात्विक है, सुस्वादु है और किसी प्राणीके जीव लिये विना प्राप्त होता है, एवं सस्ता मिलता है सो जुदाही। वनस्पतिके आहार करनेसे मनुष्योंका स्वास्था अच्छा रहेगा और हजारो जानें कसाइयोंके छुरेसे कत्ल न होगी। इसका परिणाम यह होगा कि हमार देशकी खेतिवाडकी उन्नती होगी। घी दूध सस्ते मिलेगे और गरीव लोगभी इनका उपयोग करसकेगे। देशकी शक्ति बढेगी। और सम्पत्ति ज्यादा पैदा होगी। हमारे मनुष्य वन्धुओंको इसतरहका ज्ञान हो और वे वनस्पति आहारही करें इस उद्देशसे यह पुस्तक लिखीगई है और "जीव दया ज्ञान प्रसारक फंड" वंबईके ऑनररी मेनेजर सेट लल्लुभाई गुलावचन्दजीने विना मूल्य वाट-

देनेके लिये प्रकाशित की है। जिसे इस पुस्तककी अवश्यकता हो वह आध आनेका टिकट डाक महसूलका भेजकर मगवालेवे। सेठजी घर वैठे पुस्तक भिजवा देंगे।

इस पुस्तकके पढने वालोंसे मेरा एक निवेदन है कि यदि वे इस पुस्तकमें कुछ वढाने करनेकी सूचना देना चाहें तो अवश्य दें। अगली आवृत्तिमें उनकी सूचनाओंपर ध्यान देकर योग्य फेरफार किया जायगा.

इस पुस्तकके पढ़ने मासाहारी भाइयोंके जीपर असर हो और वे मांसाहार परित्याग करदें तो कृपाकर अपना नाम मुजे लिख भेजें। मै उनका वडाही उपकार मानूगा. अन्तमें मैं अपने हृदयकी भावना प्रकट् करता हूं कि इस पुस्तक लिखने और प्रकाशित करनेका परिश्रम सफल हो, जिससे मासाहारी प्रजा फलाहारी हो जाय। वह अनेक दुखदर्दोसे बचे और प्राणियोकी जीवरक्षा हो।

श्री जीव दया ज्ञान प्रसारक फड आफिस,
३०९, सर्राफ बजार,
बंबई, नं. २.

छगनलाल वि॰ परमानन्द दास नाणावटी
आसि. मै. श्री. जी. द. ज्ञा. प्र. फड, बंबई.

कॅप्टन गोर्ड इ. डायमन्ड उसका वर्णन पृष्ठ २६ पर लेखा है।
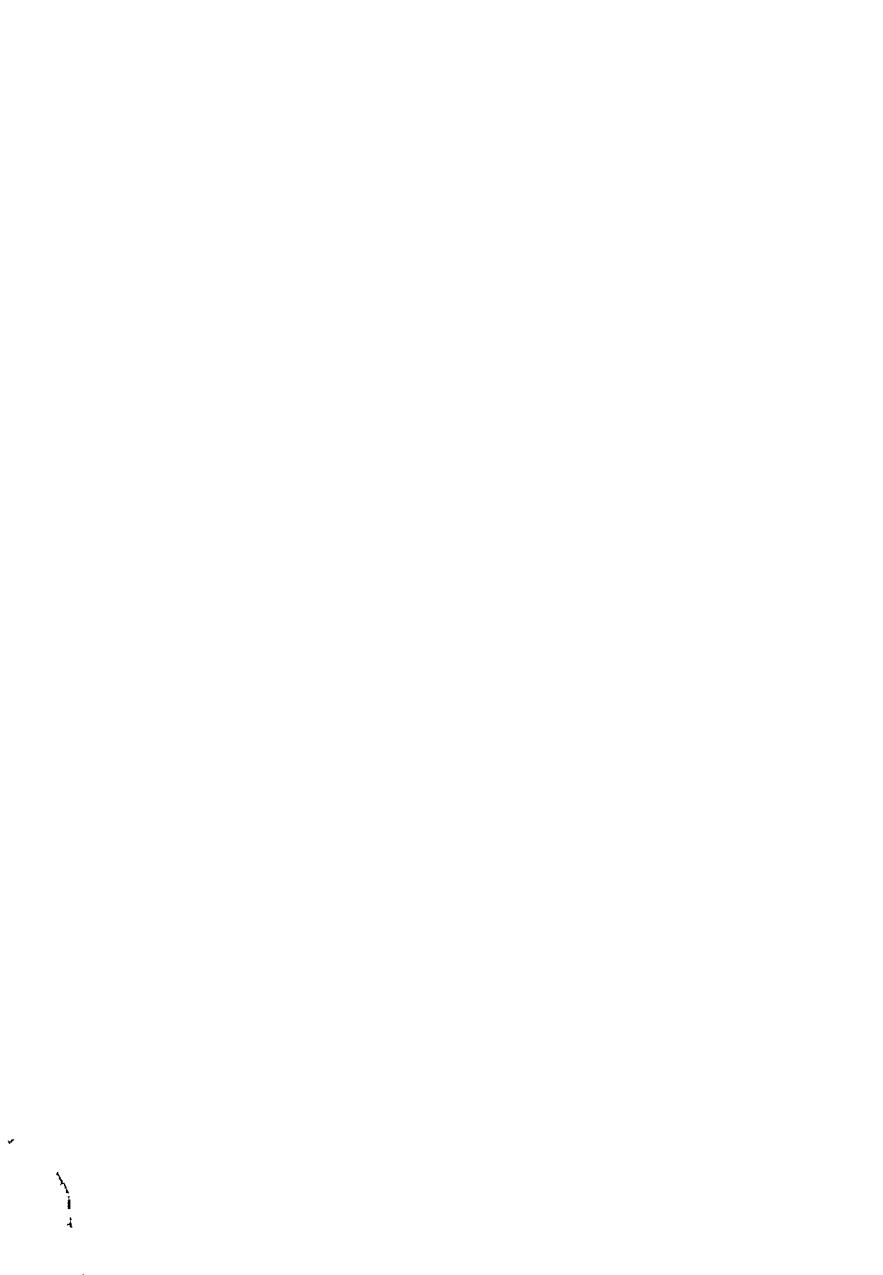
समर्पण

अझीमगजके नामदार राजा साहेब विजय सिंहजी वहादुर हझुर

मु. असीमगज (बगाले.)

नामदार साहेब,

जीव दया के लिये भातिभांतिकी तरकीवें निकालकर आपने आपनी कीर्तिको फैला रक्वा है। जीवदयाका आन्दोलन करनेवाले आप नामदार एक उत्साही महापुरुष हैं। आपने आपने उत्तम स्वभावके अनुकूल इस फडके कायम करनेमें मेरी वडीही सहायताकी है। आप इस फडके उत्तम सम्यति दाता हैं। आपके सद्गुणोंसे मोहित होकर यह पुस्तक आपकेही नामसे सुशोभित करता हू। और आपकोही समर्पित करता हू। आशा है कि आप इसे स्वीकार करके मुझपर कियेहुए उपकारोमें वृद्धि करेंगे। जीवदयाके उत्तमोत्तम कामोके शुभ फल देखनेके लिये, परमदयालु परमात्मा आप नामदारको दीर्घायु: करे; आप सवतरह सुखी हों और आप नामदारकी सम्पत्ति दिनइनी रात चौगुनी वढे: यही इस जनकी परमकृपाळु, परमात्मासे नम्र प्रार्थना है।

विनीत सेवक

२०९ सर्राफ वाजार,	लल्लुभाई गुलावचंद झवेरी,
वबई न. २	ऑन. मैनेजर.
श्री. जी. द. ज्ञा. प्र. फंड.	

निवेदन.

श्री जीव दया ज्ञान प्रसारक फंडको कायम किये अभी हमें बहुत साल नही गुजरे । हमने उसे सन १९१० मेंही कायम किया है । इस तीनही सालके भीतर इसकी बहुत प्रसिद्धि होगई है–इतनी कि जिसका खियालभी नहीं किया गया था । सारे हिन्दुस्थानमें इसका नाम फैल गया है । रा. रा छगनलाल वि परमानन्ददासजीके परिश्रमसे मांसाहारके विरुद्ध और वनस्पति आहारके पक्षमे वैद्यकके सिद्धान्तोको प्रकट करनेवाली पुस्तक तैयार हुई । उसकी ५०,००० पचास हजार प्रतिया (दो आवृत्तियोमे) निकल चुकी हैं । अभीतक उसकी मार्गे आरही है । हमारा इरादा था कि उसकी तीसरी आवृत्ति निकाले परन्तु यह सोचकर कि उस पुस्तकका काफी फैलाव हो चुका, व दुनियाके देखनेमे कुछ नई नई बातें और आवें तो अच्छाः ऐसा होनेसे दुनियाको ज्यादा लाभ होगा, हमने रा रा छगनलालजीसे यह पुस्तक लिखवाई है। इसमें बहुत कुछ बढाया गया है, बहुत कुछ सुधार किया गया है और वहभी इस लिये कि मनुष्य सत्यका पक्ष ग्रहण कर वनस्पतिका आहार करे.

यह फंड इस बातकी कोशिश करता है कि हिन्दुस्तान भरमें मांसाहार होना बंद हो जाय। ऐसे बडे कामके लिये धनकी बडी जुरूरत है। यह फंड दया और धर्मके विचारोंको दूर रख वैद्यक और विज्ञान–यानी डाक्टरी और साइंसके सिद्धान्तोंसे मांसाहारको हानिकारक सिद्ध करनेका यत्न करता है। लंडनके धी ऑर्डर ऑफ धी गोल्डन एज और रा. रा. लाभ शंकर लक्ष्मीदासजीकी सहायतासे यह फंड दुनियाके सन्मुख नये नये सिद्धान्तोंको रखनेमें समर्थ हुआ है। अतएव ये धन्यवादके पात्र हैं।

इस फंडने जो पुस्तक पहले गुजराती भाषामें प्रकाशित कीथी वह नीचे लिखे हुए पत्रोंके पास समालोचनाके लिये भेजी गईथी, इन्होंने उसे बहुतही पसन्द किया। उसपर अच्छी समालोचना लिखी। इतनाही नहीं, लोकोपकारके विचारसे बिना बंटवाई का खर्चा (Distributing charges) लिये अपने ग्रहकोंके पास भेज दी और हमसे डाक महसूलतक नहीं लिया। इस कृपाके लिये हम इनके कृतज्ञ हैं।

१ गुजराती पंच.
२ प्रजाबंधु
३ पटेलबंधु
४ विविध ग्रंथमाला (सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय

५ वैद्य कल्पतरु.
६ सत्सग.
७ कृषिविजय.
८ काठियावाड टाइम्स.
९ सयाजी विजय.
१० नागर विजय.
११ जैन समाचार.
१२ फशोगर्द.
१३ दिगम्बर जैन
१४ चिराग.

इस तरहकी पुस्तक अभीतक फडने गुजरातीमेंही प्रकट की है। परन्तु उसे अनुभवसे मालूम हुआ है कि ऐसी पुस्तकोंकी मांगसिर्फ गुजराती जाननेवालोंकी ही नहीं है; हिन्दी, उर्दू, मराठी, अंग्रेजी आदि भाषा जानने वालोकी भी है। वे भी उन २ भाषाओंके जानने वालेंमें ऐसी पुस्तकोंका प्रचार किया जाना अच्छा समझते हैं। फडभी इस बातको उचित समझता है कि ऐसा होना ठीक है परन्तु फंडकी आर्थिकि स्थिति ऐसी नहीं है कि वह ऐसा करसके। अगर कोई दयालु सद्गृहस्थ इस कामको अपने सिरपर उठाना चाहता हो तो मेरी प्रार्थना है कि वह इस कामको आनन्दसे करे और यदि कोई हमें सहायता देना चाहे तो हमे सहायता दें हम धन्यवाद पूर्वक उनकी सहायताका उल्लेख पुस्तककी भूमिकामें करेंगे। अतएव धनवान दानी सज्जनोंसे मेरी नम्र प्रार्थना है कि वे इस फडको यथायोग्य सहायता देकर पुण्यके भागी बनें।

वनस्पतिके आहारके पक्षमें दुनियाका ध्यान आकर्पित हो, कसाईके छुरोंसे जानवरोंके कठ न कटें, मासाहारी वन्धु अनेक विमारियोंके पजोंसे वच जॉय, देशकी खेती वाडीका विकास हो, घी दूध सस्ता मिले और सक्षेपमे वात यहकि सोर हिंदुस्थानकी सुख-सम्पत्ति वढे, इस विचारसे यह पुस्तक तैयार की गई है और लोगोमे मुफ्त वाट देनेके लिये रतलामवाले महाशय शेठ भूधरजी झवेरचदकी पेढीवाले शेठ रतनलालजीने यहि पुस्तककी १५,००० प्रतिया छपवाइ है. सवव यह फड इस सज्जनका उपकार प्रदर्शित करनेमे मगरुर हुवा है, और १०,००० प्रतिया छपानेका खर्च फडमेसी दे कर कुल २५,००० प्रतिकि यह आवृति प्रकाशित की गई है। यहापर श्री गिरीधरशर्मा, झालारा, पट्टनवालेने यह पुस्तकका गुजराती भाषामे हिंदिमे भाषातर करनेका पडित मि० तीकमचद एल. जैनीकी हमारी तर्फकी विज्ञप्तिसे जो श्रम उठाया है इसके लीये मे यो दोनु सज्जनोका उपकृत हुवा हु.

श्री जीव दया ज्ञान प्रसारक फंड ऑफिस,
३०९, सर्राफ वजार.
ववई, न २.

लल्लुभाई गुलावचंद झवेरी,
ऑनेररी मेनेजर,
श्री. जी द ज्ञा प्र. फड, ववई.

मनुष्यके योग्य कुदरती खुराक.

खुराक बडीही उपयोगी और आवश्यक चीज है। क्या राजा और क्या रक खुराककी आवश्यकता सभीको होती है! जैसे कोयलेकी आवश्यकता इजनको होती है वैसेही खुराककी आवश्यकता देहको होती है। खुराक योग्य होती है तो शरीर तेजस्वी और शक्तिवाला होता है और खुराक सृष्टिक्रमसे विरुद्ध होती है तो शरीरकी ठीक हालत नहीं रहती, इतनाही नहीं, उलटे भयकर परिणाम निकलते हैं। जैसे:-रेल, स्टीमर, मिल, आदिके यन्त्रोंको चलानेके लिये अमुक प्रकारके कोयलोंकी खास आवश्यकता होती है। यदि वहापर कोयलोंको जगह लकडिया डाल दी जाय तो परिणाम क्या होगा? होगा यही कि काम सिद्ध न होकर यंत्र बिगडेंगे। औरभी देखिए कितनेही लालटेन ऐसे होते हैं कि जिनमें खोपरेका तेल जलाया जाता है। यदि इनमें खोपरेका तेल न जलाकर घासलेटका तेल जलायगे तो ये लालटेन वहुत कम समयतक काम देंगे और अन्तमें सर्वथा खराब हो जांयगे। स्टाव नामके चूल्हेका आजकल खूब उपयोग होता है। उसके बर्नरको स्पिरिटसे गरम किया जाता है। यदि कोई स्पिरिटसे गरम न कर उसे घासलेटके तेलसे गरम करेगा तो वह कुछ अर्से तक काम तो देगा परन्तु जल्दी खराब हो जायगा। इन सांधेसाधे उदाहरणोंसे यह बात साफ हो जाती है कि जिसके लिये जैसी खुराक चाहिए वैसीही उसे दी जानी चाहिए।

जैसे इन निर्जीव यन्त्रोंके लिये योग्य खुराककी आवश्यकता है वैसेही सजीव यन्त्रोंके लियेभी, जीवनको अच्छी तरह कायम रखनेके लिये, योग्य खुराककी पूरी पूरी आवश्यकता है। यह सिद्धान्त अवश्य माननीय है। श्वास लेते हुए प्राणीः—मनुष्य, हाथी, घोडे, गाय, बैल, कुत्ते, बिल्ली, सेर, बघेरा, पशुपछी वगैराके लियेभी योग्य खुराककी आवश्यकता है। परम कृपालु परमात्माने जो प्रकृतिने जिसे जैसी चाहिए वैसीही खुराक उसकेलिये मुकर्रर कर दी है। हम बारीकीके साथ देखेंगे तो हमें मालूम होगा कि हाथी, घोडे, गाय, बैल, वगैरा प्राणी केवल वनस्पतिकी खुराक पर आपना जीवन व्यतीत करते हैं। कुत्ते, सेर, बघेरे, वगैरा और कितनेही पशु पक्षी, मुख्यकर मासपर आपना गुजरान चला सकते हैं। क्योंकि कुदरतने दोनों प्रकारके प्राणियोंकी शरीर-रचनाही ऐसी बनाई है। घोडे वगैरा जानवर—जिनका निर्वाह मुख्य कर वनसपति परही हो सकता है—उनके शरीरकी रचनाही ऐसी है कि वे वनस्पतिकेही आहारको आसानीसे पचासकें। परन्तु मासाहारी जानवरोंको कुदरतने ऐसे बनाये हैं कि वे बिना किसी हथियारकी सहायता के आपनी खुराक इकट्ठी करसकते है। उनके नाखून और दात ऐसे बने हुए हैं कि वे प्राणियोंको चट कर डालें। इन प्राणियोंमें ताकत ज्यादा होती है यह बात नहीं हैं परन्तु वह ताकत व्यर्थकी तामसी होती है। वनस्पतिके खानेवालोंमें गम्भीरता, और सात्त्विकवृत्ति विशेष दृढ होती है परन्तु मासाहा

ये बात नहीं पाईजाती। मासाहारी प्राणियोंकी अपेक्षा गाय, बैल, घोडे, भैंस, बकरी, आदि वनस्पतिके खाने वाले प्राणी विशेष लोकोपयोगी हैं। और सहनशीलभी हैं। मनुष्य समाजकी सेवा करनेवाले और विशेष उपयोगी प्राणी वनस्पतिके आहार करनेवाले दीपाये गये है।

मनुष्यजीवन बडा उपयोगी है। उसका आस्तित्व कायम रखनेकोलिये शुद्ध, सात्विक और उपयोगी खुराककी खास जुरूरत है। मनुष्यके शरीरकी रचना किसतरहकी खुराक लेनेके अनुकूल है, हम इस बातका सूक्ष्म दृष्टिसे अवलोकन करें। मनुष्य जातिके अनेक भाइ वनस्पतिके साथही मासकाभी उपयोग करते हैं, परन्तु इससे उनकी तन्दुरुस्ती बिगडती है। और वे बडे बडे भयंकर रोगोंके पंजोंमें फसते है। इस बातको कुछ मैही नहीं कहता, बडे बडे विद्वान् डाक्तर–जिन्होंने साइस अर्थात विज्ञानशास्त्रको छान डाला, वनस्पति और मांसका पृथक्करण कर अनेक तत्त्व निकाले–यही बात कहते हैं और वेधडक होकर कहते है कि मांसाहार मनुष्यकी तन्दुरुस्तीको खराब करता है। विद्वान् विज्ञानशास्त्रियोंने यह बात सिद्ध कर दिखाई है कि मासाहार गरमी और शक्ति देने वाला है ही नहीं। जो दुनिया इससे ऐसा मानती है यह भूल करती है। मांसाहार शरीरको पुष्टि नहीं देता, शक्ति नहीं देता, बल्कि रोगका घर बना देता है और कष्ट पहुंचाता है।

विलायतमें एक प्रसिद्ध विद्वान डाक्तर है। उनका नाम है मिस्टर जोनवुड। वे एम डी. भी है। उन्होंने अपनी खोजका परिणाम लंडनके सुप्रसिद्ध पत्र The Herald of The Golden Age के नवम्बर १९०३ के अंकमें प्रसिद्ध किया है और उसमें सिद्ध करते हुए कहा है की

I maintain that flesh eating is unnecessary unnatural and unwholesome मैं दावाकी साथ जाहेर करता हु के मांसभक्षणकरना निरुपयोगी कुदरतके विरुद्ध और रोगोंके उत्पन्न करनेवाला है। मांसाहारकेलिये जब विज्ञानशास्त्री ऐसी राय देते है तब यही जान पडता है कि मानव शरीरकी रचना इस खुराकके प्रतिकूलही है। अब हम इस विषयमें एक के बाद दूसरा सिद्धान्त लेते हुए "सत्य क्या है"? इस बातका निर्णय करेंगे।

मानव मांसाहारके लिये हुआ है या नहीं इस बातका विचार करनेके लिये पहले हम शरीरकी बाह्य रचनापर ध्यान देते है। इस बातका विचार करनेके लिये हमें शरीरतारतम्यशास्त्र-अर्थात् कम्प्रेटिव एनाटोमी (Comparative anatomy) पर निगाह डालनी चाहिए। मशहूर प्रोफेसर बारनक्यूवीअर कहता है कीः—

Comparative anatomy teaches us that man resembles the frugivorous animals in every thing and carnivorous in nothing

The orang-outang perfectly resembles man, the order and in the number of his teeth

The orang-outang is the most anthropomorphic (manlike) of the ape tribe, all of whom are strictly frugivorous.

(Sd) PROF. BARON CUVIER,

Lacond, anatomie comprative.

अग प्राणियोके शारिरिक तारतम्य देखनेसे जान पडता है कि मनुष्य फलाहारी प्राणियोसें हरेक प्रकारसे मिलता झुलता है और मासाहारियोंसे किसीतरहसी नहीं मिलता * * *

ओरेंग उटेंगके दांत उनकी व्यवस्था और गिनती मनुष्यके दांतोंसे पूरीपूरी मिलती है * *

ओरेंग उटेंग एक जातिका बन्दा है वह फलाहारी है और मनुष्यसे बिल्कुल मिलता झुलता है.

(सही) प्रोफेसर बारन क्यूवीअर

लेकोंड एनाटोमी कम्प्रेटिव.

ओरेंग उटेंग और मनुष्योके दातोका मुकाबला करके विज्ञानशास्त्रने यह सिद्ध कर दिया है कि मनुष्य ओरेंग उटेगसे मिलता झुलता प्राणी है। ओरेग उटेग वनस्पतिका आहार करता है। मनुष्य विकासपाया हुआ ओरेंग उटेग ही है। क्या विकास कायह फल होना चाहिए कि मनुष्य पीछा हटे। यह तो सृष्टिक्रमके विरुद्ध बात है। यह मेरा कहना तर्कशास्त्रके

विरुद्ध नहीं है। विकासपाई हुई मनुष्य जातिका तो स्वाभाविक आहार फलहीं होना चाहिए।

मनुष्य जातिको योग्य खुराक क्या है इसका निर्णय करनेका काम मनुष्योंकाही है। जिस खुराकसे तन्दुरुस्ती, वीर्य, उच्च वृत्तिया और सच्ची सज्जनता कायम रक्खी जासकें, जो खुराक गृहप्रबन्ध शास्त्रकी दृष्टिसे सस्ती और खूब फायदा करनेवाली हो और जिस खुराकके प्राप्त करनेमें किसीभी प्राणीकी प्यारी जानको कुछभी तकलीफ न हो वही खुराक मेरी रायमें प्रत्येक मनुष्यके लिये ठीक है। आशा है कि प्रत्येक विचारशील मनुष्य इस बातका अनुमोदन करेंगे।

जितने विवेकी पुरुष हैं उनका सभीका प्राय ऐसाही विचार है कि मांसाहार मनुष्यके लिये नही हैं। मांसाहार करनेसे मनुष्य कुदरतके नियमको तोडता है और इसके फलसे अनेक बीमारियोंका दुःख भुगतता है। इसके उदाहरण फिर देंगे। यहांपर हम पहले इस बातको प्रमाणित करते हैं कि मिस्टर जानवुड एम डी ने जो मांसाहारको निरुपयोगी कुदरतके विरुद्ध और रोगोंको पैदा करनेवाला बतलाया है सो ठीकही बतलाया है। इनमेंसेभी हम पहले इस बातको बतलाते हैं कि वह निरुपयोगी क्यों है? जो खुराक कुदरतके विरुद्ध और रोगोत्पादक हो वह निरुपयोगी नहीं है तो और क्या है। जिससे कोई लाभ न हो और

The orang-outang is the most anthropomorphic (manlike) of the ape tribe, all of whom are strictly frugivorous.

(Sd) PROF BARON CUVIER,
Lacond, anatomie comprative

अग प्राणियोके शारिरिक तारतम्य देखनेसे जान पडता है कि मनुष्य फलाहारी प्राणियोसें हरेक प्रकारसे मिलता जुलता है और मांसाहारियोंसे किसीतरहसी नहीं मिलता * * *

ओरेंग उटेगके दात उनकी व्यवस्था और गिनती मनुष्यके दातोसे पूरीपूरी मिलती है * *

ओरेंग उटेंग एक जातिका बन्दा है वह फलाहारी है और मनुष्यसे बिल्कुल मिलता जुलता है.

(सही) प्रोफेसर बारन क्यूविअर
लेकोंड एनाटोमी कम्प्रेटिव.

ओरेंग उटेंग और मनुष्योंके दातोका मुकाबला करके विज्ञानशास्त्रने यह सिद्ध कर दिया है कि मनुष्य ओरेंग उटेगसे मिलता जुलता प्राणी है। ओरेग उटेग वनस्पतिका आहार करता है। मनुष्य विकासपाया हुआ ओरेंग उटेंग ही है। क्या विकास कायह फल होना चाहिए कि मनुष्य पीछा हटे। यह तो सृष्टिक्रमके विरुद्ध बात है। यह मेरा कहना कुछ तर्कशास्त्रके

विरुद्ध नहीं है। विकासपाई हुई मनुष्य जातिका तो स्वाभाविक आहार फलहीं होना चाहिए।

मनुष्य जातिकी योग्य खुराक क्या है इसका निर्णय करनेका काम मनुष्योंकाही है। जिस खुराकसे तन्दुरुस्ती, वीर्य, उच्च वृत्तिया और सच्ची सज्जनता कायम रक्खी जासकें, जो खुराक गृहप्रबन्ध शास्त्रकी दृष्टिसे सस्ती और खूब फायदा करनेवाली हो और जिस खुराकके प्राप्त करनेमें किसीभी प्राणीकी प्यारी जानको कुछभी तकलीफ न हो वही खुराक मेरी रायमें प्रत्येक मनुष्यके लिये ठीक है। आशा है कि प्रत्येक विचारशील मनुष्य इस बातका अनुमोदन करेंगे।

जितने विवेकी पुरुष हैं उनका सभीका प्रायः ऐसाही विचार है कि मासाहार मनुष्यके लिये नही हैं। मासाहार करनेसे मनुष्य कुदरतके नियमको तोडता है और इसके फलमें अनेक बीमारियोंका दड भुगतता है। इसके उदाहरण फिर देगे। यहापर हम पहले इस बातको प्रमाणित करते है कि मिस्टर जानवुड एम डी ने जो मासाहारको निरुपयोगी कुदरतके विरुद्ध और रोगोंको पैदा करनेवाला बतलाया है सो ठीकही बतलाया है। इसमेंसेभी हम पहले इस बातको बतलाते हैं कि वह निरुपयोगी क्यों है? जो खुराक कुदरतके विरुद्ध और रोगोत्पादक हो वह निरुपयोगी नहीं है तो और क्या है। जिससे कोई लाभ न हो और

जिसके सम्पादन करनेमें व्ययभी अधिक पडे यदि वही खुराक निरुपयोगी नहीं तो और कौनसी खुराक निरुपयोगी होगी। अब हम यह देखते हैं कि मासाहार कुदरतके खिलाफ है या नहीं:—

"The teeth of man have not the smallest resemblence to those of the carnivorous animals, except that their enamal is confined to the external surface. He possesses indeed, teeth called canine, but they do not exceed the level of the others, and are obviously unsuited to the purposes which the corres ponding teeth execute incarnivorous animals. In the proper carnivorous animals the alimantary canal is very short and thus we find, that whether we consider the teeth and Jaws or the immediate instruments of degestion the human structure closely resembless of the smiae (apes), all of which in their natural state, are completely herbivorous"

(Sd) PROF WILLIAM LAWRENCE F R S

Professor of Anatomy and surgery to the Royal college of surgeons

अर्थात् मनुष्यके दात जिस ओरसे देख पडते है उस औरकी चमकके सिवाय मासाहारी प्राणियांके दातांसे बिल्कुल नहीं मिलते। यह सच है कि मनुष्यकेभी दात हैं परन्तु वे और दातोंसे समानतामें अलहदा नहीं हो जाते। मासाहारी प्राणि-योंके दात जो काम करसकते हैं मनुष्यके दात उस कामके

करने योग्य नहीं है। केवल मासाहार करनेवाले प्राणियोंकी "एली मेन्टरी कनल" बहुत छोटी होती है। दात और जबडियोंको देखिएगा या पाचन शक्तिके यत्रोका विचार करियेगा तो सहजमे मालूम हो जायगा कि मनुष्यका आन्तरिक शरीर बिल्कुल बन्दरके शरीरसे मिलता है और वह वनस्पतिके आहार करनेवाला प्राणी है।

(सही) प्रोफेसर विलियम लॅारेन्स
प्रोफेसर अनाटोमी एंड सर्जरी टू दि
रायल कालेज आफ सर्जन्स.

"It is I think, not going too far to say that every fact connected with the human organization goes to prove that man was originally formed a frugivorous animal. This opinion is derived principally from the farmation of his teeth and digestive organs, as well as from the character of his skin and the general structure of his limbs"

(Sd.) PROF SIR CHARLES BELL F R S
Anatomy Physiology and Diseases of teeth

"मै खयाल करताहु कि मनुष्य शरीरकी रचना इस बातको पुकार पुकारकर कह रही है कि मनुष्य वास्तवमें फलाहारी प्राणी है। इस बातमें कुछ अतिशयोक्ति नहीं है। मेरी यह

सम्मति, मनुष्यके दांत, मनुष्यका पाचन यंत्र (होजरी) मनुष्यकी त्वचा और मनुष्यकी साधारण शरीरकी कांठीके देखनेसे मुख्यतया हुई है।

(सही) प्रोफेसर सर चार्ल्स बेल अनाटमी, फिजियालाजी, एंड डिजीज आफ दी टीथ.

"The body of man and that of the anthropoids are not only particularly similar" says Haeckel, "but they are practically one and the same in every important respect The same 200 bones in the same order and structure, make up our inner skeletons, the same 300 muscles affect our movements, the same hair clothes our skins, the same four-chambered heart is the central pulsometer in our circulation, the same 32 teeth are set in the same order in our Jaws, the same salivary, hepatic and gastric glands compass our degetion, the same reproductive organs ensure the maintenance of our race"

(Sd) PROF. J HOWARD MOOR

Chicago university

अर्थात्:-हेकल कहता है कि मनुष्य और बन्दरका शरीर बहुत मिलाता है। इतनाही क्यों विज्ञान इस बातको सिद्ध करता

है कि ये दोनों एक ही श्रेणीके प्राणी है। मनुष्यमें और बन्दरोमें, शरीरके भीतर २०० हड्डिया एकही तरकीबसे आई हैं। ३०० नसें एकसाही है। त्वचापर रोमावली एकसा आती है। चौखूटा दिल जिसमें होकर नाडियोंमें रक्तका प्रवाह होता रहता है बन्दर-कीतरहही मध्य भागमें आयाहुआ है। जबाडिया बन्दरकी जैसी ही है और बत्तीसों दात उसी तरकी बसे हैं जैसे बन्दरके होते हैं। प्रजोत्पादक अवयव–जिनसेकि मनुष्यजाति अस्तित्वमें रहती है–वैसेही हैं

(सही) प्रोफेसर जे. हावर्ड मूर

चिकागो यूनीवर्सिटी.

It has been truly said that man is frugivorous All the details of his intestinal canal, and above all, his dentition, prove it in the most dicided manner

(Sd) DR F A POUCHET

अर्थात्'–यह बात सच्ची ही कही गई है कि मनुष्य फलाहारी है। उसकी अतडियोंकी वारीकीके साथ देखभील करनेसे और इन सबके सिवाय उसके दातोकी रचनासे साफ तोरपर ऊपर कही हुई बात सिद्ध हो जाती है।

डाक्टर एफ. ए. पौचेठ.

ऊपर मासाहारी प्राणी और मनुष्यके अवयवोका मुकाबला करके यह सिद्ध किया गया है कि मनुष्य फलाहारी है। इस जगह पर कोई प्रश्न करेगा कि मनुष्य केभी खूटे वडाढें यानी राक्षसी दात (Canine teeth) होते हैं फिर वह मासाहारी क्यो नहीं माना जाय परन्तु मुझे इस बन्धुसे कहना है कि मनुष्यके खूटे वडाढें वस्तुके अछी तरह टुकडे करने व पीसनेके लिये है। हम इन दातोसे किसी चीजको चीज फाड नहीं सकते। परन्तु मासाहारी प्राणी जिनके ये राक्षसी दात होते हैं वे इनके जरियेसे विना किसी शस्त्रकी सहायताके और जानवरोंके मासको फाड तोड सकते है। राक्षसी दात यह नाम उन्हींके दातोंके लिये ठीक मोजू है, मनुष्यके दातोंके लिये नहीं; क्योंकि मनुष्य विना किसी हाथियारकी मदद्के किसी जानवरकों काटकूट कर नहीं खा सकता। मनुष्यके दातोकों-खूटे व डाढोकों मासाहारके लिये वतलानेवाले मनुष्य भूल-करते हैं। प्रोफेसर विलियम लारेंस एफ. आर एस ने एडीनवर्गमें विद्वानोंकी सभा हुईथी उसमे-शारीरिक तारतम्य शास्त्रपर व्याख्यान देते हुए दातोका मुकाबला किया था और वैसाही सिद्धान्त किया था जैसा कि हमने ऊपर वयान किया है.

मिस्टर त्रिभुवनदास लहरचन्द शाह एल. एम् एड एस ने ·क पुस्तक लिखी है। उसका नाम है "वनस्पति आहारथी थता ·५ अने मासाहारथी थता गैर फायदा"। यह पुस्तक गुज-·ीमें है। और जीव दया ज्ञान प्रसारक फडसे ५०,०० कापियां

छापवाकर प्रसिद्ध की गई है। इस पुस्तकमें दातोंका मुकावला तो किया दी गया है परन्तु इसके सिवाय यहभी वतलाया गया है कि मासाहारियोंके दातोंमें कैसे दुख दरद हो जाते है। इस पुस्तकका लेखक कहता है कि :—

प्रकृतिने मनुष्यके दात कैसे बनाये है यदि इस वातका विचार हम करें और सूक्ष्म दृष्टिसे करें तो यह वात अच्छी तरह सिद्ध की जासकती है कि हमारे दात चीरफाडकर खाये जानीवाली खुराककी अपेक्षा चवाचवाकर खाइ जा सके ऐसी खुराकके योग्य वने हुए है। हम खुराक खानेमें कुदरतको जितनी दूर करेंगे उतनोही हमें तकलीफ उठानी होगी। मासाहारियोंके दात इसी लिये दूधसे सफेद न होकर पीले हो जाते हैं। उनमें दुर्गन्ध आने लगती है वेढीले हो जाते हैं। वे नीचेकी ओरसे सड जाते हैं। ऐसे लोगोंको बनावटी दात पहननेकी आवश्यकता जल्दी पडती है। फलाहारी मनुष्य कठिन वस्तुको जितनी आसानीसे चवा सकता है। (जैसे साढेको दातोसे ही छीलकर चवाना) मांसाहारी नहीं चवा सकता। अमेरिका एक मासाहारी देश है वहापर छोटी छोटी अवस्थामें कृत्रिम दातोका उपयोग होने लगा है। वहापर दातोंको साफ रखने और मजवूत करनेके लिये हजारों क्या, लाखों स्पेसिफिक (Specific) वाजारोंमें विकते है। इससे क्या सिद्ध होता है ? यहीन कि यह प्रकृतिके विरुद्ध आचरण करनेकी दड है। औरभी सोचिए दातोंके निर्वल हो जातेसे

खानेकी वहलज्जुत–भोजनका वह स्वाद नहीं रहता, मासाहारी ऐसे मजेसे जल्दी ही हाथ धो बैठते हैं। जब भोजनमे अच्छा आनन्द नहीं आता अर्थात् भोजन स्वाद लेते हुए अच्छी तरह चबारकर नहीं कियाजाता तब वह अच्छी तरह पचता नहीं है और भोजनके न पचनेसे शरीर बिमारियोका घर होजाता है। चरबी बढ जाती है, कब्ज़ हो जाता है दस्त लग जाते है और मातिमातिकी उदरव्याधिया हो जाती है।

जैसे दातोके कारण हाजरी और पेटके दर्द होते है वैसेही गलेकी बीमारियाभी हो जाती हैं। अतएव मासाहारी मनुष्योमें गलेके और कागलेके जैसे दुख दर्द देखेजाते है वैसे फलाहारियोमे नहीं। ये बीमारिया जैसी यूरोपियन प्रजामे होती है ऐसी हिन्दू प्रजामे नहीं होतीं।"

इन बातोंसे सिद्ध होता है कि मांसाहार अनावश्यक है और सृष्टिक्रमकेभी विरुद्ध है। सृष्टिक्रमके विरुद्ध खुराक खानेसे उसका परिणाम क्या होता है? इस विषयमें डाक्टर जोसिया ओल्ड फील्ड डी. सी. एल., एम. ए., एम. आर. सी एस., एल. आर. सी. पी. कीराय यह है:—

"Flesh is unnatural food and therefore tends to create functional disturbances As it is taken in modern civilization it is affected with such terrible diseases (readily communicable to man), as Cancer, Consumption, Fever, Intestinal Worms &c., to an

enormous extent There is little need of wonder that flesh eating is one of the most serious cause of the diseases that carry of ninety nine out of every hundred people that are born"

DR JOSIAH OLD FIELD D C L, M A,
M R C S, L R C P
(Senior Physician Lady Margaret,
Hospital, Bromley)

अर्थात्ः—मास सृष्टिक्रमके विरुद्ध खुराक है। इसीसे इसके खानेसे शरीरके भागोंमें कितनहिी बीमारीया हो जाती हैं। इस सभ्यताके समयमें वह खायाजाता है। इससे मनुष्योंको नासूर, क्षय, ज्वर और अतडीकी भयकर बीमारिया हो जाती हैं। सृष्टिमें पैदा होते हुए १०० मनुष्योंमेंसे ९९ मनुष्य मासाहारसे होती हुई बीमारीसे मरते हैं!!! यह कुछ अचभेकी बात नहीं है।

डा० जोसिया ओल्डफील्ड डी. सी. एल., एम. ए., एम. आर. सी. एस., एल., आर. सी. पी.
(सीनियर फीजीशियन लेडी मार्ग्रेट हास्पिटल ब्रामली.)

I was contending that from the confirmation of our teeth we do not appear to be adapted by Nature to the use of a flesh diet, since all animals whom Nature has formed to feed on flesh have their teeth long,

conical, sharp, uneven and with intervals between them—of which kind are lions, tigers, wolves, dogs, cats, and others. But those who are made to subsist only on herbs and fruit have their teeth short, blunt, close to one another, and distributed in even rows

PROF PIERRE GASSENDI.

मेरे दातोंकी रचना मेरे मनके साथ प्रति दिन शास्त्रार्थ करतीथी कि कुदरतने हमें मासाहारकेलिये नहीं बनाया है। क्योंकि कुदरतने जिन प्राणियोंको मांसाहारी बनाया है। उनके दात लम्बे, तीखे, नोकवाले, शंकुके आकारसे और छेटीवाले बनाये है। सेर, चीता, बघेरा, कुत्ता, बिल्ली, जो मास खानेवाले प्राणी है, उनके दात ऐसेही है। परन्तु जो प्राणी शाकभाजी फलफूल पर गुजरान करनेवाले है उनके दात छोटे, बेनोकवाले, पासपास मिडे हुए और एक पंक्तिमे जमे हुए होते है।

प्रोफेसर पीअर गेसेंडी.

मांसाहार कुदरतके खिलाफ है इस विषयमें हमने विद्वानोकी राये ऊपर लिखदी। औरभी बहुतसे विद्वानोकी ऐसीही राये हैं। हम उन्हें यहां देकर पढनेवालोको कष्ट देना नहीं चाहते। अब हम यह बतलाना चाहते है कि मांसाहारियोंसे फलाहारी आरोग्य, ज्ञान और अन्यान्य शक्तियोंमे कम नहीं होते। परन्तु इस बातके पहले जोरके साथ इस बातको हम फिर लिखे देते है

कि मासाहार सृष्टिक्रमसे विरुद्ध (unnatural) है और अनावश्यक (unnecessary) है, अतएव समझदार मनुष्योंके छोड देने लायक है।

मासाहार सृष्टिक्रमके विरुद्ध है यह वात हमारे इस मुकावला करने परभी जो पढनेवाले सज्जनोंके हृदयमे न जमती हो तो उन्हें थोडेसे सफे आगे चलकर पढनेपर मालूम होजायगा कि यह वात सही है। इतनाही क्यों मासाहार करनेवालोंकी अपेक्षा फलाहारी कितनेही विकट कामोंको कर सकते हैं और भयकर रोगोंके पजोंमें नहीं फसते।

मासाहारकी अपेक्षा फलाहारमें शारीरिक और मानसिक शक्ति-योंके विकास करनेका विशेष गुण है।

कितनेही लोग इस खियालके है कि मासाहारसे मनुष्यका शरीर जोरावर होता है और मनुष्यमें काम करनेकी ताकत वढती है। ये लोग केवल शारीरिक शक्तिकेलिये ही नही कहते वल्कि मानसिक शक्तिके वढनेकाभी केहत हैं क्यौकि दिमागी ताकत वढनेका आधार शरीरकी तन्दुरुस्तीपर निर्भर है। परतु यह मत सही नही है। शारीरिक शास्त्रके सूक्ष्म अभ्यास करनेपर साफ तोरपर मालूम हो जाता है कि वनस्पतिके आहारसे तन और मन दोनोंकी शक्तियोंका आश्चर्यकारक विकास होता है। इस विषयमें हम जिन विद्वानोके नाम उपर गिनाराये, उनकी तो सम्मति है ही, इतके

सिवाय इसरे एक जगत्प्रसिद्ध डाक्टरने अपना निजका अनुभव प्रकट किया है। इस बातको ऐतिहासिक रीतिसे प्रमाणित करनेके लिये उन्होंने जापानका दृष्टान्त दिया है। उसके पढनेसे यह बात जच जाती है कि मासाहार निरुपयोगी है—अनावश्यक है। थोड़े ही समय पहले जापान ने रशियाको खूब पछाडाथा यह बात लोकवृत्तज्ञोसे छुपी हुई नहीं है।

"I have been a vegitarian for about 13 years and during that time have found that my faculies were better than before, and my health has been excellent. I have found no disadvantage, but every advantage in being a vegitarian.

Scientists are coming to the conclusion that there are in meat certain things which are absolutely poisonous.

The distinguishing character of vegitarians is their power of endurance.

I do not think that you would have any better example of the error people have made in thinking that meat and beer make good fighting men, than in the present war which Japan is carrying on.

DR. G. F. ROGERS M. D.
Meeting at Cambredge,
May 12th 1905.

अर्थात् '—मैं १३ वर्षसे फलाहारी हो गया हुं। पहलेसे मेरी बुद्धि वढ गई है। मेरी तन्दुरुस्ती वहुत अच्छी है। इस कामसे मुझे कोई नुकसान नहीं हुआ। नुकसान होना दूर रहा लेकीन फलाहारी होनेसे मुझे लाभही लाभ हुए हैं।

साइस यानी विज्ञान शास्त्रके पडित इस वातपर सहमत होते जाते है कि मांसमें अमुक तरहका जहर होता है × × ×

फलाहारियोंमे सहनशीलता अवश्य होती है × × × मेरे खियालमें आपके साम्हने इससे अच्छा उदाहरण हो नहीं सकता कि जापान जो लडाई इस समय लड रहा है वह इस वातको सिद्ध कर रही है कि दारू व मांस खानेसे अच्छे सिपाही नहीं होते। दुनियाकी समझ इस विषयमें भ्रम पूर्ण है।

डा० जी. एफ. राजर्स एम. डी.

(ता० १२ मई १९०५ केम्ब्रिजमें हुई सभा.)

डा० राजर्सका मत हमारे पढनेवाले देख चुके। अव हम केप्टन गोर्ड ई डायमन्डका-जिनकी तसवीर इस पुस्तकमें दी गई है-कुछ हाल सुनाते है। इनका चित्र सन् १९११ में अमेरिकासे प्रसिद्ध होते हुए दी गुड हेल्थ (उत्तम स्वास्थ्य) नामक मासिक पत्रके एप्रिलके अकमें प्रसिद्ध हुआ था। उस समय इनकी उम्र ११४ वर्षकी थी। ५१ वर्षसे वनस्पतिका

सिवाय इसरे एक जगत्प्रसिद्ध डाक्टरने अपना निजका अनुभव प्रकट किया है। इस बातको ऐतिहासिक रीतिसे प्रमाणित करनेके लिये उन्होंने जापानका दृष्टान्त दिया है। उसके पढनेसे यह बात जच जाती है कि मांसाहार निरुपयोगी है—अनावश्यक है। थोड़े ही समय पहले जापान ने राशियाको खूब पछाडाथा यह बात लोकवृत्तज्ञोसे छुपी हुई नहीं है।

"I have been a vegitarian for about 13 years and during that time have found that my faculies were better than before, and my health has been excellent. I have found no disadvantage, but every advantage in being a vegitarian.

Scientists are coming to the conclusion that there are in meat certain things which are absolutely poisonous.

The distinguishing character of vegitarians is their power of endurance.

I do not think that you would have any better *example of the error people have made in thinking* that meat and beer make good fighting men, than in the present war which Japan is carrying on.

DR. G. F. ROGERS M. D.

Meeting at Cambredge,

May 12th 1905.

अर्थात्'—मैं १३ वर्षसे फलाहारी हो गया हुं। पहलेसे मेरी बुद्धि बढ गई है। मेरी तन्दुरुस्ती बहुत अच्छी है। इस कामसे मुझे कोई नुकसान नहीं हुआ। नुकसान होना दूर रहा लेकीन फलाहारी होनेसे मुझे लाभही लाभ हुए हैं।

साइस यानी विज्ञान शास्त्रके पंडित इस बातपर सहमत होते जाते हैं कि मांसमें अमुक तरहका जहर होता है × × ×

फलाहारियोंमें सहनशीलता अवश्य होती है × × × मेरे खियालमें आपके साम्हने इससे अच्छा उदाहरण हो नहीं सकता कि जापान जो लडाई इस समय लड रहा है वह इस बातको सिद्ध कर रही है कि दारू व मास खानेसे अच्छे सिपाही नहीं होते। दुनियाकी समझ इस विषयमें भ्रम पूर्ण है।

डा० जी. एफ. राजर्स एम. डी.

(ता० १२ मई १९०५ केम्ब्रिजमें हुई सभा.)

डा० राजर्सका मत हमारे पढनेवाले देख चुके। अब हम केप्टन गोर्ड ई डायमन्डका–जिनकी तसवीर इस पुस्तकमें दी गई है–कुछ हाल सुनाते है। इनका चित्र सन् १९११ में अमेरिकासे प्रसिद्ध होते हुए दी गुड हेल्थ (उत्तम स्वास्थ।) नामक मासिक पत्रके एप्रिलके अकमें प्रसिद्ध हुआ था। उस समय इनकी उम्र ११४ वर्षकी थी। ९१ वर्षसे वनस्पतिक

आहार करने लग गये थे। उस पत्रमें केप्टन साहिबका जीवन चरित छपा है। जीवनीका लेखक कहता है कि वास्तवमें केप्टन साहिब वैसेही है जैसा वे अपनेको कहते है। उनकी अवस्था ११४ वर्षकी है। वे बिल्कुल तन्दुरुस्त है। वे दौड लगाने, कूदने और अपने पैरको माथेतक उछालनेकी शक्ति रखते है। उम्दा जीवन किसे कहते है इसका प्रत्यक्ष उदाहरण केप्टन महाशय है। १९०७ ई में जब केप्टन साहिब १११ वर्षके थे तब उनकी डाक्टरी परीक्षा की गईथी। उसवक्त उनकी तन्दुरुस्ती ऐसी अच्छी मानी गई कि यह निश्चयहभी किये कब मरेगे। सन् १९०२ मे जब उनकी अवस्था १०६ वर्षकी थी तब वे दिसम्बरके महीनेमे नोजवानोंको ल्यासमे खडे होकर समझाते थे कि शारीरिक बल किसतरह सुधाराजाय। Macfadden's Physical Developement Magazine में इस वयोवृद्धके चित्र सात दफे प्रकाशित हुए। इन चित्रोंमे भातिभांति के दृश्य हैं। कहीं केप्टन मल्लयुद्ध करते हुए हैं। कहीं साइकिलपर बैठकर जा रहे हैं। कहीं सीना निकाल कर पहलवानोकी तरह खडे है और कहीं भांतिभातिकी कसरतें दिखला रहे हैं। ये सब मांसाहार-को परित्यागकर सयमसे रहनेका प्रताप है। यदि मनुष्य मांसाहार-को छोड दे तो उसे कितनेही लाभ होसकते हैं यह हमारे पढनेवाले सोचें।

यद्यपि हमने ऊपर केप्टन साहिबका उदाहरण दिया है परन्तु हम यह अपने पढनेवालोंको विश्वास नहीं दिलाते हैं कि वनस्पतिका आहार करनेवाले इतनी अवस्था पावेंहींगे तथापि इतना तो मुक्त कठ्से अवश्य कहते है कि वनस्पतिका आहार करनेवाली प्रजा मासाहारी प्रजासे तन्दुरुस्तीमें कम नहीं रहती और कितनीही बातोमें तो बहुतही श्रेष्ठ होती है।

ऊपर मैंने अनेक विद्वान डाक्टरोंके मत दिखला दिये हैं। ये विद्वान् जबानी सम्मति देकर चुप न होरहे। इन्होंने विज्ञानके बलसे वनस्पति और मासका पृथक्करण (Analysis) करके बडी सूक्ष्मतासे देखा है। इस देखाभीलीसे उन्हे वनस्पतिके उत्तम गुणोंका विश्वास होगया है तब कहीं दुनियाके साम्हने अपना दावा पेश किया है।

उस पृथक्करणको हम अपने पढने वालोंके हितार्थ यहापर लिखिते हैं। इसके पढनेसे मेरे विचारमें उनका मत वनस्पति आहारके अनुकूल होगा और मांसाहारी सज्जन मासकी कमीको जान जायगे तो अवश्य उसे छोड देंगे। वह पृथकरणका कोष्ठक (Table) यह है:—

मांस और वनस्पतिके पृथक्करणाका कोष्टक (Table)

जाति.	न.	वस्तुका नाम	जल.	मास बनाने वाला तत्व.	चिकणाई	मिठाई	क्षार.	पौष्टिक तत्व
धान्य.	१	गेहू	१३·५	१३·८	१ ९	६९ १	२ ०	९८.०
	२	चावल	१२ ४	७ ६	० ९	६८·९	१ २	९८·१
	३	चने.	१०·४	१५·६	६ ११	६३ ६	३·०	१२४·३
	४	मक्का.	१३ १०	९ ८५	४ ६०	६८ ५	१ ५	१००·६
	५	तुवर	९·०	२१·९	१ ६	६४ ६	२·९	१०१·०
	६	मसूर	१२·०	२५·०	१·९	५८ ३	२·८	९९·५
	७	मूग.	९·९	२५·५	२·८	५५·७	३·२	११८·७
	८	वटाणे	९ ५	२४·६	१ ०	६२·०	२·९	१०१·०
	९	गुवारफली	११ ८	२९ ९	१ ४	५३ ९	३·१	९७ ७

शाकभाजी.	१०	वाळोल.	११·१	२३·७	०·२	५५·६	३·७	९५·८
	११	भिंडी.	१५·०	८·८	५·०	७०·५	० ६	१२१·६
	१२	कोल्हा.	७५·०	२·२	०·२	२१·६	१·०	१५·०
	१३	टमाटर.	९२·४	१·६	०·३	४·१	०·६	७·२
	१४	कांदा.	८६·०	१ ७	०·१	१०·८	०·७	१४·४
	१५	भाजी.	८८.५	३·५	०·६	४ २	२·०	१०·२
	१६	गाजर.	८६·५	१·२	०·३	९·२	० ९	१२·५
दूध.	१७	भैंसका दूध.	८४·१०	४·०	७·१	४·०	०·८	२८·९
	१८	पनीर.	२७·५६	४४.०८	१५·९५	—	५·७२	१००·८
फळ.	१९	खोपरा.	१५·०	५·७	५०·६	२७·९	१·७	१६५·९
	२०	केळे.	७५·१	१·३	०·६	२२·०	०·९	२८·१
	२१	अंजीर.	७९·६	१·५	—	१७ ९	०·६	२१·८
मांस.	२२	मटन.	७०.०	१४·५	१४·७	—	०·८	५३·८
	२३	मुर्गी.	७४·०	२१·०	३·८	—	०·८	५३·६
	२४	मछली.	८६.०	११·९	०·२	—	१·२	१४·०
	२५	अंडे.	७४.०	१४.०	१० ५	—	१·५	४३ ४

पृथक्करणके कोष्टकको देखनेके बाद मांस भक्षियोका यह प्रश्नही तही खडा रहता है कि अन्नादिमे पोषकतत्त्वही नही है। क्योकि रसायण विद्याके (Chemestry) आधारपर हम यह सिद्धकर चुके है कि अच्छा क्या है मास या वनस्पति ऊपर लिखे हुए कोष्टकोके देखनेसे माल्म हो जायगा कि वनस्पतिमें कितना पौष्टिक तत्त्व है। उससे जाना जाता है कि कौनसा तत्त्व, किस पदार्थमे, कितना, प्रत्येक सो भागमें (Percentage) है?

इस कोठेमें बतलाये हुए Protied का गुण मांस बनानेका है। क्षार (Salts), ज्ञानतंतु, हड्डी और दातोंके लिये आवश्यक है। स्टार्च मिठाई, चिकनाई वगैरा शरीरको काम करनेकी शक्ति देते हैं और गरमी पैदा करते है।

इस कोष्टकके देखनेसे मास और वनस्पतिके पदार्थोंके गुण दोष माल्म हो जाते है। मांसाहारी होनेसे नासूर, (Concer) क्षय (Tuberculosis) और अतडीकी बीमारियां (Appendicitis) हो जाती हैं। इस विषयमे, विद्वान् डाक्टरोकी बहुतसी राये है और उन्हे प्रकट करनेका हमारी इच्छाथी परन्तु स्थल सकोचके कारण हम अपनी इच्छाको काममे न ला सके। इन बीमारियोंमेंसे नासूर और अतडीकी बीमारीके लिये तो अस्त्र चिकित्साकी (चीराफाडी करने) तक नोबत गुजरती है और फिरभी रोगीको आराम नही होता। यदि इन्ही बीमारोका मास छुडा दिया जाता है और वनस्पतिकी खुराक दी जाती है तो व

भूमिका.

जीवरक्षा परम धर्म के प्रचारार्थ दक्षिण हैद्राबाद जीवरक्षा ज्ञान प्रचारक मंडलीने जो अनेकविध आकर्षक कार्यपद्धतिओं का अवलंबन किया है, उनमें " सगीत भजन मंडली " भी एक है. इस के तीन भजनिक है, जो हार्मोनियम, तबला, फिडल आदिसे जनमनरजन करते हुवे मूक पशुओंकी करुणामय पुकार के भजन, प्रभातफेरी व मेले आदि में मधुर कंठ से सुनाया करते है मडली की यह गायन पद्धति बहुत लोकप्रिय हुई है, इस के आकर्षण से लोक एकत्र होते है, प्रचार करने में अनुकूलता होती है इस की सफलता विदित हो जाती है कि अन्य प्रदेशों मे जीवरक्षा प्रचारक सस्थाओंने भी इस संस्थाका अनुकरण कर के अपने २ स्थानों में भजन मडलियां कायम की हैं.

अहिंसा संगीत रत्नावली में जो भजनरत्न गुंथे गये है उनमेंसे कुछ संग्राहक की कृति है, शेष भजनों के रचयिता कवि महाशयों का संग्राहक परम ऋणी है.

नम्र निवेदक,

माधवराव केशवराव खैरे.

संग्राहक—संशोधक.

अनुक्रमणिका.

जगदंबा की आरती.

(१)

जय जगतजननी दयादेवी
सुकृत–सुरतरु मंजरी,
जय जीवजीवन रक्षिका,
जय धर्मधारिणी शंकरी ॥ १ ॥
जय इष्टमात अभीष्ट अर्पक,
शांतिदायिनी सर्वदा,
जय भक्तवत्सल भक्त मनमें,
भावसह वसि है सदा ॥ २ ॥
भगवती आप प्रताप से,
अति पतित जन पावन भये,
स्वर्गादि संपति पाय के,
फिर मुक्तिमंदिर में गये ॥ ३ ॥
इहि हेतु तुहि अघहारिणी,
वर मोद मंगल कारिणी,
दुःख विघ्नवृंद विदारिणी,
जय जयतु जगदुद्धारिणी ॥ ४ ॥

——:o:——

(२)

प्रभु प्रार्थना.

(२)

॥ दोहा ॥

मंगलमय परमात्म को, वंदन वार हजार ;
दीनानाथ पशु पक्षी की, सुनिये सदय पुकार ॥ १ ॥
सब दानों में श्रेष्ठ है, अभयदान महादान ;
पशुपक्षी की प्रार्थना, मान्य कीजे भगवान ॥ २ ॥

स्तवन.

हे जगत्राता विश्वविधाता,
हे सुख शांति–निकेतन हे ॥ ध्रुव ॥
प्रेम के सिन्धो, दीन के बन्धो,
दुःख दरिद्र विनाशन हे ;
नित्य अखंड अनंत अनादि,
पूरण ब्रह्म सनातन हे ॥ १ ॥
जगआश्रय जगपति जगवंदन,
अनुपम अलख निरंजन हे ;
प्राणसखा त्रिभुवन–परिपालक,
जीवन के अवलंबन हे ॥ २ ॥

मंडली का उद्देश.

(३)

मंडली है ज्ञान-प्रचारण को || ध्रुव. ||
सर्व देश जीवरक्षा का प्रचार हो,
अहिंसा परमो धर्म का सब को विचार हो,
यह शिक्षा है अपने उद्धारण को ||मंडली.||
मनुष्य जीव भाई सभी मिल के प्रेम से,
पशुपक्षी की रक्षा ज़रा करिये नेम से ,
यह आनद शीघ्र निहारण को ||मंडली.||

× × × × ×

शेअर.

जैसी अपनी जान समझो, और की भी जान को ,
दर्दे-दिल के वास्ते पैदा किया इन्सान को || १ ||

× × × × ×

यह शिक्षा है अपने उद्धारण को ||मंडली.||

गैया की अरजी.

(८)

गज़ल.

करुणानिधान भगवन्, मेरी सहाय कीजे ;
भॉ भॉ अवाजवाली, अरजीपे ध्यान दीजे ॥ध्रुव॥

खा पी के घास पानी, देती हुं दूध सब को ;
हिन्दु हो या मुसल्मां, खुद ही विचार लीजे ॥१॥

बच्चों को मेरे ले कर, सेवा में लोग अपनी ;
पाते हैं अन्न जिससे, सारा जहान रीझे ॥२॥

मरते समय मैं अपना, देती हुं चाम तुम को ,
पैरों मे पहननेको, जूती बनाय लीजे ॥३॥

करती हुं मैं भलाई, दुनिया में हरतरहसे ;
गर हो कसर तो कुछ भी, मुझ को बताय दीजे ॥४॥

खाते हैं घी मलाई, मेरे प्रताप से जो ,
वे काटते हैं मुझ को, बस इसका न्याय कीजे ॥५॥

गउ की फरियाद.

(५)

गजल

मेरी इमदाद को अय कृष्ण मुरारि आजा ,
मैं मुसीवत में हुं अव कुंजविहारी आजा ॥ध्रुव.॥

खूव वेरहेमी से वेदर्द सताते है मुझे ;
मेरी गर्दन पे वरसती है कटारी आजा ॥१॥

कोई संसार में सुनता नही फरियाद मेरी ,
देशनेताओं से रोरोके मै हारी आजा ॥२॥

पेटभर खाने को मुझको न यहां मिलता है ;
अधमरीसी वूरी हालत है हमारी आजा ॥३॥

हर कोई मारता है लात व ठोकर से हमें,
कमलिया ओढ के गायों के पुजारी आजा ॥४॥

कैसा था तेरे जमाने में, वो सत्कार मेरा ;
"रंगीले" हो रही अव जिल्लतो ख्वारी आजा ॥५॥

गाय की कहानी.

(६)

गजल.

हे हिन्दवासी हिन्दु, इस्लामी ओ इसाई,
शैवी व शक्तिपूजक, जैनी व बौद्ध भाई. ॥ध्रुव॥
अपने अपार दुःख को, कहेती हैं हम कहानी;
हो सावधान सुन लो, अभिमान त्यागी मानो ॥१॥
खा कर के घांसभूंसा, पी कर तलाव पानी,
हम कर रही गुज़ारा यह वात जगकी जानी ॥२॥
बच्चे हमारे प्यारे, हल को सदा चलाते,
उत्पन्न अन्न उत्तम, कर के तुम्हें खिलाते ॥३॥
मरने पे अपने तनका, मैं चाम तक भी देती;
सहती हु दुःख मैं तो, तुमही को सुख देती ॥४॥
उपकारी जीव हैं, हमे मरने का गम नहीं है,
इस नाशवान जगमें, कोई अमर नहीं है ॥५॥
पर शोक है तो यह है, भारत में विन हमारे.
विन अन्न के मरेंगे, तेतिस कोटि प्यारे ॥६॥
सम्राट शाह अकवर ने, की थी हमपे दाया,
गोवध के रोकने का, कानून भी चलाया ॥७॥
अब भी तो शाहे कावुल ने, कर के यह दिखाया;
निज राज्य भरमें, गोवध को वध है कराया ॥८॥
शाहे निजामने भी, यह धर्मफल लिया है,
गायों को ईद के दिन, वधसे बचा दिया है ॥९॥
तुम सुन चुके हो प्यारे, सारा कथन हमारा,
अब सोच समझ लीजे, निज हानिलाभ सारा ॥१०॥

असहाय गोमाता.

(७)

कलियुगमें मेरा कोई मददगार नही है,
कुछ इसमें खता मेरीतो सरकार नही है ॥ध्रुव॥
वे दर्दी से जालिमने मुझे खूब सताया,
तकदीरका लिखाथा मेरे अखत्यार नहीं है ॥ १ ॥
अफसोस यही है कि रही जुल्म ही सहती,
पर दूध देने से मुझे इन्कार नही है ॥ २ ॥
अय्यामे जवानी में पिया दूध तो तुमने,
बूढी का मगर रखना, सज़ावार नहीं है ॥ ३ ॥
फिर देखिये क्या हाल है, बाज़ार में मेरा,
ज़ालिम के सिवा कोई खरीदार नही है ॥ ४ ॥
खुद वक्ते ज़ुवह कहता था युं कातिले खंजर,
जालिम, न गला काट, गुन्हागार नहीं है ॥ ५ ॥
दुखियारी को ऐ हिन्दु-मुसल्मानों बचा लो,
यह धर्म का बाज़ार है, बाज़ार नहीं है ॥ ६ ॥

गोमाता की टेर.

(८)

हमारी टेर लंदनमें सुनादोगे तो क्या होगा ?
हमारी दुर्दशा है तो, बचालोगे तो क्या होगा ? ॥ध्रुव॥
चरें हम घास जा बनमें, तुम्हें आ दूध हम देवें,
इसी अहेसान के बदले, बचालोगे तो क्या होगा ? ॥१॥
कहां हैं वो ऋषिसंतान, हमें जो माता कहते थे ?
हमें माता समझ कर ही, बचालोगे तो क्या होगा ?॥२॥
है राजा को सदा वाजिब, प्रजा के दुःख को टारे।
प्रजा भी हम तुम्हारी है, बचालोगे तो क्या होगा? ॥३॥
हजारो खर्च के रुपया, खुलाते कारखाने हो।
हमारी एक गौशाला, बनादोगे तो क्या होगा ?. ॥४॥

॥ शेअर ॥

बेज़बां गौओं की जो, सुनते नही फरिआद को।
सब की बरबादी का, दुनियां में समर बोते हैं वो ॥१॥

गो का अहेसान.

(९)

गाई माई को भाई, सताओ मती (२)
सताओ मती, दुःख वढाओ मती ॥ध्रुव.॥

अन्न वनकर सरे इन्सान पर छाई गाई ;
नद्दीयां दूध मलाई की वहाई गाई ;
घांस खाकर ही वडा लाभ वताई गाई ;
जिसकी मा मर गई उसकी वनी माई गाई ;
इसका अहेसान दिल से हटाओ मती ॥गाई माई को॥

इसके वछडे भी अपने काम पर आ जाते हैं .
वोज वो सैकडों मन का भी उठा लाते है ,
खेत वोते है वही हमको अन्न खिलाते हैं ;
वाद मरने के भी सेवा यह वजा लाते हैं ;
ऐसे सेवक की सेवा भुलाओ मती ॥गाई माई को.॥

इसके अहेसान का वदला तो चुकाओ भाई ;
एक दो हर मकां में पालो पलाओ गाई ;
कृष्ण की प्यारी है कुछ प्यार वताओ भाई ,
गौ के रक्षक वनो औरों को वनाओ भाई ;
इसके वैरी घटाओ, वढाओ मती ॥गाई माई को.॥

बदले में दूध घी के.

(१०)

गज़ल.

बदले में दूध घी के, भूंसा खिलानेवाले ,
एक बात मेरी सुन जा, ओ भूल जानेवाले ॥ध्रुव.॥

बूढी हुई जो माता, घर से निकाला किसने ?
कहती हुं क्या सुना भी, ओ छोड जानेवाले ॥१॥

गर दूध कम दिया है, तू तो हिसाबदां है ;
देता खुराक थोडी, दिल में लजानेवाले ॥२॥

सुनती हूं कौम तेरी, रक्षक रही हमेशा ;
कुल लाज रख बडों की, ऊंचे घरानेवाले ॥३॥

सतयुग का ज़माना, क्यों कर भुलाउ दिल से ;
आते हैं याद मुझको, मेरे बचानेवाले ॥४॥

टी. सी. मुनेग कर्पाकर, फरियाद यह गऊकी ,
जो गऊओं के बाबू , दिल को लगानेवाले ॥५॥

गैया बिचारी.

(११)

(तर्ज़—वारे लाला, मोहन वंसीवाला)

गैया बिचारी, करती है गिरियाज़ारी,
कोई आओ बचाओ मेरी जान ॥ध्रुव.॥

बालावस्था में दूध तो पिलाया,
तूने दिल से क्यों मुझको है भुलाया ?
गर्दन पे छुरी चलावे,
कुछ खौफ़ खुदा नहीं खावे,
मैं दुखियारी, है दुःखभारी, रो रो हारी,
सुनिये ज़रा फरियाद ॥गैया बिचारी॥

मेरे जो बछडे प्यारे, हल को सदा जोते हैं,
बोज को गले पे धारें, उनको आप खोते हैं,
पलती है दुनियादारी ;
टलती है आफत सारी ;
मैं दुखियारी, है दुःख भारी, रो रो हारी,
सुनिये ज़रा फरियाद ॥गैया बिचारी॥

॥ दोहा ॥

गोरक्षा कीजे सजन, यह भारी उपकार;
इससे रक्षा विश्व की, पलता है संसार;

---

(१२)

(१२)

गज़ल.

क्या पाप हो रहा है, आंखें उघार देखो;
पशुओं की दुर्दशा को, मित्रो विचार देखो ॥ ध्रुव ॥
जिस शक्ति के सहारे, यह देश जी रहा है;
उस के विनाश से क्या, होगा सुधार देखो ॥ १ ॥
सेवा करे हमारी, मर कर न पैर छोडे,
उन के गले को तो भी, काटे कटार देखो ॥ २ ॥
गोवंश को बचाओ, मिल कर नरेश लोगो;
भारत का यह हरेगा, सारा विकार देखो ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

प्यारे परउपकार कर, भली भलाई जान;
सब की उन्नति में मिली, अपनी उन्नति मान ॥ १ ॥
तन से सेवा कीजिये, मनसे भले विचार;
धन से इस संसार में, करिये परउपकार ॥ २ ॥

मांसाहार निषेध.

(१३)

गज़ल,

है भला तेरा इसीमें, मांस खाना छोड दे,
इस मुबारक पेट में, कबरें बनाना छोड दे ॥ ध्रुव ॥
जो चलावे हल, उठावे बोज तेरे वासते;
उनकी गर्दन पर जरा, खंजर चलाना छोड दे ॥१॥
खा के भुंसा पी के पानी, दूध अरु मक्खन दिया,
इन के बदले खून तू, उनका बहाना छोड दे ॥२॥
जीना इस दुनियामें प्यारे, है क़यामत तक नहीं;
चार दिन का है यह मेला, जुल्म करना छोड दे॥३॥
मांगता है खैर अपनी, काट गर्दन और की,
ऐसी बातों से सजन, मन को लगाना छोड दे ॥४॥
जो करे खिदमत, मुसीबत में जो आवे काम भी,
उन वफादारों को अय प्यारे सताना छोड दे ॥५॥

॥ दोहा ॥

गौ माता के मरण से, बछरा बछरी रोत;
ले मालिक इन्साफ तब, वैसी हालत होत

करणी का फल.

(१५)

गज़ल.

सताते है जो औरों को, सताये वो भी जायेंगे,
वचाते हैं जो गैरों को, वचाये वो भी जायेंगे ॥ध्रुव॥

जो कर के जुल्म निज वल से, गरीवों को रुलाते है,
वनाकर रंक अरु निर्वल, रुलाये वो भी जायेंगे ॥ १ ॥

छुरी पशुओं की गर्दन पर, जो निर्दय हो चलाते है,
वखत इन्साफ के अपनी भी वो गर्दन कटायेंगे ॥ २ ॥

जो कुरवानी वलीयग में, पशुका होम करते है:
वो उनके पाप-अग्नि में, वहां पर होमे जायेंगे ॥ ३ ॥

धर्म के नाम से जो खून पशुओं का वहाते हैं,
भयंकर नर्क में इस का नतीजा वो भी पायेंगे ॥ ४ ॥

सदा नेकी जो करते है, वदी के पास नही जाते;
अमर हो कर वही अपना, सफल जीवन वनायेंगे ॥ ५ ॥

अनाथों की रक्षा.

(१८)

गज़ल.

सताते जो ग़रीबों को, उन्हे कुदरत सतायेगी,
रुलाते जो अनाथों को, उन्हे कुदरत रुलायेगी ॥ध्रुव॥

भलाईका भला फल है, बुराई का बुरा फल है;
बराई जो करेगा सो, बुरा फल क्यों न पाएगा ॥१॥

दया दीनों पे सब कीजे, किसी को दुःख नही दीजे,
तुम्हारी नाव को मालिक, किनारे से लगावेगा ॥२॥

करो रक्षा अनाथों की, सखावत कुछ करो भाई,
वो ब्रह्मानंद फिर यह जीव, नहीं नरतन में आवेगा ॥३

॥ दोहा ॥

जीवदया सम पुण्य नही, जीवहिंसा सम पाप;
जीवदया जिन में बसे, ताके हिरदे आप.

ज़ुल्म करना छोड दो.

(१७)

गज़ल.

ज़ुल्म करना छोड दो, प्यारे खुदा के वास्ते;
है यह हरकत नारवा, अहेले वफा के वास्ते. ॥ध्रुव॥
हैं बनाये सब उसीने, जिसने तुझे पैदा किया,
क्यों सताता है किसी को, दो दिनों के वास्ते ॥ १ ॥
होगी खुदगर्ज़ी भला, इससे भी बढकर और क्या ?
जान लेता और की, अपने मजे के वास्ते ॥ २ ॥
काट कर पशुओं की गर्दन, खैर अपनी मांगता,
दे जगह इन्साफ को, दिल में खुदा के वास्ते ॥ ३ ॥
चंद रोज़ा जिन्दगी, तन है यह पानी का बुलबुला,
खामुख्वाह बनता है क्यों, मुज़रिम सज़ा के वास्ते ॥४॥
कर भला, होगा भला, नेकी का बदला नेक है
मत सता हरगिज किसी को, हाजत रफा के वास्ते॥५॥
कर अदा अपने फरायज़, होनेवाली शाम है;
मत मरे मरदूद क्यों, नाजो अदा के वास्ते ॥ ६ ॥
भूल कर मालिक को, फिरता दरबदर बल्देव क्यों,
जान लेता बेसमज, वस्ले बुतों के वास्ते ॥ ७ ॥

---

(१९)

जलाते न चलो.

(१८)

गज़ल

जुल्म कर कर के ज़लीलों को, जलाते न चलो,
छुरी गर्दन पे गरीबों के, चलाते न चलो. ॥ ध्रुव ॥
नहीं बहाने का हमेशां है, यह हुस्ने दरिया,
बदी की बाढ से बहुतो को बहाते न चलो ॥ १ ॥
दौरदौरा सदा रहता न किसी का साहब;
सितम समशेर से, आलम को सताते न चलो ॥ २ ॥
अक्ल से काम लो, खलकत है खुदा की इसमें,
हो के बेदर्द, दिल दीनों के दुखाते न चलो ॥ ३ ॥
चंद रोज़ा है इस दुनिया में ज़िन्दगी जिस पर;
निशां नेकी का, ज़माने से मिटाते न चलो ॥ ४ ॥
खुदा का खौफ करो, कुछ भी तो दिल मे भाई,
रश्क से खाक़ में, बन्दों को मिलाते न चलो ॥ ५ ॥
वख्त बलदेव अब जाता है, कमा लो नेकी;
ख्वाहिशे नफ्स में जिन्दगी को, गॅवाते न चलो ॥ ६ ॥

पशुपक्षी की हत्या.

(१९)

देखो अच्छा नहीं है यार, पक्षी पशु मार के खाना ॥ ध्रुव ॥

जैसे तुम को प्यारे प्राण, वैसी पशुओं की भी जान;
फिर क्यों होते हो अनजान, गले पर उनके छुरी चलाना. १

तुम इन्सान कहे जाते हो, फिर क्यों नही ध्यान लाते हो ?
कांटा लगे तो चिल्लाते हो, पर पशुओं के शीश उडाना. २

जबसे बहुत बढा यह कार, पशुभी घट गये बेशुमार
घी और दूध की गई बहार, बीमारीने किया ठिकाना. ३

॥ दोहा ॥

पशुपक्षी नित अपन को, सब विधि देत सहाय
कुरवानी उनकी करें, यह क्या नही अन्याय? ॥१॥

पशुबलि-निषेध.

(२०)

दीनों पे दया बिसराय के,
क्यों यारो गज़ब करते हो? ॥ ध्रुव ॥

अपने पुत्र की कुशल मनाओ,
बच्चे दुसरा के कटवाओः
कुछ तो खौफ मालिक का खाओ,
किस धोखेमे आय के, पशुओं के प्राण हरते हो? ॥ १ ॥

जगदम्बा जिस को बतलाते,
उसी का बच्चा वहां कटाते,
खुश होते निज कुशल मनाते,
ऐसे निपट बोराय के, लखचौरासी फिरते हो ॥ २ ॥

॥ दोहा ॥

दया धर्म का मूल है, पाप-मूल अभिमान,
तुलसी दया न छोडिये, जबलग घटमें प्राण ॥ १ ॥

जुल्म का नतीजा.

(२१)

कौन कहेता है कि ज़ालिम को सज़ा मिलती नहीं,
नेक कामों की कहो, किस को जजा मिलती नहीं ॥ध्रुव॥

जुल्म करते है जो मिस्कीनों पे, पा कर कुछ उरूज;
चंद ही दिन में वहां फिर, वो हवा मिलती नहीं ॥ १ ॥

जर पे हो मगरूर, गिनते है जमाने को जो हेच;
एक दिन ऐसों को भी, सूखी गिजा मिलती नहीं ॥ २ ॥

देख तकलीफों में औरों को, हँसा करते है जो.
पडके सडते हैं, उन्हें ढूंढी कजा मिलती नही ॥ ३ ॥

सुख के पाने के लिए, हो दास तू सबसे हकीर;
इस से बढ कर और तुझे कोई दवा मिलती नहीं ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

तुलसी इस संसार में, भातभात के लोग:
सब से हिलमिल चालिए, नदीनाव संजोग ॥ १ ॥

(२२)

रहम का बदला.

---

(२२)

रहम जो करता है, बदला रहम का वो पाएगा;
जुल्म करता है तो, बदला जुल्म का मिल जाएगा ॥ध्रुव॥
रहम जालिम पर करे गर, पाक रब्बुल आलमीन;
जुल्म फिर मजलूम के हकमें बुरा हो जायगा। ॥ १ ॥
बख्श दे अपना गुन्हा हक, पर नही हक्कुल इबाद,
ये कहा किसने तुझे, जालिम भी बख्शा ज़ाएगा। ॥ २ ॥
सीखता है देखकर क्यों, गैर की बदचाल तू?
चोर चोरी गो करे, एक दिन तो पकडा जाएगा ॥ ३ ॥
अहेले दिल है तो किसीकी, तू दिलआज़ारी न कर;
याद रख मेरी नसीहत, वरना तू पछताएगा ॥ ४ ॥
जुल्म का ताज़ीर, एहसां की जज़ा एहसान है,
पेड बाबूलों के बो कर, आम क्यों कर खाएगा? ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

तुलसी हाय गरीब की, कभी न खाली जाय,
[illegible] ढोर के चाम से, लोहा भस्म हो जाय. ॥ १ ॥

---

(२४)

मद्यमांस तजो.

(२३)

ठुमरी.

मद्यमास तजो अब मानो पिया ॥ ध्रुव ॥
मृग मीन पशु जलचर नाना;
सम सब जीव है जानो पिया ॥मद्यमास॥
विषयवासना के वस हो कर;
रुचि के हित मत मारो पिया ॥मद्यमांस॥
उदर समाध नहीं पशुओं की;
छीना भी मृतक है जानो पिया ॥मद्यमांस॥
रचे जगदीश "प्रताप" सभी को;
अबहुं इनही न बिगारो पिया ॥मद्यमास॥

॥ दोहा ॥

अहिंसा परमो धर्मः अहिंसा परमं तपः
अहिंसा परमं ज्ञान, अहिंसा परमा गतिः ॥१॥
मेरुपर्वत तुल्य दो, सुवर्ण का भी दान,
अभयदान सम पुण्य नहीं, शास्त्र वचन पहिचान॥२॥

बकरी की विनति.

(२८)

मैं बकरी विनति करती हुं ॥ ध्रुव ॥

दूध तुम्हारे बच्चों को दूं,

घांसपात मैं चरती हुं ॥ मैं० ॥

गुनाह हुवा मेरा क्या साहब

कातिल छुरी से डरती हुं ॥ मैं० ॥

मुझ को भी हैं बच्चेवाले,

मैं भी महोब्बत करती हुं ॥ मैं० ॥

हाय गरीबो की बुरी है साहब,

बिना मौत मै मरती हुं ॥ ॥ मैं ॥

॥ दोहा ॥

बकरी खाती घांस है, ताकि काढे छाल;

जो बकरी को खात हैं, उनके कौन हवाल?

---

(२९)

शिकार निषेध.

(२९)

कैसे प्राणी के प्राणों का घात करे ?
तेरे दिल में दयाका असर ही नहीं ॥ ध्रुव ॥
भोले हरणों का वन में शिकार करे,
तुझे घोर नरक का खतर ही नहीं;
ज़रा रहम करो, अपने दिल में डरो.
प्यारे जुल्म का अच्छा असर ही नहीं ॥ १ ॥
भूले वन के पखेरु ही डरते फिरें,
मारे डरके तुम्हारे से दूर रहें,
वे तुम्हारा न कोई बिगार करें,
उनका वन के सिवा कोई घर ही नहीं ॥ २ ॥
घांसपात चरें, अपना पेट भरें,
धनदौलत तुम्हारा न कोई हरे
प्यारे बच्चों से अपने वे प्रीति करें,
उन के दिल मे तो कोई भी गर ही नहीं ॥ ३ ॥

जीवन को मत मार.

(२६)

(राग जंगला, ताल ३.)

जीवन को मत मार छुरी से,
मारणहारा खडा सिर तेरे ॥ ध्रुव ॥

जीव मार कर, अमर न होवे,
क्यों करता फिर पाप घने रे ? ॥ १ ॥

मांस खाय तनमांस वढावे,
सो तन अंत न संग चले रे ॥ २ ॥

ईश्वर के सब पुत्र बरावर,
नीचऊंच नैनन मत हेरे ॥ ३ ॥

" ब्रह्मानंद " दया धर मन में,
जाननहार जान प्रभु नेरे ॥ ४ ॥

जीवन की प्रतिपाल.

(२७)

(राग जंगला, ताल ३)

जीवन की प्रतिपाल करो नर,
मानुषजन्म सफल हो जाई ॥ ध्रुव ॥

जपतप योगयज्ञ बहुतेरे,
जीवदया सम धर्म न भाई ॥ १ ॥

तनमनधन कर सुख उपजावो,
द्वेषभाव मन से विसराई ॥ २ ॥

मेरातेरा छोड भरमना,
ईश्वरअंश जान सबमांहि ॥ ३ ॥

"ब्रह्मानंद" तजो निज स्वारथ,
परउपकार परम सुखदाई ॥ ४ ॥

जीवन की प्रतिपाल.

(२७)

(राग जंगला, ताल ३)

जीवन की प्रतिपाल करो नर,
मानुषजन्म सफल हो जाई ॥ ध्रुव ॥

जपतप योगयज्ञ बहुतेरे,
जीवदया सम धर्म न भाई ॥ १ ॥

तनमनधन कर सुख उपजावो,
द्वेषभाव मन से बिसराई ॥ २ ॥

मेरातेरा छोड भरमना,
ईश्वरअंश जान सबमांहि ॥ ३ ॥

"ब्रह्मानंद" तजो निज स्वारथ,
परउपकार परम सुखदाई ॥ ४ ॥

कुत्ते की फरियाद.

---

(२८)

दयावंत दिलदार आगे अब, हम फरियाद करें,
सुनहु सब, हम् फरियाद करें ॥ध्रुव॥
जिस गलियन मे वसें, उसीम फिर कर गुजर करें रे;
थोडे में संतोष पाय नित, मस्त होय विचरें ॥सुनहु॥
उसी गली के रक्षणकारण, निशदिन फिकर धरें रे;
चोरचुगल से वचायदें हम, भली नौकरी भरें ॥सुनहु॥
जिनकी रोटी खावें, उनके हुक्म मुजब अनुसरे रे;
निमकहलाली नेकीसह नित, उन के द्वार ठरें ॥सुनहु॥
दाम लिये विन, काम करें हम, नित्य ही रौंड फिरें रे;
चौकी करें, न करें हरकत कछु, व्यर्थ नहीं उचरे ॥सुनहु॥
अनाथ पर यह जुल्म किये की, कोउ न लरत लरें रे,
पर क्यामत के रोज सदोपी एक नही उवरे ॥सुनहु॥
तुम्हरे आतमघट के भीतर, विद्यादीप जरे रे;
उस द्वारा देखो सतमारग, सव दुख दूर टरे ॥सुनहु॥

शराब से बरबादी.

(२९)

खाना खराब कर दिया, बिल्कुल शराबने,
जो कुछ कि न देखाथा, दिखाया शराबने ॥ध्रुव॥

इज्जत के बदले जिल्लतें, इसके सबब मिली,
मुफलिस बने, मरीज बनाया शराबने ॥१॥

बुलबुल की तरह बागमें लेतेथे बूए गुल;
सडास नालियोंमें गिराया शराबने ॥२॥

जो पीनेवाले शराबते संदल थे दोस्तों;
कुत्तों का मूत उनको पिलाया शराबने ॥३॥

मैदाने जंगमें थे कभी, जो कि शहसवार;
कीचड की नालियों में, गिराया शराबने ॥४॥

सब समां कुछ भी नहीं.

(३०)

गजल

कह रहा है आसमां यह, सब समां कुछ भी नहीं;
यह चमन धोखे की टट्टी के सिवा, कुछ भी नहीं ॥ध्रुव॥

तोड डाले जोड सारे, बांध कर बंदे कफन;
गोर की बगलीमें चित है, पहेलवां कुछ भी नही ॥१॥

जिनके महेलोंमें हजारो रंग के फानूस थे;
झाड उनके कब्र पर हैं, और निशां कुछ भी नही ॥२॥

तख्तवालों का पता देते हैं तख्ते गोर के;
खोज लगता है यहीं तक, बाद जहां कुछ भी नहीं ॥३॥

उड गये तख्ते सुलेमां, कट गये परियों के पर;
गर किसीने चार दिन बांधी हवा, कुछ भी नहीं ॥४॥

कहते हैं दुनियामें होता है हरएक दुःख का इलाज;
है वयां दर्दे जुदाई की दवा कुछ भी नही ॥५॥

जिन के डंके की सदांसे, गूंजते थे आसमां;
मक़्वरोंमें दम वखुद है, हूं न हाँ कुछ भी नहीं ॥६॥

ॐ

मनमोहन-पुष्पलता भाग २

रचयिता,
पृथ्वीराजजी
और.
शंकरमुनिजी
महाराज

प्रकाशक,

श्री बडोद जैन सघ मालवा.

प्रथमावृत्ति	मूल्य	वि. १९८१
१०००	ज्ञान वृद्धि	वी. २४५०

॥ भूमिका ॥
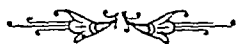
महानुभावों! आपको विदित हो कि शास्त्र विशारद श्री मज्जैनाचार्य पूज्यवर श्री १००८ श्री मुन्नालालजी महाराज की आज्ञानुयायी जगत् वल्लभ श्री जैनधर्म के सुप्रसिद्ध वक्ता मुनि श्री १००८ श्री चौथमलजी महाराज के सुशिष्य श्री १०८ श्री पृथ्वीराजजी महाराज व श्रीमान् शकर मुनिजी महाराज उक्त दोनों मुनियों के वैराग्योत्पादक बनाये हुए कतिपय स्तवनों का संग्रहकर गायन रसिक महाशयों के लाभार्थ पुस्तक रूप मे छपाकर उक्त सज्जनो के कर कमलोमें स्मर्पण करता हुआ मैं आशा रखता हूं कि आप सज्जन गण इसे पढकर अवश्य आत्मिक लाभ उठावेगे.

श्री जैनोदय पुस्तक प्रकाशक समिति . रतलाम

आपका कृपाकांक्षी.
दौलतराम पन्नालाल वडोद मालवा

वन्दे जिनवरम्

॥ गुरू स्तुति ॥ थियेटर.

माता केशर के लाल, चौथमलजी दयाल, कहू उनका अहवाल, सुनो धरकर ध्यान ॥ संयम की गुरू दिल माही धारी, त्यागीजी त्यागी है, परणी जो नार, छोडा २ ससार, लिना संयम भार, करते पर उपकार ॥ तुम्हे धन धन धन, धन धन धन, धन धन धन ॥ १ ॥

गजल

तर्ज कत्ल मत करना मुझे तेगो तवर से देखना ॥

अरिहन्त जपने का मजा जिसकी जवा पर आगया । वही मुक्त जीवन हो चुका, चारो पदार्थ पागया । वही मुक्त जीवन हो चुका, अनन्त चतुष्टय पागया ॥ टेर ॥ था वो मालाकार अर्जुन, पातकी महान् जबर । इस नाम के परताप से, शिव धाम को वह पागया ॥ अरिहन्त ॥ १ ॥ सती 'सुभद्रा' कूप से जल, मंत्र पढकर भरलिया ॥ द्वार चम्पा के खोले, संसार में यश छागया ॥ अरिहन्त ॥ २ ॥ लूटा मजा शिव कुँमार ने, इस मंत्र के प्रभाव से । हेम पुरुष लेके निज घर को, खुशी से आगया ॥ अरिहन्त ॥ ३ ॥ कुँवर

अमरने प्रेम से, इस मंत्र का स्मरण किया। अमरोंने आ रक्षा करी, संकट सभी विरला गया ॥ अरिहन्त ॥ ४ ॥ गुरु चौथमलजी महतपुर मे, आनन्द रंग वर्षा गया। शंकर मुनि को चतुर्मास के लिये फरमागया ॥ अरिहन्त ॥५॥ इति सपूर्ण

चतुर्विंशति जिन स्तुति.

तर्ज हा रसैया लागू मै तोरे पैया सताय३ काहे मोयकू.

गावो प्यारे चोविसी गुणसारे, लगावो लगावो, लगावो मनको ॥ टेर ॥ प्रभु ऋषभ अजित जिनराया, संभव जिन शिव सुखपाया, अभिनन्दन कर्म खपाया, शिवपद पाया, मन चाया, जिन राया, गावो प्यारे चौविसी गुण सार ॥ १ ॥ सुमति जिनजीको ध्याओ, पद्मप्रभुजी को शीष नमाओ, सुपार्श्व प्रभुका गुणगाओ। प्रभुजिन चन्दा, दो सुख कन्दा, आनन्दा ॥ गावो प्यारे ॥ २ ॥ प्रभुसुविधी शितल सुखपाया. श्रेयांशजी मोक्ष सिधाया, वन्दु वासपूज्य जिनराया, विमलध्याओ गुण-गाओ, सुखपावे गावो प्यारे ॥ ३ ॥ प्रभुअनत धर्म सुखकारी, शान्ती जिनसाताकारी, सर्वदेशकी मृगीनिवारी, हुवा जय जय कार, देश मभार सुनो नरनार ॥ ४ ॥ कुंथु अरह मल्लीजिन ध्याओ, मुनिसुव्रत जिनजी को शीष नमाओ, नेमी रष्टनेमगुण-गाओ, राजुल त्यागी, वडभागी, वैरागी, ॥ गावो ५ ॥ प्रभु पार्श्वजिनदेवा, करे चोष्ट इन्दर सेवा, महावीर

जपे नित मेवा, सुनो नरनारी. हितकारी, लो धारी गावोप्यारे ॥ ६ ॥ पृथ्वीराज शकर गुण गावे, चरनोमें शीप नमावे, भव भव माही सुखपावे, प्रभुगुण गाया, सुखपाया, मन चाया, गावो प्यारे चोविसी गुणसारे ॥ ७ ॥ इति सपूर्ण.

गुरु प्रार्थना विषय स्तवन

विनती सुनजो गुरु महाराज, म्हारे शहर आवजो आवजो आवजो ॥ टेर ॥ करजोडी करु मैं अरजी, थे सुणालिजो मुनिवरजी, जल्दी करके हमपर मरजी, अमृत रस पावजो पावजो पावजो ॥ विनती ॥ १ ॥ हमारा करने को उद्धार, जल्दी कीजो आप विहार, सब चेलोका परिवार सगमे लावजो लावजो लावजो ॥ २ ॥ सुन लीजो यह अरदास, दर्शन की हमको आस, यही विनती हमारी खास, भूल मत जावजो जावजो जावजो ॥ ३ ॥ पृथ्वीराज-कथे सुखकारी, शकर कहे सुनजो थे नरनारी, गुरु नाम सदा जयकारी, के नित्य उठ ध्यावजो ध्यावजो ध्यावजो. विनती सुनजो गुरु महाराज ॥४॥ इति स्पूर्ण.

तर्ज पूर्ववत्

थे सुण जो नर ओर नार गुरु गुण गावजो गावजो गावजो ॥ टेर ॥ गुरु गुण सत्तावीस धारी, गुरु की महिमा अपरम्पारी, गुरु दे- भवसागर से तारी, गुरु गुण गावजो

गावजो गावजो ॥ १ ॥ गुरु मोह कर्म को मारे, गुरु लख चौरासी टारे, गुरु आप तीरे ओर तारे, गुरु गुण गावजो गावजो गावजो ॥ २ ॥ गुरु पंच महा व्रत धारी, गुरु पूर्ण है उपकारी, ताके चरणो मे सिर डारी, गुरु गुण गावजो गावजो गावजो ॥ ३ पृथ्वीराज शंकर का कहना, गुरु चरणो मे नित रहना, जो चाहो भव मे तिरना, गुरु गुण गावजो गावजो गावजो ॥ ४ ॥ इति सम्पूर्ण ॥

जम्बु कुँवर से स्त्रियो की प्रार्थना

दो बोलो बोलो प्यार की, हम प्यासी तुम्हारे दीदार की ॥ टेर ॥ कृपा निधि करुणा करी, बोलो मीठे वैन । बिन बोले नही परत है, पल भर हमको चैन । छोटी बातें ये बिना विचार की ॥ हम प्यासी ॥ १ ॥ जोग कठिन है नाथजी सोचो हृदय मझार । चलना खाडे धार पे, चडना गगा धार। क्रिया कठिन है संयम भार की । हम प्यासी तुम्हारे दीदार की ॥ २ ॥ चन्द्र बिना रजनी सुनी, पुत्र बिना परिवार । दीपक बिन मंदिर सुनो, प्रेम बिना दिलदार । ऐसे त्रिया बिना भर्तार की ॥ हम प्यासी ॥ ३ ॥ जैसे बालक चन्द्रको, गृह्यो चहात कर मॉय । तैसे ही तुम नाथजी, भव तिरण को चाय । ो मिथ्या बातें भव पारकी, ॥ हम प्यासी ॥ ४ ॥ जम्बू गृह्यो चाहत है, तज सकल परिवार । पृथ्वीराज शंकर

कहे, सुनियो चतुर नर नार। उन्हें बुरी बातें लगे संसार की
॥ हम प्यासी ३ ५ ॥ इति सपूर्ण

गजल कव्वाली

करो मत सोच कुछ दिल मे, ध्यान वीर से लगाने दो।
सुधरेगा काम सब फोरन, जरा मोके को आने दो ॥ टेर ॥
घर आये चन्दन वाला के, संकट पल में है जब खोय। कटी
है हथकडी बैडी, समझलो इन के मायने दो ॥ १ ॥ चिल्लाया
अणगार जब रोहा, बुलाया वीरने फौरन। मंगाया पाक लिया
प्रभुने, भजन में दिन बीताने दो ॥ २ ॥ धर कर ध्यान बांबी
पर, समझाया चण्ड कोश्ये को। नमनकर किया सथारा, भव
फेरा मिटाने दो ॥ ३ ॥ धर्म श्री जैन की झडी, फहराई सारे
भारत मे। श्री दया धर्म का डंका, जरा फिर से बजाने दो
॥४॥ कथे पृथ्वीराज और शकर, ध्यान धरकर सुनो सज्जन।
शिव जाने को जिनजी का जाप जपने जपाने दो ॥५॥ इति

॥ स्तवन गुरु सेवा ॥

देशी—कांटो लागोरे देवरियां मोसु सग चल्यो नही जाय।
सेवा अमृत मीठी मेवा गुरु की मोसे छोडी न जाय। मोसे
छोडी न जाय गुरु की मोसे छोडी न जाय ॥ सेवा ॥ टेर ॥
पुण्य उदय शुभ हुवा पूर्वका, जब योग मिल्यो है आय।
पुण्याई जब प्रगटी मेरी भेट्या गुरुना पाय ॥ सेवा अमृत ॥

॥ १ ॥ क्रोध मान माया नही दर्शे, नहीं कपट मन माय। दर्शन करता गुरु आपका, पातिक दूर पलाय ॥ सेवा ॥ २ ॥ आप सरीखा गुरुजी पायो, कमी रही नही काय। है यकीन निश्चय मन मांही तारोगे मुझ ताय ॥ ३ ॥ मुझ मन सेवा मांही लग्यो है, और कही नही जाय। कृपा करके जल्दी गुरुजी, दर्शन दीजो आय ॥ ४ ॥ एक अर्ज मेरी है गुरुजी, तुम चरनों के मांय। सदा रहे सुनजर आपकी, पृथ्वीराज इम गाय ॥ ५ ॥ इति सम्पूर्ण

पूज्य श्री के गुण कीर्तन स्तवन.

वन्दू पूज्य मन्नालालजी महाराज, सुधारे भवजीवोंके काज ॥ टेर ॥ देश मालवा मायने सरे, रत्नपुरी सुखकारी। ओश-वंशमे उपनासरे, भये आप अवतारी ॥ १ ॥ एकादश वर्प मायनेस, पूज्य उदय सागरजी के पास। अमरचन्दजी पिता साथसे, संयम लियो हुलास ॥ वंदू ॥ २ ॥ पूज्य महाराज को विनय करीने, भणिया बहुत सिद्धान्त। बहु सूत्री मे नाम आपको, आप बडे गुणवन्त ॥ वन्दू ॥ ३ ॥ देशविदेश के मायने सरे, महिमा फैली अपार। तप सजम मे सूरा पूज्यजी, हैं गुण का भडार ॥४॥ उन्नीसे पीचोत्तर वैशाख सुदि दशमी, [illegible]र जम्बु के माय। चार तीर्थ मिल महोत्स्व करने, दी पूज्य [illegible]ी हर्पाय ॥ ५ ॥ सदा जय अवहोय आपकी, यही विनती

है हमारी । पृथ्वीराज और शंकर मुनि, कहे वार वार वलिहारी ॥ ६ । इति सम्पूर्ण

तर्ज कव्वाली.

श्री जिन धर्मकी जयर मनाले जिसका जी चाहै । अटल नियम श्रीजिन का, तपासे जिसका जी चाहे ॥ टेर ॥ षट्द्रव्य हैं अनादि, कहे श्री जिनवरजी ने । अगर फी कोई इसमे, निकालें जिसका जी चाहे ॥ १ ॥ पदार्थ सप्तका हमको, यथा स्वरूप न कहीं पाया । सिवाय जैन शास्त्रो के, वताए जिसका जी चाहैं ॥ श्री ॥ २ ॥ स्याद्वादागकी तलवार सेर मिथ्यात्व खंडनमे । उठाके हाथसे इसको, आजनायें जिसका जी चाहै ॥ श्री ॥ ३ ॥ श्री जिनवानी का शरवत, हे अमृतसे अधिक मिष्ट । भरके प्रेमसे प्याली, पीयें जो जिसका जी चाहै ॥ श्री ॥ ४ ॥ सुगुरू श्री चोथमल सुपसाय, कहे शंकर सुनो बन्धु । निश्चय सत्या सत्य का, करालें जिसका जी चाहे ॥ श्री ॥ ॥ ५ ॥ इति संपूर्ण.

श्लोक.

अहार निद्रा भय मैथुनं च, सामान्यमेत्तत पशुभिः नराणाम् ।
धर्मोहि तेपामधिक विशेषो, धर्मेण हीना पशुभिः समाना ॥१॥

तर्ज सोगए सुपना आया है.

वो नर पशु समान है, जो धर्म नहीं करता है ॥ टेर ॥
अमोल जन्म नरका पाई, विषय वासना मे दिया गमाई, धर्म
से प्रीति नहीं लगाई, वह दोनो जहांमें परेशान है, रोरो के वह
मरता है जो धर्म नहीं करता है ॥१॥ अहार नर पशु दोनो खाते
निद्रावश दोनो होजाते, मैथुन नर पशु दोनो कमाते, सम दोनें
का खान अरु पान है, जरा फर्क नहीं पडता है, जो धर्म नहीं
करता है ॥ २ ॥ मरने मे नर पशु दोनो डरते, प्रेम सुत
दारासे करते, इनके खातिर लडलड मरते, क्या नर क्या
हैवान है । क्यो तू अकड के फिरता है, जो धर्म नहीं करता
है॥३॥ धर्माधर्म को पशु नहीं जाने, हिताहित को नहीं पहिचाने,
२ भक्षाभक्ष का बोधनजाने, जिस नर मे इसका ज्ञान है,
भवसिन्धु से वही तिरता है जो धर्म सदा करता है ॥ ४ ॥
धर्म छोड अधर्म को ध्यावे, सो नर भव २ दुःख उठावे, वही
नर पशु सम कहलावे, जिसे धर्मका नही ज्ञान है, नर रूपमें
पशु फिरता है, जो धर्म नही करता है ॥ ५ ॥ सुगुरु श्री
चौथमलको सेना, नर जन्म को सफल करलेना, पृथ्वीराज
शंकर का कहना, जो नर करता धर्म ध्यान है, वही भवसागर
है, जो धर्म सदा करता है ॥ ६ ॥ इति सम्पूर्ण.

तर्ज पूर्ववत्.

जरा सुनियो ध्यान लगाय के, नर चाम काम नही आती ॥ टेर ॥ करि दन्त की चुडिये बनती भाई, ताको पहिने सर्व लुगाई । खिलौने बनवाते चित लाई, खुर्षान पे चढवाय के । खुशहो नारिया लेजाती, नर चाम काम नहीं आती ॥१॥ मृग चर्म पै मुनि आसन लगाते, शेर चर्मको शिवजी चहाते । अजा चर्मकी मशक बनाते, वह पानी भर पिलवायके, ठण्डी करदेते छाती, नर चाम काम नहीं आती ॥ २ ॥ वृषभ खालकी चडस बनावे, पानी खींच नर नाज पिलावे, सुतर खालमे हींग भरावे, जिसकी दालमे छौंक लगायके, दुनिया खुशहोके खाती, नर चाम काम नही आती ॥ ३ ॥ पशु चर्म की बने पनैया, खुशहो पहिने लाल कन्हैया, जिसके आते लाखो सोनैया, देखो निगाह लगायके, लख अकल गुम होजाती, नर चाम काम नही आती ॥ ४ ॥ सामर चर्म के गेटिस होते, गेडेकी ढाल वीर खुशहोते, पशु परोंको तीरोमे पिरोते, उन्हे धनुपबीच लगाय के, फिर भेदे अरि की छाती, नर चाम काम नही आती ॥ ५ ॥ पशु वाल खाल काममें आवे, अरु मूत्र औषध संग पिलावे, पशु शृंग की कांघिये बनावे, तुरत फुरत बिकजाय के, हरनारी पास वो पाती, नर चाम काम नहीं आती ॥ ६ ॥ हड्डी खांड

गढ गीरनारी, फिर लिनो संयम धारी, धारी सदा सुख नारी बचपन की मेरी प्रीत ॥ ३ ॥ ले केवल मोक्ष सिधाई, पृथ्वी-राज कथे सुख दाई, मैंने जोड सभा मे गाई, गाई सर्व ने सुनाईरे बचपन की मेरी प्रीत, क्यो तोडी मुझ से प्यारा बचपन की मेरी प्रीत ॥ ४ ॥ इति संपूर्ण

गजल कव्वाली

श्री जिन धर्म का डङ्का बजा आनन्द छाया है, भगे सब हार कर वादी, न सन्मुख कोई आया है ॥ टेर ॥ स्याद वादरा का सूरज, उदय भारत मे हुवा जिस दिन । भगा अज्ञान अधेरा, न सन्मुख कोई आया है ॥ १ ॥ होते कई यज्ञ भारत मे, पशुओ को होम देते थे । किया खडन हिंसाका न सन्मुख कोई आया है ॥ २ ॥ सत्य उपदेश तत्वो का, किया जिनराज ने जाहिर । भगे पाखंडी सब वहां से, न सन्मुख कोई आया है ॥ ३ ॥ कहा तक चल सके झूठी, दलील यह सत्य के आगे । बजाया धर्म का डंका, न सन्मुख कोई आया है ॥ ४ ॥ कथे पृथ्वीराज शंकर ये, शरण लेलो जिनका, प्रबल है तेज शस्त्रो का, न संमुख कोई आया है

॥ इति संपूर्ण.

गजल कव्वाली

मचा आनन्द अयोध्या में, नगर गर हो तो ऐसा हो,
भए श्री ऋषभ नाभि घर, शुभौसर होतो ऐसा हो ॥ टेर ॥
हुई जयकार त्रिभुवन मे, स्वर्ग से इन्द्र चल आए, करी स्तुति श्री जिन की, जो ईश्वर होतो ऐसा हो ॥ १ ॥ खबर चौतर्फ यह फैली, भए खुश नर नारी वनीता के, नसीबा नाभ का जागा, मुकदर होतो ऐसा हो ॥ २ ॥ त्यागकर राज्य लक्ष्मी को, लिया वैराग्य प्रभूजीने । हटाया कर्म का लश्कर, बहादूर होतो ऐसा हो ॥ ३ ॥ हुए जब ज्ञान के धागी, दिया उपदेश दुनिया को । तिराये बहुत पापी को, दिलावर होतो ऐसा हो । करी पृथ्वीराज शंकर यह, विनय श्री जी के चरनों मे । कहे हम जोड कर करकों, प्रभू गर हो तो ऐसा हो ॥५॥ इति

गजल तर्ज कव्वाली

कृपा कर श्री नाभ के नन्दा तिरा देगे तो बहेतर है ।
मुझे ख्वाबे गफलत से जगा देगे तो वहेतर है ॥ टेर ॥
परेशान हूं भव भ्रमण से अनादि काल से स्वामी ।
रहम कर भव विपता को मिटा देगे तो वहेत्तर है ॥१॥
काविल दोजख के हूं मैं गुन्हाओं की वदोलत से ।
अगर चे महेर वानी कर तिरा देंगे तो वहेत्तर है ॥ २ ॥
पडी है नाव भव सिंधु में भवर मे गोते खाती है ।

दया कर पार अब इसको लगा देंगे तो वहेत्तर है ॥३॥
फंसा जग जाल के अंदर निहायत है परेशानी।
इस मुश्किल से अब मुझको बचा देंगे तो वहेत्तर है ॥४॥
पडा सोता हूं गफलत मे निहायत्त वेखबर हूं मे।
ऐसी वे खबरी से मुझ को जगा देंगे तो वहेत्तर है ॥५॥
कैही दिनो का हू पियासा तुम्हारे दीद का स्वामी।
जाम महोब्रत का भर के पीला देंगे तो वहेत्तर है ॥ ६ ॥
सु गुरु श्री चौथमलजी की चरण सेवा है शिव देवा।
बैडा पार 'शंकर मुनि' का लगा देंगे तो वहेत्तर है ॥७॥
शशि वसु अङ्क शशि मे शहर 'वडोद' के अन्दर।
झडी ज्ञान की दीनवन्धु लगा देंगे तो वहेत्तर है ॥ ८ ॥

॥ इति समाप्त ॥

अवश्य पढ़िये!!!

पाठक महाशयों! आप लोकों को विदित हो कि इस पुस्तक के छपाने में सहायता देने वाले निम्न लिखित सज्जन महाशयों को श्री बडोद-जैन संघ की ओर से मैं हार्दिक धन्यवाद देता हूं॥

सहायक दाताओं के शुभ नाम

श्रीमान् चौदरी पुराजी हीरालालजी
" धूलाजी पुरालालजी
" हर्षचन्दजी डुलिचन्दजी
" नन्दाजी नाथुलालजी
" मन्नालालजी पन्नालालजी

निवेदक

आपका—दौलतराम पन्नालाल

जैनबन्धु प्रि. प्रेस, इंदोर.

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

१ वीतरागाय नमै ॥ अथ पंच पदारी वारनी लिख्यते

॥ दोहा ॥

हि निस भजे अरिहंतनै, सिद्ध भणी नवि सीस ।
गुण आगलै, अवभाया मुनि ईस ॥ १ ॥ साध
॥ साधना, लहै जिन लव ल्पाय । पांच पदानै
नितवंद सिरनाय ॥ २ ॥ उतम धर्म ना एहनी,
वनी एक । गूंथू माला गुणन की, विधरपू आण-
॥ ३ ॥ गाऊं धूर अरिहंत गुण, भाषा छन्द
सरस मन सुणजो सहु, आलस छोड़ि अंग ॥४॥

॥ छन्द जात भूजंगी ॥

गो मोच धाम भलो जोग लीधो, दया निधसार ।
ज्ञान दीधो, हातिच्यार हुवा अरिहंत ॥ अवैज्ञान
हिता, [illegible] ॥ १ ॥ छत्रा गुण भारी, गुणा
। [illegible] सेती [illegible] ोग भाजै ॥ हुवै
२ आपे अपार

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

अरिहंताय वीतरागाय नमै ॥ अथ पंच पदारी बावनी लिख्यते

॥ दोहा ॥

अहि निस भजे अरिहंतनै, सिद्ध भणी नवि सीस । आचार्य गुण आगलै, अवझाया मुनि ईस ॥ १ ॥ साध करे सिव साधना, लहै लिन लव न्पाय । पांच पदाने प्रेमसुं, नितबंद सिरनाय ॥ २ ॥ उतम धर्म ना एहनी, अखू बावनी एक । गूंथू माला गुणन की, विधस्पू आण-विवेक ॥ ३ ॥ गाऊं धूर अरिहंत गुण, भाषा छन्द भूजंग । सरस मन सुणजो सहु, आलस छोड़ि अंग ॥४॥

॥ छन्द जात भूजंगी ॥

लगो मोच धाम भलो जोग लीधो, दया निधसार । अभय दान दीधो, हातिच्यार हुवा अरिहंत ॥ अरवैज्ञान भारी नाहिता, हिअंत ॥ १ ॥ छत्रा गुण भारी, गुणा जोर छाजे । भव्याभाव सेती, उभै रोग भाजै ॥ हुवै देह मैल छरुड हजारं । अठै आगला । तेह आपे अपार

॥ २ ॥ सब वाणा मीठी भली पाचतीस। रति नाहिं वाकि तक्षा रागरिसा ॥ धरै नाहिं ससत्र नहि नारि धारं, मन छेषधारी कही कोन मारै ॥ ३ ॥ अग्या नाहि दोष जि- ण में अठारे, तीरे आप सामी घणा ओर तारे । जग दीठा भली भात जोई, कठे नाहि दिसे ईसो ओर कोई ॥ ४ ॥ धरे शुक्ल चोथो सदा आप ध्यान, सहु जीवने सारेना वासमान । जग वात जेती सहुतेहि जाने, अब नाहि कोई नहि वात छाने ॥५॥ ऋपि थाट सागे रहै ध्यान राता, दिल नाहि रीस अभैदान दाता । सदा भावरुडे करे स्वाम सेवा, मुनिराय चाखे भला ज्ञान मेवा ॥ ६ ॥ सठ च्यार इंद्र करे भाव सेवा, दीन रैन वांदे घणा ओर देवा । नरनारी सेवा करे ताहि निकी, जथा नाव जाको फले आस जिकी ॥ ७ ॥ ध्वने वाण बोले जैसे मेघ धारा, सुण च्यार कोसालगे वैनसारा । प्रभू वैन लागे अमीजेम प्यारा, नहि सके आवे लह भेद चारा ॥ ८ ॥ मिटे घोर भारि मिथ्यात मोटो, खरोमति भालोतजो मति खोटो । निसदिस पाले भला वरत नेमो, जिन आप कीधा कहै मीत जेमो ॥ ९ ॥ भजो देव ऐसा

भल भावे भेटो, मन वैन काया तथा पाप मेटो । धरो धर्म रुडो भला ध्यान ध्यावो, अखि होय जावो अठै नाहि आवो ॥ १० ॥ मनो वैन चाहे जसे मोर मेहै, सदा चंदसेती चकोर सनेह । तैसे चाहि राख सदा-स्वामतोरी, जिनराय वाहु वेहु हाथ जोडी ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

लखो गुण अरिहंतरा, हिवसिद्धरो ईद्धकार । भाषा छंद भुजंग भणो, वरणु सरस बिचार ॥ १ ॥

॥ छन्द जात भुजंगी ॥

धरि धर्म रुडोलहि मोक्ष धाम, करि होस पुरि रह्यो नाहि काम । सिरलोकरे जाय थभ्यासकोई, जग भाव सारा रह्यातेथ जोई ॥ २ ॥ जठै नाहि मातापिता अङ्ग जात, नहि वहन भाई सगा सणे न्यात । जरा मरण नाहि संजोग वियोग, सवै दुख टारया नहि रोग सोग ॥ २ ॥ हति काम क्रोधा वुझी लोभ हाम, विषै पंचईन्द्रि नहि संग वामै । लगै नाहि भूख नहि प्यास लागै, जठै वैरभाव कदे नाहि जागै ॥ ३ ॥ नहि रूप

रंग नहि गीत नाद, सुगंध दुगंध नहि को सुवादै । चहै नहि चीज नहि नीर चाखै, रतिमातक्यूहि कनै नाहि राखै ॥४॥ नहि राव रंक नहि राज नीत, ससि सूर नाहि नहि ताप सित । तिथ वार नाहि नहि नेम तामै, गूफा कूप बाडी नहि रैन माम ॥५॥ गुरु सिष नाहि नहि नाम गोत । छऊ काय नाहि मिटा पाप छोत, बिभो मुल नाहि वदै नाहि बैन, सभा मँड माहि करे नाहि सैन ॥ ६ ॥ जित बाल बूढा नहि है जवानै, विद्या भ्यास नाहि न बाचे बखाण । सबी वात जाणै विलोपे सवूही, कलम फेर पाछान आवै कबुही ॥ ७ ॥ अनंता हुवा है सिद्ध होसी अनंत, अरि अष्ट भारी करिताहि अंत, सहु जोत भेला रह्या है समाई, सदा सुख थाट नांहि है सक ड़ाई ॥ ८ ॥ दहे राग द्वेष वले दंभ दोह, मिथ्या भाव नाहि मिथे मद मोह । फखा नहि च्यार कोपे कलेस, अवेदी अभोगी अजोगी अलेस । ६ ॥ निराकार संथे ण संठाण नाहि, मनो बैन काया नहि सिद्ध माहि । सरिर्नहि च जोतीस रूप, अखै सुख भारी लह्या है अनूप ॥ १० ॥

सुख देवा तणा जोर भारी, कुमिना नहि बात अचि-

रमकारी ! करै तेह मेला सहुएकै कोर, जिकै नाहि आवै एक सिद्ध जोर ॥ ११ ॥ नहि कान नाकं, जिभ्या फरसनेत, काला नै पीला नै राता नै सेत । ऋषि भेस नाहि नहि रूप रेख, अलेखं अलेख अलेखं अलेखं ॥ १२ ॥ रक्षा अष्ट भारी गुण सुवीराजं, गीनानी वीना वात नावैगीराजं । भलो न बुरो तेथ कोईन भेखं अलेखं अलेखं अलेखं अलेखं ॥ १३ ॥ धरे सिद्ध ध्यान सदा भाव साचं, बीध लोक आगै गुणावाद वाचं । धरे धर्म रुडा खमा ध्यान धीरं, तिके वेग पावे भव निध तीरं ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

सिद्धगुण इमखंखेकसु, आख्या बुद्ध अनुसार । हिवैगाउमनउलसी, आचार्यईधकार ॥ १ ॥

॥ छंद चौपाई देशी ॥

गछ नाइक गिरवा गंभीर, सूरतरु निपरिसाहसधीर । सुत्तर सायरनी साख सुजाण, विधस्पुवाचै सरस ॥१॥ छाजत गुण रुडा छतीस, वारू करणी वीसद

चीज चाहिकै देता है। घरम चीज भवी धरै, आप खिपरै। बडा मुनि सर व्यापारी ॥ तपस्या० ७ ॥ सोभा सिणगारं, उर अण गारं। कथैनं कारं, वेद विद्या, आख्यानहि अजै। मैलनै मंजै, भम दुख भंजै। सुरसदा तज झामत मासा, वेस विलासा उरकी आसा सब छारी ॥ तपस्या० ८ ॥ नित पालै नीकी, नव लनजीकी। नवतह तिकी जाण जिके, आठा जर जारे। आठ उपारे, अठ अव धारैता जाति के। नित साला न्यारा खट तजस्सा-रोपंच सप्पारा अवधारी ॥ तपस्या० ६ ॥ छन्या छल छोहं, मथिया मोहं। दिलमै दोहंनेक नहि, अंग त्याग अठारै ममता मारै। बावन बारै संतसही, चूणै तिचाउ। विचरे वाउ, ईधिक उछा उडर डारी ॥ तपस्या० १० ॥ मारण ज्युवनमै, मस्तंमनमै। रयै सरनमै करकीलं, बनजु जिन वैना। अखिया ऐना, रिखि दिन रैना लहलीलं। सुरतरुनै मणि सम, पार्स उपम आधिक गुणेईमें उपगारी ॥ तपस्या० ११ ॥ सत विससुरंगा, उपै अंगानि-आदिसं। भल वाणी भाखे, दोखने दाखै। रातिन राखै सं, साधू गुण साचा वदिया वाचा, जंगम जाचा

सुविचारी ॥ तपस्या० भन० १२ ॥ आगमन्पाये उलसी, अखीया गुण अणगार । प्रेम धरी पद पाचमा, नित्त वंदे नरनार ॥ १ ॥ निरखो करी नव कारनो, धरो सदा घट ध्यान । जन्म जरा दुख जारनै, पामो गति प्रधान ॥ २ ॥ करि बावनी कोडस्यूं, आणी पर उपगार । रिखचंद्र भांखाजी चूपस्यूं, सुणत सदा सुख कार ॥ ३ ॥ सर्व गाथा ॥ ५३ ॥ छै० ॥

इतिश्री पंच परमेष्ठी निमस्कार बावनी सम्पूर्ण

॥ सुभं भवंतु कल्याण० ॥

अथ पांच पदारी लावनी लिख्यते० ॥

॥ दोहा ॥

जिणवर जपिये जोडिकरि, आणी मन आणंद । सिद्ध आचरज समरिये, उवझाया सुखकंद ॥ १ ॥ साधू गुण सागर सही, दे रुडा उपदेश । आपण परदो नातणा, काटै करम कलेस ॥ २ ॥ परमेसर पाचातणी, महिमा अधिक अपार । जस कीरत करता थका, पामै भव जल

चीज चाहिकै देता है। धरम चीज भर्त्री धरे, आप ईख परै। वडा मुनि सर व्यापारी ॥ तपस्या० ७ ॥ सोभा सिणगारं, उर अण गारं। कथेनं कारं, वेद बिद्या, आ-ख्यानहि अजै। मैतनै मंजै, भम दुख भंजै। सुरसदा तज ह्यसत मासा, वेस बिलासा उरकी आसा सब.हारी ॥ तपस्या० ८ ॥ नित पालै नीकी, नव लनजीकी। नवतह तिकी जाण जिके, आठा जर जारे। आठ उपारे, अठ अब धारैता जाति के। नित साला न्यारा खट तजस्खा-रोपंच सप्पारा अवधारी ॥ तपस्या० ६ ॥ छन्या छल छोहं, मथिया मोहं। दिलमै दोहनेक नाहि, अंग त्याग अठारै ममता मारै। बावन बारै संतसही, चूणै तिचाउ। बिचरे वाउ, ईधिक उछा उडर डारी ॥ तपस्या० १० ॥ बारण ज्युबनमै, मस्तंमनमै। रमै सरनमै करकीलं, बनजु जिन बैना। अखिया ऐना, रिखि दिन रैना लहलीलं। सुरतरुनै मणि सम, पार्स उपम आधिक गुणेईमे उप-[illegible]री ॥ तपस्या० ११ ॥ सत बिससुरंगा, उपै अंगानि-[illegible]दिसं। भल वाणी भाखे, दोखने दाखै। रातिन राखै रीसं, साधू गुण साचा बदिया बाचा, जंगम जाचा

सुविचारी ॥ तपस्या० धन० १२ ॥ आगमन्पाये तुलसी, अखीया गुण अणगार । प्रेम धरी पद पाचमा, नित वंदे नरनार ॥ १ ॥ निरणो करी नव कारनो, धरो सदा घट ध्यान । जन्म जरा दुख जारनै, पामो गति प्रधान ॥ २ ॥ करि बावनी कोडस्यूं, आणी पर उपगार । रिखचंद्र भांणजी चूपस्यूं, सुखत सदा सुख कार ॥ ३ ॥ सर्व गाथा ॥ ५३ ॥ छै० ॥

इतिश्री पंच परमेष्ठी निमस्कार बावनी सम्पूर्ण

॥ सुभं भवंतु कल्याण० ॥

अथ पांच पदारी लावनी लिख्यते० ॥

॥ दोहा ॥

जिणवर जपिये जोडिकरि, आणी मन आणंद । सिद्ध आचरज समरिये, उवझाया सुखकंद ॥ १ ॥ साधू गुण सागर सही, दे रुडा उपदेश । आपण परदो नातणा, काटै करम कलेस ॥ २ ॥ परमेसर पाचातणी, महिमा अधिक अपार । जस कीरत करता थका, पामै भव जल

पार ॥ ३ ॥ परघ करी पद पांचरी, भजै सदा निस भोर। सेवा मे सिवधामकु जम को लगै न जोर ॥ ४ ॥

॥ प्रथम श्रीअरिहंतरा गुण लिख्यते ॥

॥ छंद त्रोटका० ॥

नवकार गुणया सब पाप नसै, वंदतां गुण कीरत मोक्ष बसै। कवियां मन धार अस्क्रत करै, सुणतां सब वंछित काज सरै ॥ १ ॥ करणी करतुत अगाध करी, अरिहंत हुवा हण करम अरी। दस दोय गुणा करै जोर दिये, छवि देखत इंद्र दिणंद छिपै ॥ २ ॥ सबरां अति सय चोतीस सही, ललति पणतीस जवाण लही। जग जीव तणा सब भाव जिके, तसथा वरना सब जाण तिके ॥ ३ ॥ भणै अष्ट ईधक हजार भला, सुभ लक्षण है तन में सगला। प्रति हारज अष्ट लहै पवरं, इसडो जग माहि नहि अवर ॥ ४ ॥ नवगुण जिका मध्य दोष नहि, सुर सेवत है दिन रैन सहि। करणी धर साध अनेक कनै, मणि जेम सदा निरलेपनमै ॥ ५ ॥ दोई राग न द्वेष असेष दहै, रचना जगरी सब देख रहै। जग सागर

तारण पोत जिसा, उर माहि जपो अरिहंत इसा ॥ ६ ॥ नर देव घणां तिणकु निरखै, हिरदे हुलसै अति ही हरखै। कर जोड़ सदा तसलीम करै, परमेश्वर कैसहु पाय परै ॥ ७ ॥ ईक जो जन गांव निवांण अखै, चित चुप धरी भव जीव चखै। लहलीन थइ जिना माग लगै, भवनो भवभुखज दूर भगै ॥ ८ ॥ कवि कोड मिलि जिण छंद कहै, लवता गुणना नहि पार लहै। पति रंच कहै भुज दास महा, किम भात सकु गुण सर्व कहा ॥ ६ ॥ वनिता उर में जिम कंत वसै, उस वात सुण्या अत ही उलसै। चित मै एमलग्यो उवझाय पचीस गुणै दपता, गिरवा मरवा गुण गुप्ता ॥ १० ॥ सव सुतर ग्यान सुजाण सिरै, कलि में रवि जेम उद्योत करै। ललती शुद्ध वाणी दिये लवनै, भवसायरथी उधरे भवने। जिन मार गमी थिर थंभ जिसा ॥ ११ ॥ उवझाय जयो भव जीव ईसा, तुमनै चरणै। सिव दायक दास सदा सरणै ॥ १२ ॥

हिवै सिद्धारा गुण लिख्यते० ॥ छंद त्रोटका ॥

सव कारज सिझ गया सिधरा, वादिया सुत्रगे पनरै विधरा। उध होय गया अजरा अमरा, जथ नाहि भका

छिनहिजमरा ॥ १ ॥ भव सागर में गमणा भमणा, र-
खणा चखणा रमणी रमणा । दमणा खमणा नमणा द-
खजै, इतरा सिद्ध माहि नहि अखजे ॥ २ ॥ करुणादिक
पंच नहि करण, वादिया नहि पंच जिहा नरण । त्रिहुवेद
नहि नहि जोग तठे, जग रीत नही तिल मात जठे ॥ ३ ॥
संख जाणत देखत जोर सुखी, दिन रैन नहि छिन ताहि
दुखि । गुण आठ भला सिद्ध मै गुणीजे, थिरता मन का
याति रिशुणीजै ॥ ४ ॥

हिवे आचारजरा गुण लिख्यते० ॥छंद त्रोटका॥

आख्या जेत्रितियै पद आयंरीया, कर है सखरी
करणि किरिया । खटकाय तणां रिखपाल खरा, धुनस्यु
नितहि मत जोय धरा ॥ १ ॥ परबीन थित जन पंथ पकै,
चरचा करता कवु नांहि चुकै । छवतीस गुणा कर जोर
छजै, भजता निसा वीसर पाप भंजै ॥ २ ॥

हिवे उपाध्याजीरा गुण लिख्यते ॥छंद त्रोटका ॥

सिव साधन साध करै सवही, कर आलस नाहि
रहै कवही । विधसुं गुण सुतर मै वरणै, कहता सुझहुंत

मुणो करणै ॥ १ ॥ धर है सरधा जिन की धुरसै, अन पंथ तज्या सबही उरसै । मुनि पालत पांच माहा वरत, मल अष्ट थकी विध सुलडतां ॥ २ ॥ जग जीव तणी कर है जतनां, हिरदै विच नाहि वसै हतनां । सच बोलत वयण अपाप सही, निसचे करि सावज झुठ नहि ॥ ३ ॥ सुध दान जले तहीस्त सर्व, कणमा तनले अणादिधकवं । नव वाड धरै सुध सील नितं, ललना दिकसू नाहि होय लसं ॥ ४ ॥ छटि काय दई सब भूठछती, रिष राखत नाहि ज एक रती । मन की सब मार दई ममता, सखरी घट माहि ग्रही समता ॥ ५ ॥ व्रत पंच तणै नित भार वहै, रतनागर जेम अखो भरहै । दिल लाग रह्यो सिव पंथ दिसा, निर मुलत घोर अग्यान निसा ॥ ६ ॥ विचरै निस वास योग वटै, समता धन रास अपार खटै । उर धीरज ध्यान भलो धरहै, निज धाम करी जग में न रहै ॥ ७ ॥ जिन राज तणो नित जाप जपै, तप तेज करै रवि जेम तपै । दिन रैन वसै दिल माहै दया, मुनि राखत है सवहु तपया ॥ ८ ॥ करुना करिनै सुभ वैन कथै, मद मोह मिथ्या मन दुष्ट मथै । तजदी सव सोभ सदा तनकी, मुनि

भेट दई भ्रमना मनकी ॥ ९ ॥ निज आतमशे करनै निर-
णो, वैराग तणी चरचा दरणो । सबनै सुध भाव कहै स-
रिखा, मुंनि नाहि लखै कबही मिरखा ॥ १० ॥ सुध पालत
है जिनराज सिख्या, स्रमरा जिमहि ढत लेण भिख्या । दिल
स्याफ घणा गुणना दिरिया, भला पान करी सरङ्यू भ-
रिया ॥ ११ ॥ सुमते गुपते कर सोभ रह्या, दिल नारिपु
कंटक पाप दह्या । तपस्या करैं तावत है तनकुं, मुनि ठाम रखै
अपने मनकुं ॥ १२ ॥ सतरै विध संजम पाल सदा, अलगी
कर देवत पाप अदा । दोय वील परी सवरूप दलं, अति
भाक्रम फोर किये अवलं ॥ १३ ॥ सत वीस अछै गुणहु
सखरै, आरिया इम सुत रैन अक्षरै । ईक वील गुणा जिण
दोष अला, भल भात ताजि सुध लेत भिख्या ॥ १४ ॥
कजली वन मै करै कील करै, धरम आगम मै जिम हरष
धरै । बहु ज्ञान भणो बलहु बुधरै, उपदेस करी जगन
उधरै ॥ १५ ॥ कब काटन लागत है कनकं, तिम दाम न
लागत है तुमकं । दिल माहि वसै नित तीन ददा, करणी
लोपत मुल कदा ॥ १६ ॥ परमाद तजी विचरै पवनं, भव
माहि नहि करैहै भमनं । भव भंजन नै वडवीर भला, क-

रणी कर तांडित करम किला॥ १७ ॥ सतरू मितरू स-
म भात समै, समता करिनै सब वैण समै । तडका भडका
न करै तपनै, वस राखत है मनने अपनै ॥ १८ ॥ मछली
जल माहि रह मस्त, रिखते मरहै करणा रसतं । डिगलै
२ अघस्यु डरता, धरणी निरखै पग लो धरतां ॥ १९ ॥
नभ वंस परै न चहै नटवी, इण रीत फीरै पुरनै अटवी ।
कव कीचक मे न लिपै कमलं, इण रीत रहै जग में अम-
लं ॥ २० ॥ कछुवा जिम पंच दम करणं, चिरकाल लगी
धर है चरणं । रिखवादिक नाम सदा रटतं, छलनादिक
दोष थकी छुटतं ॥ २१ ॥ सुध च्यार सदा ग्रह है सरणं,
मुनि रति भली कहै मरणं । निसवासरते रिखराय नमं,
भव सागर में जिम नाहि भमं ॥ २२ ॥ सुद्ध छंद त्रोटक
जोड सही, कवि पाच पदा गुण माल कही । भव जीव
भणो नित भाव भलै, विघनादिक जु सब जाय थिलै ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

बारै गुण अरिहंतना सिद्ध गुण आठ सुजांण ।
आचारज छत्तीस गुण, मोटा मेरू समान ॥ १ ॥ उपा
ध्याय पंच वीस गुण, साधू गुण सत्तावीस । आठ ईधक

सो उपरै, सरब कह्या जगदीस ॥ २ ॥ विस्वा आगल च्यारसा, है सगळा दस दोय । नवबे लाक खालतां, आठ अधक सो होय ॥ ३ ॥ गुण माला गुणवाक ही नवकरवाली नाम । गुण विशनवकर वालीया सरने एको काम ॥ ४ ॥ समझ विना नवकारस्यू, जो उतरे भव पार । तो सरब जैनी जीवडा, पोहोत मुगत मंझार ॥ ५ ॥ परख करो पद पाचरी, करै सकीरत कोई । भैदुख दालिद्र भाजनै, सिवपुर पावै सोय ॥ ६ ॥ मिणिया तीन समेरना, तेहनो एह मरम । आष समा जिण आखीया, देव गुरु अरु धरम ॥ ७ ॥ पाच पदारी प्रेमसुं, करी वावनी एम । रिखचंद्र भांण चुपसु, पडो गुणो धरि प्रेम ॥ ८ ॥

इति पंच परमेष्टि नवकार महिमा गुण लावनी संपूर्ण० ॥ १ ॥

॥ अथ चोईस तीर्थंकरा को तवन लिख्यते ॥

रिखव जिणेसर रुडा भावसुं ॥ जिनवरजी छोडो वनीता रो राज । रिखेसर स्वामी । आद करी जिन धरमरी

। जिनवरजी । सारया थे आतम काज । शिवसर स्वामी । मोक्ष नगर में डेरा थां दीया ॥ जिनवरजी ॥ १ ॥ अ-जीत नर्मी सरव आयने । जि । कीयो छे परम उद्योत । रि । तिरण तारण भव जीवना । जि । जिम सायर बिच पोत शि० मो० ॥ २ ॥ संभव स्वामीजी तीसरा । जि । जाप जपु परभात । रि । तुमना में करसां हती । जि० सेन्राणी मस्त धात शि० मो० ॥ ३ ॥ इंद्र कल्याण्यां मुख आपने । जि । अभि नंदन कास्बार । रि । भोग नजीने जोग आदरयो जि । कियो घणाशो निस्तार रि० । मो० ॥ ४ ॥ सुमत माता मर्णा उपनो जि । बांद सोझांशे दियो पेट शि । सुमता सुमता दीनी लोकने जि । पोहोता थे मिव पुर ठेट शि० मो० ॥ ५ ॥ पद्म प्रभु जगदीपतो जि । ली-नो मे संजम भार शि । करम हर्णी ने थया केवली जि । गाग्या भे तीरथ च्यार शि० । मो० ॥ ६ ॥ समरुं सुपारस्व माहणा जि । निस दिन ध्यान लगाय शि । आंकलो मन मे जिरणजी थे रम्यो जि । हुं सकडा मना गाय शि० । मो० ॥ ७ ॥ चंद्रा प्रभुजी चित मांहरे जि । निस दिन धारोट ध्यान शि । डरू सुर, देव न इतरुं जि । ज्यूं चकवा चन भांन शि० मो० ॥ ८ ॥ सुव इस दापन माहरे जि ।

ने वादणरो घणों कोड ॥ रि० ॥ लुल २ नै लटका करुं ॥ जि० ॥ रात दिवस करजोड़ ॥ रि० ॥ ६ ॥ सीतल सीतल कीया लोकने ॥ जि० ॥ मेटो छै तन मन ताप ॥ रि० ॥ ध्यान धरू नित आपरो ॥ जि० ॥ दुर कीया सरब पाप ॥ रि० ॥ मो० १० ॥ श्री हंस संजम आ-दरयो ॥ राज रमण रिद्धछुंड ॥ रि० ॥ दीपक मो कीयो चांनणो ॥ जि० ॥ परगट हुवा ईणमंड ॥ रि० ॥ मो० ११ ॥ वास पुजजी ने वारमा ॥ जि० ॥ थानै वादु धर राग ॥ रि० ॥ लोह चमक पाखाण मे ॥ जि० ॥ तमसु गयो छै मन लाग ॥ रि० ॥ मो० १२ ॥ विमल विमल गुण आपरा ॥ जि० ॥ पाम्या थे सुख अनंत ॥ रि० ॥ सिवगत के रासा सता ॥ जि० ॥ वादु सदा इधर खंत ॥ रि० ॥ मो० १३ ॥ धरम धरम उर धारीये ॥ जि० ॥ कीयो थे धरम प्रकास॥ रि० ॥ वाहण जीसा भव जीवने ॥ जि० ॥ कीयो मिथ्या तम नास ॥ रि० ॥ मो० १४ ॥ संत जिणे सर सोलमां ॥ जि० ॥ सासणरा सि णगार ॥ रि० ॥ रतन चितामण सारसा ॥ जि० चिंतारा चुरण हार ॥ रि० ॥ मो० १५ ॥ कुथ बड़ी करणी करी ॥ जि० ॥ कीयो करम चकचूर रि ॥ ध्यान धरू सदा आपरो जि ॥

गाह उगतें सुर रि० मो० ॥ १६ ॥ अरनी न चक्री छै सातवा जि ॥ वरताई खटखड आंण रि ॥ सुख वीतसी नैथया सजती जि ॥ पोहोना थेसिव निरवाण रि० । मो० ॥ १७ ॥ मालि जिणेसर मोटका जि ॥ अरिगंजण अरिहन रि ॥ सरणागत भव जीवरा जि ॥ भय भंजण भगवंत रि० । मो० ॥ १८ ॥ मुनि सोव्रत सांमी वीसवा जि ॥ तुपसुं लीनो दिन रैन रि ॥ नाग लीना इम नादथी जि ॥ सजन लीना इण सेण रि० । मो० ॥ १६ ॥ चद्अर्मी झर जस रि ॥ भगत जुगत भरपूरसु जि ॥ वाहु सदाई भर प्रेम रि० । मो० ॥ २० । अनंतर गुण आपरा जि ॥ नामि नमु नित आपनै जि ॥ भगत जुगत भरपूर रि ॥ अन्य देव न अन्य तीरथां जि ॥ मे तो किया छै सबे दूर रि० । मो० ॥ २१ ॥ तोरण सूं पाछा वल्या जि ॥ छोडि नै राजुल नार रि ॥ कीरत फेली तिहुं लोक मे जि ॥ धन २ नेम कुमार रि० । मो० ॥ २२ । पारस पारस सारपा जि ॥ सीतल चदण जेम रि ॥ चरणे लगाने आप नै रि ॥ ते पाम्या सुख खेम रि० । मो० ॥ २३ ॥ वीर परिसाई जीतनै जि ॥ कीधो छे करसारी घात रि ॥ पावापुर में मुगत गया जि ॥ मक्त दीवालीरी रात रि० ।

पुस्तक मिलने का पता—

अरजनराम भोजक ब्राह्मण,

सरदार शहर।

श्री

॥ श्री वीतरागाय नमो ॥

जैन प्रतिबोध चिन्तामणि.

प्रथम भाग.

(१) अथ मंगलाचरण जैन स्तवन.

पहिले तो कहो जैजिनेन्द्र२ फेर नमो गुरु चरन ॥ टेर ॥ महावीर रिपु विडार ३ जयकार २ आशपूर मेरी प्रभु ३ मैं आयो तोरी शरन ॥ प. क. जै. ॥ १ ॥ तुही तात मात प्रभु३ तेराही आधार है ॥ कलुमे तेरे नामकी२ जहाज जीवको तिरन ॥ प. क. जै. ॥२॥ शांतिकर३ शांति प्रभु जरासी महर करके मिटा जन्म और जरा मरन ॥ प. क. जै. ॥ ३ ॥ सारा समाज बीच आज३ आनन्दकर२ ॥ तेरे जापकी हत्रा पापरूप पुंज हरन ॥ प. क. जै. ॥ ४ ॥ गुरु

पुस्तक मिलने का पता—

अरजनराम भोजक ब्राह्मण,

सरदार शहर.

श्री

॥ श्री वीतरागाय नमो ॥

जैन प्रतिबोध चिन्तामणि.

प्रथम भाग.

(१) अथ मंगलाचरण जैन स्तवन.

पहिले तो कहो जैजिनेन्द्र२ फेर नमो गुरु चरन ॥ टेर ॥ महावीर रिपु विडार २ जयकार २ आशपूर मेरी प्रभु २ मैं आयो तोरी शरन ॥ प. क. जै. ॥ १ ॥ तुही तात मात प्रभु२ तेराही आधार है ॥ कलुमे तेरे नामकी२ जहाज जीवको तिरन ॥ प. क. जै. ॥२॥ शांतिकर२ शांति प्रभु जरासी महर करके मिटा जन्म और जरा मरन ॥ प. क. जै. ॥ ३ ॥ सारा समाज बीच आज२ आनन्दकर२ ॥ तेरे जापकी हवा पापरूप पुंज हरन ॥ प. क. जै. ॥ ४ ॥ गुरु

हीरालाल प्रसाद, चोथमल कहे करजोडके दे शक्ति ऐसी नाथ मुझे धर्मके सन्मुख करन ॥ प. क. जै. ॥ ५ ॥

(२) स्तवन नेमनाथजीका.

रंगत–जसोदा मैया, अब न चराऊ तोरी गय्या ॥

सेवादे मैया नेम कुंवर तोरा जैया ॥टेर॥ सावली सुरत मोहनगारी यादव कुलमें अवैया ॥ पशु जीवपर महर करीने, प्रभु गिरनार चढैया ॥ चढैया मैया, नेम कु० ॥ १ ॥ अमृत सरीखी वाणी थारी, सुणत प्रेम जगैया ॥ परउपकारी साहिब प्यारा, निरख्या नैन ठरैया ॥ ठ. मै. ने. ॥२॥ सुर इन्दर तोरी सेवा साधे, सुमर्यां सुख सवैया ॥ समदविजैजीका नन्द लाडला, देख्यां हींस पुरैया पु० मै० ने० ॥ ३ ॥ साल गुणन्तर नग्रबमोरे, वैशाख कृष्णपखैया तेजमल कहे नेमप्रभुजी, मुझपे महर करैया ॥ क० मै० ने० ॥४॥

(३) स्तवन शांतिनाथजी.

रंगत उपरोक्त.

अचलादे मैया, शांतिकुवर तोरा जैया ।टेर। जरणी कुक्षे तीन ज्ञानसुं, प्रभुजी आप अवैया ॥ मातु नजरसुं मृगी मारको, सबही रोग हरैया ॥ हरैया, मैया, शांति० ॥१॥ सातावर्ती देश आप के जिणसुं नाम थपैया ॥ शांति कुंवर प्रभु शां तिसोलमा, जगमें नाम दिपैया ॥ दि० मै० शां० ॥२॥ शांति जापजो मनमें धारे, आरत रोग जवैया ॥ विश्वसेनजीका लाल कन्हैया, सूमर्या जसबढैया ॥ ब० मै० शां० ॥३॥ साल गुणन्तर मास वैशाखे, नम्र बमोरे अवैया ॥ तेजमल कहे शरणे आयो, शांति शांति करैया ॥ क. मै. शां. ४

(४) स्तवन पारसनाथजी.

रंगत उपरोक्त.

भामां दे मैया, पार्स नमत तोरा पैया ।टेर।

चौंतीस अतिसा प्रभुजी सोहै, वाणी गुण गजैया ॥ अजब छटा तोरी कहीय न जावे, चौसट इन्द्र सेवैया ॥ सेवैया मै. पा. ॥१॥ तावतिजारी कोढ बिमारी, दाळिद्र दूर जवैया ॥ भूत प्रेतने डाकण शाकण, पारस नाम भगैया ॥ भ. मै. पा. ॥२॥ पुरशा दाणी पार्स विख्याता, तीन लोक मोवैया ॥ अश्वसेन राजाजीके नन्दन, सुमर्या सुक्ख सवैया ॥ स. मै. पा. ॥ ३ ॥ साल गुणन्तर मास मधूमें, डूगर ग्राम अवैया ॥ तेज मल कहे प्रभुजी मोने, भवजल पार करैया ॥ क. मै. पा. ॥ ४ ॥

(५) स्तवन महावीरजी.

रंगत उपरोक्त.

त्रशलादे मैया, वृधी करत तोरा जैया ॥ टेर ॥ दशमा स्वर्गसे चवकर प्रभुजी, माता कुक्ष अवैया ॥ हाथी घोडा अरु माल खजाना, भूप-

ति राज बधैया ब. मै. वृ. ॥१॥ चौ'ाट इन्द्र उ-च्छव कीनो, दिन२ तेज सवैया ॥ वृधी करण वृध मानजी, मिलकर नाम थपैया ॥ थ. मै. वृ. ॥ २ ॥ तीस वर्ष प्रभु घरमे रइया, संजमले तप तपइया ॥ कर्म चरने केवल पाया शिवपुर बेग वरैया ॥ व. मै. वृ. ॥ ३ ॥ सासण नायक वीरजिनेश्वर हृदय आप बसैया ॥ सीदारत रा-जाजीके नन्दन वृधी वृध करैया ॥ क्र. मै. वृ. ॥४॥ गुरु हमारा इन्दरमलजी डूंगरे ग्राम अवै-या ॥ तेजमल कहे चैत गुणन्तर आनन्द रंग बधैया ॥ ब. मै. वृ. ॥ ५ ॥

(६) स्तवन ऋषभदेवजी.

रंगत उपरोक्त.

मुरांदे मैया, प्यारा लागे छे तोरा जैया ॥ मुरांदे मैया वाला लागे छे तोरा जैया ॥ टेर ॥ मस्तक मुकुट कानाजो कुन्डल तिलक ललाट

लगैया ॥ रतन अंगनिया रिमझिम खेले, त्रिलो-
किको रिझैया ॥ रिझैया. मै. प्या. ॥ १ ॥ कोई
इन्द्राणी लाड लडावे, कोइ एक ताल बजैया ॥
कोई नृत्य करे प्रभु आगे, नाचे थाथक थैया ॥
थय्या. मै. प्या. ॥२॥ रिमझिम रिमझिम बाजे
घूघरू, ठम ठम पांव धरैया ॥ द्दग खेल खेलीने
होगये, आतम खेल खेलैया ॥ खे. मै. प्या, ॥ ३ ॥
निज जननीने सबसे पहिले, शिवपुर पाठ पठैया
चौथमल कहे नित उठ ध्याऊं ऐसे ऋषभ क-
न्हैया ॥ क. मै. प्या. ॥ ४ ॥

(७) स्तवन उपदेशी जोबन पच्चीसी.

रंगत–रागद्वेश दोई खेकरणां, वन्दु सोलेई
जिन सोवन वर्णा पुन जोगे नरभव लियो टाणो,
ो खरोरे धर्म पाप खोटो जाणो खरो खबर
न गाता खावे, पण गयोरे जोबन पाछो नहीं
वे ॥ १ ॥ टेर ॥ जोबन गमाई बूढो होय बैठो

वळे पूरो मिथ्या माहे पेठो ॥ पाछे परभव माहे घणो पछतावे ॥ पण. ग. जो. ॥ २ ॥ थारे हाथ कडा कानामें मोती, ओढतो थुरमाने पीताम्बर धोती काचदेखीरने भेख बणावे ॥ प. ग. जो. ॥३॥ दुगदुगीने सोनारा डोरा, वले रुप चूंप डिल मांहे गोरा ॥ शेलारा जामा पेरसाता पावे ॥ प. ग. जो. ॥ ४ ॥ घणां घेरारा पेरता आछा वागा, लपेटा उपरणीरा वन्द लागा ॥ छोगा मेली चोवटे सेल जणावे ॥ प. ग. जो. ॥ ५ ॥ केशभमर हुंता थारा काला, गला मांहे पेरता मोत्यांरी माला ॥ मुख नागरवेलरा बीडा चावे ॥ प. ग. जो. ॥ ६ ॥ बांधता पागांसर चीरा सरपेचां माहे जडिया हीरा ॥ मूछ मरोडे कोया चढावे ॥ प. ग. जो. ॥ ७ ॥ उना भोजन तुरत तयारी, आंबा अथाणाने तरकारी ॥ वस्तु भावे तिको मंगावे ॥ प. ग. जो. ॥ ८ ॥ दिन दिनरी

पोशाक न्यारी, यातो छउरततरी वले न्यारी न्यारी ॥ सुरत घणी जारी सुहावे ॥ प. ग. जो. ॥९॥ जेसी कुगुरुतणी वाणी, तोडावे फूल कुटावे पाणी ॥ मरीने माढी गत जावे ॥ प. ग. जो. १० मसरुरी गादीने तेवड तकिया येतो लोग माणस माहे बडा मुखिया ॥ करजोडी जीने शीश नमावे पण. ग. पा. ॥११॥ घररी घणियाणी रातीमाती, माहे वैटा वहुने न्याती गोती ॥ राते घणा पहरे न वेष बणावे ॥ प. ग. जो. ॥ १२ ॥ साध कहे सुणोरे भाया, संसार सुपना केरी माया ॥ वादल ज्यु माया विरलावे ॥ प. ग. जो. ॥ १३ ॥ कामण हुंती कंचन वर्णी, भोगी पुरुषारा मन हरणी ॥ धणी पण तिणरो गायो गावे ॥प. ग. जो. १४॥ ... नारीरे वश पडिया, निकल न सके जंजीरा ... ॥ स्त्री काजे धन कमावे ॥ प. ग. जो. ॥१५॥ ठठामे ठेल परीवाली, थारी प्रीतम प्रति

नहीं पाली ॥ तुर्त लुगाई दूजी लावे ॥ प. ग. जो. ॥ १६ ॥ थारा कपडा गेणा पेरे नारी दूजी, तोने धर्मरी बात नेणा नहीं सूझी ॥ त्रिया जोवे ने नर्कमे दुःख पावे ॥ प. ग. जो. ॥ १७ ॥ तुतो रुप जोबनमे गर्वाणी, तो सरीखी नारी होय गई जाणी ॥ तु उभो घर मेली जावे ॥ प. ग. जो. ॥ १८ ॥ साध कहे सांभल हे बाई, तोने भांत२ कर समझाई ॥ तुंतो वासी टुकडो खावे ॥ प. ग. जो. ॥ १९ ॥ तीज तमाशा भरता मेला, जटे लोग लुगाई घणा हुता भेला ॥ गेली लुगायां गाल्यां गावे ॥ प. ग. जो. ॥ २० ॥ खेलतारे गेरिया होली, जटे अलगण पाणी घणो ढोली ॥ जटे होलीमे अकल सऊ जावे ॥ प. ग. जो. २१ काया माया दोन्यों काची, एतो साध कहे ते सब साची ॥ कारमी रीधने छटकावे ॥ प. ग. जो. ॥ २२ ॥ दिन२ बुढापो नेडो आवे, पण साध स

चेतावे ॥ गेले खर्ची विना रीतो जावे ॥ प. ग. जो. ॥ २३ ॥ कुदेव कुधर्मरो रमियो थारे हिंसा धरम दिलमांहि बसियो ॥ दया धर्म दिलमांहि नहीं भावे ॥ प. ग. जो.॥२४॥ संसाररी मायासेर बाजी, जीव देखी देखीने होय गयो राजी ॥ जोबन जातां वार न लगावे ॥ ग. जो. ॥ २५ ॥ रिख रायचन्दजी कहे सुणो भव जीवो, थे सूख चावोछो अतिवो ॥ तो दया धर्म थारे दिल भावे ॥ ग. जो. पा. ॥ २६ ॥

(८) अथ सझा उपदेश ३५ सी.

मोह मिथ्यात्वकी नीदमे जीवा सूतो काल अनन्त ॥ भव२ मांहे तु भटकियो जीवातें सांभल विरतंत। जीवा तुतो भोलोरे प्राणी इमि रुलियो संसार ॥ १ ॥ अनन्त जिन हुआ केवली जीउत संगयों ज्ञान अगाध ॥ अणी भवथी लेखो लियो जीवा थारी न कही कोई याद ॥ जीवा

तुतो० ॥ २ ॥ परथी पाणी अगन में जीवा, चौथी बाऊ काय ॥ एक एकणी कायमें जीवा, काल असंख्या जाय ॥ जीवा तुतो ॥३॥ पाचवी काय वनस्पति जीवा, साधारण प्रत्येक ॥ साधारणमें तु त्रस्यो जीवा, ते विवरो तु देख ॥ जीवा ॥ ४ ॥ सुई अग्रनी गोदमें जीवा, सेणी असंख्या जाण ॥ असंख्या ताप रतलक्या जीवा, गोला असंख्य प्रमाण ॥ जीवा. ॥ ५ ॥ एक एक गोला मधे जीवा असंख्या शरीर ॥ एक एक शरीरमें जीवा, जीव अनन्त बताया श्रीवीर जीवा. ॥ ६ ॥ तिण माहेथी जिवडा जीवा, मोक्ष जाय डग चाल ॥ एक शरीर खाली न होवेई जीवा, न होवई अनन्तइ काल ॥ जीवा ॥ ७ ॥ एक२ भवीने संगई जीवा, भवी अनन्ता होय ॥ वली एहं विशेष तेहना जीवा, जन्म मरण तु जोय ॥ जीवा ॥८॥ दोय घडीकाची माहे जीवा, पेंसट सहस्रशतपांच

॥ छत्तीस अधिकज जाणजो जीवा, येहे कर्मानी खांच ॥ जीवा ॥ ९ ॥ छेदन भेदन वेदना जीवा, नर्की सही बहु मार ॥ तिनसेती निगोदमें जीवा, अनंत गुणो विस्तार ॥ जीवा तुतो. ॥ १० ॥ एकेन्द्री माहिथी निकली जीवा, इन्द्री पाळ्यो दंग्य ॥ लवपुन्याई तेयनी जीवा. तेथी अनन्ती होय ॥ ॥ जीवा० ॥ ११ ॥ इमि ते इन्द्री चोइन्द्री जीवा, होय२ लाखही जात ॥ दुख दीठा संसारमें जीवा, सुणता इचरज वात ॥ जीवा तूतो ॥ १२ ॥ जल-चर थलचर खेचरु जीवा, उरपुर भुजपुर जून, ताप सीत तरशा सही जीवा, दुख मिटावे कूण ॥ जीवा० ॥ १३ ॥ इमि रडभडतां संसारमें जीवा, पाळ्यो नर अवतार ॥ गर्भावासमें दुखसया जीवा, करतार ॥ जीवा ॥ १४ ॥ मस्तकतो हेटो जीवा, उपर होवे पांव ॥ आख्यांविच मूठी रेवे जीवा, विष्टाना घर माहे ॥ जीवा ॥ १५ ॥

बाप वीर्य माता रुद्रनो जीवा, योथेलीनो आहार, भूलगयो जन्म्यां पछे जीवा, शेखी करे जुहार ॥ जीवा ॥ १६ ॥ आठक्रोड सुईलाल करी जीवा, चांपेरुरुं माहि। अठगुणि तिणसू वेदना जीवा, सहीतें गर्भावास ॥ जीवा ॥ १७ ॥ जन्मता क्रोड गुणी कही जीवा, मरतां क्रोडा क्रोडी जन्म मरण नी जीवने जीवा, ए छे मोटी खोड ॥ जीवा १८ ॥ देश अनारज उपन्यो जीवा, ईन्द्री हीणी थाय ॥ आउखो ओछो होवई जीवा, धर्मन कीयोजाय ॥ ॥ जीवा ॥ १९ ॥ कदियक नरभव पावियोजीवा, उत्तम कुल अवतार ॥ देहनिरोगीपावी नही जीवा, यूंही खोयो जमार ॥ जीवा ॥ २० ॥ ठगपासीगर चोरडा जीवा, झीमर कसाई न्यात ॥ उपजीने मूओ नही जीवा, असी नहीं कोई जात ॥ ॥ जीवा ॥ २१ ॥ चवदेही राजुलोकमें जीवा, जन्म मरणनी खोड ॥ बालागरमात्रपण, ईजीवा,

असीन हीरही कोई ठोड ॥ जीवा ॥ २२ ॥ यही जीव राजा हुओ जीवा, हस्ती वंधाया वार ॥ कदीयक कर्मोके उदे जीवा, नमिल्यो अन्न उधार ॥ २३ ॥ इमि भ्रमतां संसारमें जीवा, पाम्यो सामग्रीसार ॥ आदरने छिटकायदे जीवा, जाय जमारो हार ॥ जीवा ॥ २४ ॥ खोटा देव जुहार न जीवा, लागो कुगुरु केड ॥ खोटा धर्मने आद-री जीवा, फिरे बहुं गत फेर ॥ जीवा ॥ २५ ॥ कबहुक तु नर्के गयो जीवा, कबहुक हुओ देव ॥ पाप पुन्य तुल्य हुआ जीवा, लागी मिथ्यातनी टेव ॥ जीवा ॥२६॥ ओघाने वलि मोपती जीवा, मेरु जेवडा लीध ॥ करिया करतुत लो बाहिरो ा, एको काज न सीध ॥ जीवा ॥ २७ ॥ ज्ञान गमायने जीवा, नर्क सातमीं जाय ॥ दे पूर्वना भण्या जीवा, पडी निगोदमे जाय ॥ जीवा ॥२८॥ श्रीभगवंतजीनो धर्म पायां पछे

जीवा, गुंझी न जावे फोक ॥ कदीयक परतल होय तो जीवा, अर्ध पुद्गलमें मोक्ष ॥ जीवा ॥ २९ ॥ सूक्षमने वादरतणी जीवा, मेलुं वर्गणा सात ॥ एक पुद्गल प्रावर्तन होवई जीवा, येछे झीणी बात ॥ जीवा ॥ ३० ॥ पाप आलोई आपणो जीवा, आश्रव नाळा रोक ॥ जाय अर्ध पुद्गल माहे जीवा, अनन्ती चोवीसी मोख ॥ जीवा ॥ ३१ ॥ अनंता जीन मुक्ते गया जीवा, टाली आतम दोष ॥ नगयान जावसी जीवा, एक मुलाना मोक्ष ॥ ॥जीवा ॥ ३२ ॥ एवा भाव सूणी करी जीवा, अजहु न चेत्यो नाय ॥ ज्यों आयो ज्योंही गयो जीवा, लख चौरासी माहि ॥ जीवा ॥ ३३ ॥ कईयक उत्तम चेतिया जीवा, जाण्यो अथिर संसार ॥ सांचो धर्म सरधी करि जीवा, पहुंच्या मुक्त मुझार ॥ जीवा ॥ ३४ ॥ दान शील तप भावना जीवा, इणसूं राखो प्रेम ॥ शिवरमणी

निश्चै मिले जीवा, ऋषी जेमलजी कहे एम ।३५।

(९) अथ आचार छत्तीसी.

॥ दोहा ॥ गुरुसम जगमें को नही, तरण तारणकी जहाज ॥ सतूगुरु पाया बिना, सर्व काज अकाज ॥ १ ॥ गुरुके नामे भूलिया, तेतो मूरख मूढ ॥ चतुर थई निरणो करो, छोडो कुलकी रुढ ॥ २ ॥ गाथा ॥ आगम अर्थ अनुपम बाणी परमारथना भरिया ॥ साध आचारजो पूरो दाख्यो, तो भिन२ निरणो करियो ॥ साधुजी थे सूत्र भणी सूं कीनो ॥ १ ॥ आधाकर्मी आरनी छोडे भरभर पातरा लावे ॥ आंख मीचीने करे अंधारो, तो रसना नागरदीखावे ॥ साधुजी ॥ २ ॥ आधाकर्मी थानगमें रेता, सावज किरिया लागे ॥ दरबे भेखन भावे थी, तो पंच महाव्रत भांगे ॥ साधुजी ॥ ३ ॥ वीरमुज तरी पृथ्वी कायमें, जीव असंख्य

बतावे ॥ माहे बैठा हो मुनीश्वरजी, थे मरडो किम नकावे ॥ साधु० ॥ ४ ॥ जायगां नीपावे न छान छवावे, चुनो देवावण ढुको धर्मरे कारण जीव हणावेतो, दया धर्म शुं चुंको ॥ साधु० ॥ ५॥ वेलातेलादिक तप अठाई, मासखमणादिक ठावे ॥ आधाकर्मी वस्त भोगेतो, युं कई एर गमावे ॥ साधु० ॥६॥ आचारंग सुत्रमाहि बोले मुल गुण वृत भांगे ॥ मुल भांगे संजम वृक्षजो केरो, तो मुक्तिना फल केम लागे ॥ साधु० ॥ ७ ॥ आधाकर्मीका दोषण भारी, कियो सुत्र भगोतीमुजारी ॥ वर्जिया दशमी कालक उतरा दिनमें, तोरुलसी अनंत संसारी ॥ साधु० ॥८॥ वस्तर पातर आरजो स्थानग, मोलरा साधुने वरज्या ॥ अतरा ऊपर ऊदक दान राखेतो, ते मुनीने किम सरज्या ॥ साधु० ॥ ९ ॥ कलाररो घर वरज्यो साधुने, आरपाणी कोई लावे ॥ न·

सितके सोलेमें उद्देश, चौमासी प्राश्चित आवे ॥ साधु० ॥ १० ॥ कीडयांनी परे पंगत बांधे, सगला तिण घर जावे ॥ लोट पातरा पूरण भरने, पीठ ढाकने आवे ॥ साधु० ॥ ११ ॥ वलि दुजे दिनतो नित पिंड लागे, ग्रस्थीयां पासुंरखावे ॥ ठाम खाली हुओ काचो पाणी घाले, तीजो पिच्छाति दोष लगावे ॥ साधु० ॥ १२ ॥ जीमणवारके दुजे दिन उठी, ऋषी पातरा लेजावे ॥ ग्रस्थीतो जाणे आया मीठाने, मुनीवरने ताजा भावे ॥ साधु० ॥ १३ ॥ लघुताई लागे जिनमार्गनी, योतो दुषण भारी ॥ पापणी रसनाने वस पडिया, तो करसी जान खुवारी ॥साधु०॥१४॥ ।गद देवेने वळी दिरावे, ग्रस्थीसुं परचो मांडे ॥ नोकरवारी ग्रस्थीने देवे, तो साधुनो सांग जो भांडे ॥ साधु० ॥ १५ ॥ पूंजणीसुंतो दया उपजसी, निरवद काम जो करणो ॥ अणीसर

धारे लेखे जणीने, अन्न पाणी पण देणो ॥ साधु. ॥ १६ ॥ पाणी दिया अपकाय उबरसी, अन्नदियां सब संहारे ॥ अणीसर धारे लेखे तणीने, नही रेणो गृस्थीसूं न्यारो ॥ साधु. ॥ १७ ॥ कोई भोलो गृस्थी भेद न जाणे, गुरुजी कृपा करी माने देवे ॥ वीर कयाई भेष जो धारी, परमारथना नहीं विवेक ॥ साधु. ॥ १८ ॥ सूत्र नसीतमें आगम भाख्यो, साधु ढीला पडसी ॥ पूजणी नोकरवारी गृस्थीने देसी, तो पेट भराई करसी ॥ साधु. ॥ १९ ॥ सदोष थानग बाधीन बैठो, जाणे चेला चेली सुख पासी ॥ आऊखो आईने घेटी पकड सीतो, पाछे घणो पछतासी ॥ साधु ॥ २० ॥ खुशामदी तो करे दातारनी, सेवक सम आधीनो ॥ सरस अहार खावणरे कारण, हराम परे चित्त दीनो ॥ साधु० ॥ २१ ॥ आप बराबर करवारे कारण, अछत्ता

दोष वतावे ॥ सूत्र आवसग मांहे देखेतो बोध बीज नही पावे ॥ साधु०॥२२॥ सूधी सिख कोई दासजो देवे, तो गुरु गुरुणी समगणवी ॥ साध आचार वतावे कोईतो, तणीपर रीसन करणी ॥ साधु० ॥ २३ ॥ चोमासो उतर्यां एकमके दिन साधुने बिहार जो करणो ॥ अधिको रवेतो दोषण लागे, आचारंग मोह्र नरणो ॥ साधु० ॥ ॥ २४ ॥ मोंललिरावे वस्तर पातर, सखराने नखरो वतावे ॥ उतरादिन सुतरमें देखो, तो साधु पणो उठजावे ॥ साधु० ॥ २५ ॥ वेचातो ले जीरो दामजो काटे, कोगुरू दल्लाल जाणो ॥ साघपणो नही दोन्यारे माही, कुडीमत करो ताणो ॥ साधु० ॥ २६ ॥ दाम दिरावे आमना ने, जिणरो तो दोषण मोटो ॥ तणीने वन्द- भावसुं करसी तो, प्रत्यक्ष पडसी टोटो ॥ ॥ साधु० ॥ २७ ॥ आवसगमाहि विस्तारजो

न्नाण्यो, ज्ञाता सुत्रमे साखी ढीलाने नमतां स-
मकित जावेतो, भगवंत काणनु राखी ॥ साधु०
॥ २८ ॥ अठारे जातका चोर जो चाल्या, एक-
ण चोरकी लारे ॥ परसण व्याकरणमें असाधुने
नमतां. समकित रत्न जोहारे ॥ साधु० ॥ २९ ॥
स्नानतो सव अंगजो धोवे, देश जो मुख
परवारी ॥ ततो अनन्त संसार मेरुलसी, कियो
छटा अधीनमें विचारी ॥ साधु० ॥ ३० ॥ आं-
खां माही काजल घाले, साद साधवी कोइ ॥
वीर कयाये भेष जो धारी, दशमी कालिकलो
जोई ॥ साधु० ॥ ३१ ॥ बहुतवार जीव संजम
लीनो, साधुको नाम धरायो ॥ साधपणा विना
गर्जनी सरसी तो, युही जन्म गमायो ॥ साधु०
॥ ३२ ॥ अहो अज्ञानपणो जीवजो केरो, ज्ञान
लोचन डपटायो ॥ मोह वश पडियो ममता
माहि, लालचमें लपटायो ॥ साधु० ॥ ३३ ॥

सुत्रतणी सिर आणने धारि, जाणतो वातने ठले आचारंगनो आवे रेलो तो, चर्चा आगी मेलो ॥ ॥ साधु० ॥ ३४ ॥ श्रावकने पण करणो निरणो, समकित कणि विध आवे ॥ शुद्ध आचारथी पालो स्वामी, तो थारे मारे गुणारी सगाई ॥ साधु० ॥ ३५ ॥ साध साधवी सीख सुणीने, द्वेष कोई मति करजो ॥ मेतो सीख दिवी निज जीवने, बीजा विचारीने लीजो ॥ साधु० ॥ ३६ ॥ पुज्य गुमान चन्द्रजीरा प्रसाद सु, सीख सुत्र थी आणी ॥ रत्न चन्द्रजी जोडी पालीमें, सुणजो भवियण प्राणी ॥ साधु० ॥ ३७ ॥

(१०) स्तवन आचार वावनी

दोहा ॥ वर्धमान शासन धणी, गुणधर पांय ॥ दिया जो माता वीनवु, वंन्दो नमाय ॥ १ ॥ ठाणा अंगमें चालिया, श्रावक चार प्रकार ॥ मात पिता सरिका कया,

साधां ने हितकार ॥ २ ॥ करडी काठी सीख दे, साधांने हितकार ॥ ढीला पडवा दे नहीं, ते सुणजो विस्तार ॥ ३ ॥

॥ गाथा चालु ॥ जी स्वामी घर छोडीनें नीसर्या थेतो लीदो संजम भारजी ॥ जीस्वामी पंच महा वृत पालजो मति लोपजो जिणजी री कार ॥ जीस्वामी अर्ज सुणो श्रावक तणी ॥ १ ॥ जीस्वामी तप जप संजम आदरो, नि- द्राने विकथा निवारजी ॥ जीस्वामी वाईस परीसा जीतजो, येतो चालणो खांडानीधार ॥ जी स्वा० (अर्ज) ॥ २ ॥ जीस्वामी गृस्तीसूं मोह मत राखजो, थेतो लीजो सुध मन आरजी ॥ जीस्वामी असुजतो आर देखने पीछा, फर जाजो तणी वारजी ॥ जीस्वा० (अर्ज) ॥ ३ ॥ जी स्वामी कोइक वेरासी थाने लाडवा, कोइक बु- रोने खीरजी ॥ जीस्वामी कोइक वेरासीसु खा

टुकडा, थेतो मत होजो दिलगीरजी ॥ जीस्वा० (अर्ज) ॥ ४ ॥ जीस्वामी कोईक करसी थाने वन्दना, कोईक नमासी सीसजी जीस्वामी कोईक देसी थाने गालियां, मती आणजो रागने रीसजी ॥ जीस्वा० (अर्ज) ॥ ५ ॥ जीस्वामी छल छिद्र जोवो मती, मती आणजो राग ने रीसजी जीस्वामी क्रोध खखाय करजो मती, खम्या करणी विशेशजी ॥ जीस्वा० (अर्ज) ॥६॥ जीस्वामी जंतर मंतर करजो मती, मत करजो स्वप्न विचारजी जीस्वामी जोतिष निमत भाषोमती, मती लोपजो जिणजीरी आणजी ॥ जीस्वा० (अर्ज) ॥ ७ ॥ जीस्वामी रंग्या चंग्या रेणो नही, नही करणो देह श्रंगारजी ॥ ास्वामी केश श्रंगार वणावतां मुख धोवतां ाष अपारजी ॥ जीस्वा० (अर्ज) ॥ ८ ॥ जीस्वामी कपडा पेरो ऊजरा, भारी मोला चित

चावजी ॥ जीस्वामी साधुजी दीखे संणगारिया, लोगा माहि निन्दा थाय ॥ जीस्वा० (अर्ज) ॥ ए ॥ जीस्वामी वण्या वणाया वीदजुं, गोरोने फुठरा डुश्शरजी जीस्वामी मेल उतारे शरीरनो, साधुने लागो जंजालजी ॥ जीस्वा० (अर्ज) ॥१०॥ जीस्वामी चौमासो करजो देखने,स्थानक लोजो निचारजी ॥ जीस्वामी त्यां रेवे पुरुष अस्तरी, नही साधुतणो आचारजी ॥ जीस्वा० (अर्ज) ॥ ११ ॥ जीस्वामी संथारो करजो दे-खने. तपस्या करजो विचारजी ॥ जीस्वामी पाछे मन डिग जावसी, तोहंसेगा नरनारजी ॥ ॥ जीस्वा० (अर्ज) ॥ १२ ॥ जीस्वामी दोय साधु तीन आरज्या, विचरजो तणी कारजी ॥ जीस्वामी एक साधु दोय आरजा, मत करजो थे विहारजी ॥ जीस्वा० (अर्ज) ॥१३॥ जीस्वामी मेघ मुनीश्वर मोटका, कही धर्म रुची अणगारजी

॥ जीस्वामी कीडयानी करुणा करी वली, पहुच्या अनुत्र वेमाणजी ॥ जीस्वी० (अर्ज) ॥१४॥ जीस्वामी जोथारे छांदे चालसी, तोलोपो गुरांजीरी कारजी ॥ जीस्वामी डुष्टभाव राखोगातो, नही सरे गर्ज लगारजी ॥ जीस्वा० (अर्ज) ॥ १५ ॥ जीस्वामी वेरणने गया जुरसो, थे देखी नार्यां तणा रुपजी जीस्वामी साधपणाने छेदने, थारी तरसू जावोगा चुकजी ॥ जीस्वा० (अर्ज) ॥ १६ ॥ जीस्वामी कंठ कराधणी कारुने, थेतो रीझावसो नरनारजी ॥ जीस्वामी वेराग भाव आण्या विना, थारी नहीं सरे गर्ज लगारजी ॥ जीस्वा० (अर्ज०) ॥ १७ ॥ जीस्वामी पले वण कियां विना, परभाते करो विहारजी जीस्वामी नो आरहो न्योटको, नहीं साधुतणो आचारजी जीस्वा० (अर्ज) ॥ १८ ॥ जीस्वामी गृस्तीरे घरे वेसवो नहीं कारण विना कोई साधजी

॥ जीस्वामी सावद्य भाषा बोलवी नहीं, नातरा जोमयासुं कर्म बंधायजी ॥ जीस्वामी (अर्ज) ॥ १९ ॥ जीस्वामी मुडासूंवस्त निशेदने, मत करजो अंगीकारजी ॥ जीस्वामी वमियारी वांछा कुण करे, काग कुतरा तणो आचारजी ॥ जी-स्वा० (अर्ज) ॥ २० ॥ जीस्वामी आपतणी परसंसा करे, पेलापर घरे द्वेशजी ॥ जीस्वामी जामे साधपणो तोछे नहीं, चोडे सुत्र लेवोनी देखजी ॥ जीस्वा० (अर्ज) ॥ २१ ॥ जीस्वा-मी ओछी भाषा काडने, त्यां कर मुखसूं जोर जी ॥ जीस्वामी साधुजी अलमस्त रहे, विचा-र्या विना बोले कठोरजी ॥ जीस्वा० (अर्ज) ॥ २२ ॥ जीस्वामी उठंगण कारण विना, देवे पूठ पाठीया पीठजी ॥ जस्वाभी पुज कहे पूजा वसी, रेसी मुक्त मार्ग सुंडुरजी ॥ जीस्वामी ॥ (अर्ज) ॥ २३ ॥ जीस्वामी तिथी परभो तप

नीकरे, नही लोकतणी मुरजादजी ॥ जीस्वा· मी दोई ठक उठे गौचरी, पडया जीभ्मतणे स्वा· दजी ॥ जीस्वा० (अर्ज) ॥ २४ ॥ जीस्वामी ताकताक जावे गोचरी, वली लावे ताजा मालजी ॥ जीस्वामी अरस ऊपर नजर नही धरे, वली वणरयो कुन्दो लालजी ॥ जीस्वा० (अर्ज) ॥ २५ ॥ जीस्वामी एक घरे दो न्युटकां, नित लावे लगावण आरजी ॥ जीस्वामी नित पिड आरवेर्यां थकां, साधुने लागे तोजो अनाचारजी जीस्वा० (अर्ज) ॥ २६ ॥ जीस्वामी ऊंचे डोरे मोपती, पले वणरो नही ठीकजी ॥ जीस्वामी सांझ सवेर सुई रहे, इतो कणो विधमाने सी· खजी जी० (अर्ज) ॥ २७ ॥ जीस्वामी ग· छवाची सुंपरवो घणो, आवण जावण होयजी ॥ जीस्वामी लेणादेणा सटापटा, साधुने करणा नही जोगजी ॥ जीस्वा० (अर्ज) ॥ २८ ॥

जीस्वामी कुण बोलीने नटे, दुजो वर्तजो देवे खो-यजी ॥ जीस्वामी सांचाने जुठो करे, योतो सांग साधुरो होयजी ॥ जीस्वा० (अर्ज) ॥ २९ ॥ जीस्वामी प्राचित लागे सामठो श्रावक पण सांखी होयजी ॥ जीस्वामी ढेढा थका लेवेनही जारे परभव रोडर नही कोयजी ॥ जीस्वा० (अर्ज) ॥ ३० ॥ जीस्वामी खाय पीयने सुई रहे, इतो बेठा पर्मीकमणो ठायजी ॥ जीस्वा-मी वस्तर पातर राखे घणा, जाने जिनपासता केवायजी ॥ जीस्वा अ. ॥ ३१ ॥ जीस्वा मी नारी आवे एकली, अक्कर पद सीखण का-जजी ॥ जीस्वामी वली आवे रातकी, मती सी-खावजो मुनीरायजी ॥ जीस्वा० अ. ॥ ३२ ॥ जीस्वामी सावद्य भाषानी चोपियां, मंडावण मेरो लोकजी ॥ जीस्वामी पेडी जमावे आपणी, वेराग विना सब फोकजी ॥ जीस्वा० अ. ॥३३॥

जीस्वामी श्रावक मात पिता जसा, वळी सोख देवे भली रीतजी ॥ जीस्वामी जाने कांटा खीला सरीखा गणे, जाने फरफर करे फजीतजी जीस्वा० (अर्ज) ॥ ३४ ॥ जीस्वामी चवदे चुकावारे भूलिया, नवका नहीं जाणे नामजी ॥ जीस्वामी गाम ढंढेरो फेरावियो, योतो श्रावक मारो नामजी ॥ जीस्वा. (अर्ज) ॥ ३५ ॥ जीस्वामी ऐसा श्रावक जाणो मती, एतो श्रावक बार वृत धारजी ॥ जीस्वा- मी कष्ट पडया कायम रहे, ग्यारे पडमाना पा- लनहारजी ॥ जीस्वा. (अर्ज) ॥ ३६ ॥ जीस्वा- मो उंचा चढीने मालिये, मती जोवजो नरनार- जी ॥ जीस्वामी वश थारो नहीं रेवसी, योतो मन थारो लगारजी ॥ जीस्वा. (अर्ज) ॥ ३७ ॥ जीस्वामी चतराम राखो वेरागका, तोपण आ- पण छांदेजी ॥ जीस्वामी सुई डोरारा न्यावसूं,

थाने राख्यांसुं मिलसी अंधकुपजी ॥ जी. ॥ (अर्ज) ॥ १८ ॥ जीस्वामी दुखमी आरो पांचमो, इतो निन्दाकारी लोगजी ॥ जीस्वामी ओगणावादे जो वोलसी, थेतो शुद्ध पालजो जोगजी ॥ जी. (अर्ज) ॥ ३९ ॥ जीस्वामी सुत्र सिद्धांत वांच्या नहीं, मे सूण्यासुं किया उपायजी ॥ जोस्वामी इणमा ओछो अधको होयतो, मोन सूत्र दीजो बतायजी ॥ जोस्वा. (अर्ज) ॥ ४० ॥ जीस्वामी आचारंगमे चालियो, योतो साध तणो आचारजी ॥ जीस्वामी तिन उण सारे पारसोतो, करसो खेवा पारजी ॥ जोस्वा. (अर्ज) ॥ ४१ ॥ जोस्वामी इरजा भाषा एकणा, वलो ओलखलो आचारजी ॥ जोस्वामी गुणवंत साधु साधवो, जांने वन्दूजो वारंवारजी ॥ जीस्वा. अ. ॥ ४२ ॥ जीस्वामी आप थापो परनिन्दको, तिणमे तेरा दोषजी ॥

जीस्वामी डुजेसम्मरदेखलो, थे किणविध जासो मोक्षजी ॥जीस्वा. अ. ॥ ४३ ॥ जीस्वामी साधु जीमे गुण अति घणा, मांसू पूरा कयोयन जा-यजी ॥ जीस्वामी से ठारे मन भावसी, इतो ढीलानीदव धायजी ॥ जीस्वा. अ. ॥ ४४ ॥ जीस्वामी एरारादना न खेदना, मती करजो ता-णातोणजी ॥ जीस्वामी सादसादवी लेवेजको, उरो लीजो तणीवारजी ॥ जीस्वा. अ. ॥४५॥

(दोहा) मुनीवर उठ्या गोचरी, ईरजा सुमति समार ॥ वेश्यानो पाडो वरजि करी, फिरजो नग्र मुजार ॥ १ ॥

जीस्वामी किणकारण मे वरजियो, थेतो सांभलजो अधिकारजी ॥ जीस्वामी शंका उपजे त्तमें, चारित्रनो होवे विनाशजी ॥ जीस्वा. अ. ॥ ४६ ॥ जीस्वामी मानुपति धारजो, रंग विरंग सुचित आणजी ॥ जीस्वामी जो थोरा

र्यांना भर्तार ॥ सांमल ॥ सु० ॥ १ ॥ एक
न धनजी हो बैठा पाटले, स्नान करे छे तिण
र ॥ आठोही नार्या मिलकर प्रेमसूं, कुड रही
जलनी धार ॥ सा. सु. ॥ २ ॥ सुभद्रा हो
ारी चौथी तयनी, मनमे थई छे दिलगिर ॥
ासु तो निकल्या तेना नेणसुं, कामण कयो थई
उदास ॥ शंका मत राखो मुझ आगले ॥
ारणको कहोनीवीमास ॥ सा. सु. ॥ ३ ॥
ामण कहे हो कंथां माहरो, वीराने चडियो
राग ॥ एक एक नारीओ निसकी परिहरे ॥
जम लेवाकी रही छे लाग ॥ सा. सु. ॥ ४ ॥
नजी कहे हो भोली बावरी, कायर दीसे छे
ारो वीर, संजम मे धारियो ॥
फेर क्यो करणी ॥ का-
ो फो-
यो

स्वामी जिणजीरा वचन हेरादसो तो, करसो खेवा पारजी ॥ जास्वामी. अ. ॥ ५२ ॥ जी· स्वामी सम्मत अढारा छत्तीसमें, जोडी दक्षण देश सुजारजी ॥ जीस्वामी जोमी मोतीचन्द जुगत· सु, गाथा सामलज्जो नरनारजी ॥ जीस्वामी अर्ज सुणो श्रावक तणी ॥ ५३ ॥

वार्तीक याआचार वावनी श्रावकजी केशरी मळजी मापावत जावद वालाका हाथसूं नग्र जावद मदे सम्वत १९६१ ज्येष्ट शुक्ल ३ ने उतारी छे उगाडे सुषे दीवा प्रकाशे नथी वांचवो.

(११) स्तवन धनाशालभद्रजी

(रंगत महलांमें बैठी हो राणी कमलावती)

सूराने लागे वचन जोताजणो, कायरने लागे नहीं कोय सांभ्नल हो सुरता ॥ सूरा० ॥ टेर ॥

नगरीतो राजगरीना वासीया, सेठ धन्नोजी जुगमें सार पूरव पुन्य सुबहुरिध पाविया, आठ

नार्यांना भर्तार ॥ सांमल ॥ सु० ॥ १ ॥ एक दिन धनजी हो बैठा पाटले, स्नान करे छे तिण वार ॥ आठोही नार्या मिलकर प्रेमसूं, कुड रही छे जलनी धार ॥ सा. सु. ॥ २ ॥ सुभद्रा हो नारी चौथी तेयनी, मनमे थई छे दिलगीर ॥ आसु तो निकल्या तेना नेणसुं, कामण क्यो थई छे उदास ॥ शंका मत राखो मुझ आगले ॥ कारणको कहोनीवीमास ॥ सा. सु. ॥ ३ ॥ कामण कहे हो कंथां माहेरो, वीराने चडियो वेराग ॥ एक एक नारीओ नितकी परिहरे ॥ संजम लेवाकी रही छे लाग ॥ सा. सु. ॥ ४ ॥ धनजी कहे हो भोली बावरी, कायर दीसे छे थारो वीर, संजम लेणो तो मनमे धारियो ॥ फिर क्यो करणीया ढील. सा. सु. ॥ ५ ॥ कामण कहे हो कथां माहेरा, मुखसे वणाओ फोकट वात ॥ यो सुख छोडीने वाजो सूरमा, ज-

दी जाणागा प्रीतम सांच ॥ सा. सु. ॥ ६ ॥ अतरामे धनजी उठीने वोलिया, कामण रीजो म्हासूं दूर ॥ संजम लेवांगा अणी अवसरे, जदी वाजांगा जगमे सूर ॥ सा. सु. ॥७॥ बे कर जोडीने सुन्दर वीनवे, कियो हांसीके वशवोल ॥ काचीकी सांचीन कीजे साहेबा ॥ हिवडे विचारीने वाहर खोल सा. सु. ॥ ८ ॥ संजम लेणोहो प्रीतम सोयलो, चलणो कठिन विचार ॥ वाइस परीसा सेणा दोयला ॥ ममता मारीने समता धार ॥ सा. सु. ॥ ९ ॥ उतर पम उत्तर हुआ अतिघणां आया सारारे भवन उगाव. संजम दोई साथे आदरां ॥ उतरोनी कायर नीचे आव ॥ सा. सु. ॥ १० ॥ साला वन्देवी संजम ादर्यों, वीर जिनंदजीके पास ॥ सालभदरजी स्वारथ सिध गया, धन्नोजी सविापुरवास ॥ सा. सु. ११ ॥ समत उगणीसे साल इगसटे,

चितोड कियोरे चोमास ॥ मुनीनंदलालतणा शिष्य गावियो ॥ मनवांचित फलेगा मुझ आस ॥ सांभल हो सुरता. ॥ १२ ॥

(१२) स्तवन नालन्दीपाडानो

रंगत एक कोड पुरव लजपा व्यासाता मूरां देवी माताजी, टेर मगध देशरे मांहि विराजे, सुन्दर नगरी सोवेजी ॥ राजगरी राजा सेण करी, देखन्ता मन मोहेजी ॥ अणि नालन्दी पाडामें प्रभुजी चवदे किया चौमासाजी ॥ टेर ॥ सरावक लोग वसे धनवन्ता, जिन मार्गना रागीजी ॥ धरघर माहे सोनो रुपो, जोत झगामग लागीजी ॥ अ. च. ॥ १ ॥ जडावगेणा जोर विराजे हार मोत्यां नव लडियाजी ॥ वसतर पेरे भारी मोला, गेणारतनां जडियाजी ॥ अ. च. २ ॥ घन धर्मी नालन्दी पाडे, दोन्यो वात विशेखोजी ॥ फिर २ वीर आया वहु विरीया, घणो उपकार जो

देख्योजी ॥ अ. च. ३ ॥ तिनिपाट राजा सेणक-
ना, समकत धारी लगताजी ॥ जिन मारग तो
जोर दियायो, हुआ वीरतणा बहु भगताजी ॥
अ. च. ४ ॥ अणी पियर माहे समगत पावी,
चेलणा पटराणीजी ॥ महा सतीजी संजम
लीनो, वीर जिनन्द्र वखाणीजी ॥ अ. च. ॥५॥
अभेकुंवरजी महाबुध वंता, मंत्रीनी बुध न्नारी-
जी ॥ संजम लेने स्वर्ग पहुंच्या, हुआ एका भव
तारीजी ॥ अ. च. ॥ ६ ॥ ते इस बटा राजा
सेणकना, पहुंच्या अनुत्र विमाणोंजी ॥ दश
पोता देवलोक पहुंचया, चवजासी निरवाणोजी
॥ अ. च. ७ ॥ ते इस राणी राजा सेणकनी,
तपकर देही गालीजी ॥ मोटी सतिया मुक्त प-
ी, काटकरमाकी जालीजी ॥ अ. च. ॥ ८ ॥
म्बु स्वामी तिण नगरी हुआ, आठ अंते वर
परण्याजी ॥ बाळ ब्रह्मचारी भली विचारी, नि-

मेलकीदी किरयाजी ॥ अ. च. ॥ ९ ॥ गोभद्र सेठ अणी नग्री हुआ, सेठे संजम लीदोजी ॥ वीर सरीखा सतगुरु मिलिया, जन्म मरणसूं वीनोजी ॥ अ. च. १० ॥ सालभद्र सेठ अणी नग्रे हुआ, वले वाणियो धन्नोजी ॥ बेन सुभद्रा संजमलीनो, मुक्त जावणरो मन्नोजी ॥ अ. च. ११ ॥ मा सतक श्रावक इण नग्रे हुआ, श्रावक पडमां धारीजी ॥ करणी करने कर्म खपाया, हुआ एका भवतारीजी ॥ अ. च. १२ ॥ सेठ सुदरशन सेठो श्रावक, वीर वादणने चाल्योजी गेला मांहे अर्जुन मिलियो, नरयो कणीसे पाल्योजी ॥ अ. च. ॥ १३ ॥ अर्जुन माली लारे हुओ, वीर जिनेन्द्रने भेटयोजी ॥ मालीने दिराई दिक्षा, डुख नग्रीनो मेटयोजी ॥ अ. च. १५ ॥ मेघकुंवर सेणकनो बेटो, लीनो संजम भारोजी॥ करदीनी काया व्यावचनिमन्ते, कीदी दोय ने

णानीसारोजी ॥ अ. च. ॥ १६ ॥ सेणक राजा समकित धारी, कीदो धर्म उद्योतोजी ॥ एक घरमे दोय तितंकर होसी, दादोने वले पोतोजी ॥ अ. च. १७ ॥ उत्तम पुरुष केई आई उपज्या, श्रावकने वले साधूजी ॥ भगवन्तानी सेवा कीदी, धन मानव त्रवलादोजी ॥ अ. च. १८ ॥ सासण नायक तीरथ थाप्या, सास्ता सुख पाव्याजी ॥ रूषीरायचन्द कहे केवल पाव्या, मुक्त मेलमे जासीजी ॥ अ. च. १९ ॥ समत अढारे गुण चालीसे, नागोर सेर चोमासोजी ॥ पुज जेमलजीरापरसादथी, कीदी जोड हुलासोजी ॥ अ. च. २० ॥ संम्पुर्ण.

अथ गजल विषय पद लिख्यते

(१३) पद गजल

दर्श अपना पियानेमी दिखादोगे तो क्या होगा ॥ तेरा दरशनकि मै प्यासी, रहीनासुद

वुध तनकी ॥ अगर अमीरस कृपा करके, पिला दोगे तो क्या होगा ॥ द. १ ॥ कठिन है संसार कारस्ता, हर एक पगपर लगे ठोकर ॥ अगर मुक्तिके मार्गमे, लगा दोगे तो क्या होगा ॥ द. ॥ २ ॥ कर्म धाती जो है शत्रु, सताते है मुझको हरदम अगर तो ज्ञान केवलसे, हटादोगे तो क्या होगा ॥ द. ३ ॥ पशुपाक्षि छुटा येहै, हजारो दस्त कातिलसे ॥ अगर कर्मोंके बन्धनसे, छुटा दोगे तो क्या होगा ॥ द. ॥ ४ ॥ रामदास रा-जुल करे विन्ती, मुक्तिके पदके कारण ॥ तुम्हि हो नाथ नाथोंके, दिलादोगे तो क्या होगा ॥ ॥ दर्श ॥ ५ ॥

(१४) उपदेश

लगाता दिलतु किसपे है, जहांमें कोन तेरा है, सभी मतलबके गर्जी है. क्यो कहता मेरा २ है ॥ ल. ॥ १ ॥ छिपे रहतेथे महलोमे, हो ग-

हतांन एशोमे ॥ दिखाते मूहना सूरजको, उस-
कोभी कालने हेरा है ॥ ल. २ ॥ मिलके कुम-
ति वदख्वाहने, पिलादी सराव तुझे मोहकी ॥
खबरना उसमे पडती है, कियहां चन्दरोज डेरा
है ॥ ल. ३ ॥ कहां तक यहां लुभाओगे, किआ
खिरजाना तुमको वहां ॥ उठाके चश्म तो देखो,
हुआ सिरपर सवेरा है ॥ ल. ४ ॥ गुरु हीरा-
लालजीके परशाद चौथमल कहे जो चाहो सुख
॥ दयाकी नावपर चढजा, यहां दरियाव गहरा
है ॥ लगा. ॥ ५ ॥

(१५) उपदेश

अरे अज्ञानमे रहकर, क्यों नरभव गमाते
हो ॥ सच्चा दया धर्म श्री जिनका, अमलमे
नी लाते हो ॥ टेर ॥ छे कारणसे करे हि-
, आचारंमे कही जिनवर ॥ अहित समकित
होवेनाश, पाठको क्यो लुकाते हो ॥ अरे ॥

॥ १ ॥ असंख्या है जीव फूलोमे, तृष्लानन्द फर्माया ॥ जरातो सोच ऐ बिरादर, अनाथको क्यो सताते हो ॥ अरे ॥ २ ॥ चईयेका अर्थ एक प्रतिमा, फक्त हुज्जतसे करते हो ॥ करो आवेशये हमसे, क्यो मुहकी वात वनाते हो ॥ अरे ॥ ३ ॥ प्रतिष्ठा नहीं करी साधु, नही श्रावक करी पूजा ॥ नही है मुल सुत्रोमे, क्यो मुरखको वहकातेहो ॥ अरे ॥ ४ ॥ हुए वाल खेलमे गुलतान, नही मानोगे तुम हरगिज ॥ अव तुम्हारी दाल नगलनेकी, क्यो ईर्षा द्वेष वढात्ते हो ॥ अरे ॥ ५ ॥ जेनधर्मी कहलाके, तुमविषे विकारमे वर्तो ॥ आश्चर्य मुझको होता है, क्यो जलमे लाय लगाते हो ॥ अरे ॥ ६ ॥ पडो मत पक्षमे भाई, मिला मुशकिलसे ये नरभव ॥ करो तुम तत्वका निर्णय, काहेको धोका खाते हो ॥ ॥ अरे ॥ ७ ॥ प्राणी रक्षा करो सवमिल, अना-

थोकी दया लाके ॥ देश दरिद्रतामेटो, अब सुले सम्प क्यो न चाहते हो ॥ अरे ॥ ८ ॥ चौथ मल कहे सुनो सज्जन, भजो तुम देव निरंजन॥ करो तुम ज्ञानका अंजन, जो तुम मोक्ष चाहते हो ॥ अरे ॥ ९ ॥

(१६) श्रावक हिदायत

विवेकी हो न टेकीहो, नही मिजाजमे शेखी हो ॥ हजारो मे भी एकीहो, श्रावक हो तो ऐसा हो ॥ टेर ॥ जो अरिहन्तकाध्याता हो, जो नव तत्वका ज्ञाता हो ॥ साया सुरका न चाहता हो, श्रावक हो तो ऐसा हो ॥ १ ॥ संभावी हो नर्माई हो, वो गुणका ग्राही हो ॥ कदर जामे सवाई हो, श्रावक होतो ऐसा हो ॥ २ ॥ नबु- [illegible] करता हो, सदा जुल्मोसे डरता हो ॥ समदृष्ट धरता हो श्रावक हो तो ऐसा ॥ ३ ॥ आचारी हो विचारी हो, वो वारे वृ-

तका धारीहो ॥ स्तोचारी दातारी हो, श्रावक हो तो ऐसा हो ॥ ४ ॥ दयालु हो कृपालू हो, जो शुद्ध श्रद्धा धरालू हो ॥ नसंकालुहो ल-जालु हो, श्रावक हो तो ऐसा हो ॥ ५ ॥ गुरु हीरालालसाज्ञाता हो, चौथ मलको सुख सा-ता हो ॥ रत्नवत हिरदे दिखाता हो, श्रावक हो तो ऐसा हो ॥ ६ ॥

(१७) उपदेश.

अजलका नहीं भरोसा, जरा सोचतो जि-गर ॥ आकवत काले सामान, तूआराम चाहे अगर ॥ टेर ॥ बालक बुढ्ढानागिने, फकीर अ-मीरको ॥ तीतरको दवाता है, बाजमि साले येही घर ॥ अजल ॥ १ ॥ तलवार ढाल बांध-के, फिरता है शूरमा ॥ उसके सामने तो, वो भी धुजता थर थर ॥ अजल ॥ २ ॥ गन

किला बीच, भुंवारामे उतरजा ॥ ह

एक मिन्ट, उपाय क्रोडकर ॥ अजल ॥ ३ ॥ क्यो न बादशाह वोहो, लाखो फोजका सरदार ॥ बडे बडे घमंडीकीजी, नाचली अकड ॥ अजल ॥ ४ ॥ गुरु हीरालाल प्रसाद, चौथमल केहे तुझे ॥ करे जाप वृध मानका, तोपावे मोक्षघर ॥ अजल ॥ ५ ॥

(१८) शिक्षा ज्ञान प्रकाश

सबोमे बडा ज्ञान है, इसको तु पढपढ ॥ ज्ञानके विना न मोक्ष, उपाय क्रोड कर ॥ टेर ॥ पानीमे मच्छ नित रहै, नारीके जटा शीशं नाखुन लम्वे देखलो, सिंहोके पंजपर ॥ सवो ॥ ॥१॥ वुग ध्यान रटे रामशुक, गाडर मुन्डात है येनाचे हिन्ज राख तन, लपेटता है खर॥सवो॥ ॥ ऐसे किये प्रभु मिले तो, इतने देखले बहकौइवद शख्सके, फासेमे आनकर ॥ ॥ सेवा ॥ २ ॥ हेवान इन्सानमे, क्या फर्क है

वता ॥ ये ज्ञानकी विशेषता, जुल्मोसे जायटर ॥ सवो ॥ ४ ॥ पाकीजा दिलको कीजिये, रख रहीम जानोपर ॥ जिन वचनका सेनक लगा, चलराहनेकपर ॥ सवा ॥ ५ ॥ गुरु हीरालाल प्रसाद, चौथमल कहे तुझे ॥ तो वेशक मिले-गा मोक्ष, तुझे वेकिये उजर ॥ सवो ॥ ६ ॥

(१९) उपदेश

दुनियासे चलना है तुझे, चाहे आज चल के कल ॥ अमुल्य वक्त हाथसे, जाता है पल पे पल ॥ टेर ॥ आता है स्वास जिस्मे, प्रभु रटना हो तो रट ॥ चेत चेत बन्दा आई, वहार की फसल ॥ दुनिया ॥ १ ॥ हुआ दिवाना ए शमे, आकबतका खोफनी ॥ सिरे वरे तेरे सदा, धुमता अजल ॥ दुनिया ॥ २ ॥ नेकी वदीका सामान, उठाके पीठपे ॥ खुद कोही चलना होयगा, वडी दुरकी मंजिल ॥ दुनिया ॥ ३ ॥

आबेकफे दस्तके, ज्यो जाती हे जिन्दगी ॥ व-दकारकी वदमे गई, सखी नेककी सफल ॥ ॥ दुनि. ॥ ४ ॥ कहे चौथमल गुरु वकील, आगाही दे तुझे ॥ करले अपील जीव, ओजुं हाथमे मिसल ॥ दुनियां ॥ ५ ॥

(२०) उपदेश

दुनियाके बीच आय तेने, क्या भला किया क्या भला कियारे तेने क्या भला कीया दुनियाके बीच आय तेने, क्या नफा लिया॥दुनिया॥ये मात तात कुटुम्ब बीच, तु लुभाय रहा ॥ जुल्म जहर का पियाला, तेने हाथसे पिया ॥ दुनिया. ॥१॥ अफसोस तेरी तकदीरपे, नरभव गमादिया ॥ इस दुनियासै एसा गया, पैदा भया न भया दुनिया ॥ २ ॥ निलमोकी खान पायके, मोतूरया ॥ दरियावमे रहे प्यासे, वो पछताा गाजिया ॥ दुनि ॥ ३ ॥ लायाथा माल बांध,

वो, पापे खरच कीया. अब आगेका सामान, तेने साथ क्या लीया ॥दुनि०॥४॥ गरू हीरालाल प्रसाद, चोथमल चेता रया ॥ करो दया दान पावो मोक्ष, दुःख नहीं तिहां ॥ दुनि० ॥५॥

(२१) महावीरजीकी गजल

वृधमानकी नोकरवाली, फेररे जिया ॥ सुमरनसे आनन्द ठाठ खुबहोते हैं तियां ॥टेर॥ चोविसवां जिनराज, महावीरजो थया॥ सिधा-रत महाराजजी, घर जनम आलिया ॥ व्रध ॥ १ ॥ रूप अनूपम आपको, त्रसलादे जाविया ॥ पदवी तिर्थंकरकी वरी, घणो ज्ञान लाविया ॥ व्रध० ॥ २ ॥ प्रभुको लेई हाथ इन्द्र मोछवने लाविया ॥ सनान करातां प्रभु गिरको धुजा-विया ॥ व्रधमान० ॥ ३ ॥ पाछसूं महावीर नाम सुर इन्द्र थापिया ॥ बलमे अनन्तो बल समण तपसीजी वाजिया ॥ व्रध० ॥ ४ ॥ वाला

आवेकफे दस्तके, ज्यो जाती है जिन्दगी ॥ व-
दकारकी वदमे गई, सखी नेककी सफल ॥
॥ डुनि. ॥ ४ ॥ कहे चौथमल गुरु वकील, आ-
गाही दे तुझे ॥ करले अपील जीव, ओजुं हा-
थमे मिसल ॥ डुनियां ॥ ५ ॥

(२०) उपदेश

डुनियाके बीच आय तेने, क्या भला किया
क्या भला कियारे तेने क्या भला कीया डुनियाके
बीच आय तेने, क्या नफा लिया॥डुनिया॥ये मात
तात कुटुम्ब बीच, तु लुभाय रहा ॥ जुल्म जहर
का पियाला, तेने हाथसे पिया ॥ डुनिया. ॥१॥
अफसोस तेरी तकदीरपे, नरभव गमादिया ॥
इस डुनियासे एसा गया, पैदा भया न भया
डुनिया ॥ २ ॥ निलमोकी खान पायके, मो-
तूरथा ॥ दरियावमे रहे प्यासे, वो पछता
जिया ॥ डुनि ॥ ३ ॥ लायाथा माल बांध,

वो, पापे खरच कीया. अब आगेका सामान, तेने साथ क्या लीया ॥दुनि०॥४॥ गरू हीरालाल प्रसाद, चोथमल चेता रया ॥ करो दया दान पावो मोक्ष, दुःख नहीं तिहां ॥ दुनि० ॥५॥

(२१) महाबीरजीकी गजल

वृधमानकी नोकरवाली, फेररे जिया ॥ सुमरनसे आनन्द ठाठ खुबहोते हैं तियां ॥टेर॥ चोविसवां जिनराज, महाबीरजी थया॥ सिधारत महाराजजी, घर जनम आलिया ॥ व्रध ॥ १ ॥ रूप अनूपम आपको, त्रसलादे जाविया ॥ पदवी तिर्थंकरको वरी, घणो ज्ञान लाविया ॥ व्रध० ॥ २ ॥ प्रभुको लेई हाथ इन्द्र मोछवने लाविया ॥ सनान करातां प्रभु गिरको धुजाविया ॥ व्रधमान० ॥ ३ ॥ पाछेसूं महाबीर नाम सुर इन्द्र थापिया ॥ बलमे अनन्तो बल समण तपसीजी बाजिया ॥ व्रध० ॥ ४ ॥ बाला

करी हितचितसे, जीनन्द ध्याविया ॥ दुख मेटि जन्म मरणका शिव सुख पाविया ॥ व्रध० ॥५॥ सासनका सिरदार, तिलक ज्यों विराजिया ॥ एकवीस सहस्र बरसका, सासन चलाविया ॥ व्रध० ॥ ६ ॥ उपद्रव आव्या खुब, परीशाकूं सेविया ॥ अनारज खेतरमें जाय, कर्म कर्जा चुकाविया ॥ व्रध० ॥ ७ ॥ पाटानमे मुखपाट, श्री सुधर्मा गाजिया ॥ महावीरके वजीर श्री गोतमजी वाजिया ॥ व्रध० ॥ ८ ॥ गुणतो घणा है नाथ, किम जावेहो कया ॥ क्रोड जिव्हा पार नहीं तो एक जिव्हा कया किया ॥ व्रध० ॥ ए ॥ ये धवल मंगल गजल गाय हर्षते हिया ॥ जावद गुरुप्रसाद घासी लालगारया ॥ १० ॥ समत उगणीसे जाण सतसट साल गाविया ॥ खोट कसर जोहोय कवीजस्स सुधारिया ॥ व्रध० ॥ ११ ॥

(२२) उपदेश. गज़ल

क्या अमोल जिन्दगी तूयत्ननी करे ॥
सूता है मोह नीदमें जगाऊं किसतरह ॥ टेर ॥
कंचनका पलंग सेजपे सुन्दर नेह घरे, लगा भो-
गका तेरे रोग नसीहत क्या करे ॥ क्या अमो०
॥ १ ॥ ले मुखत्यार नामा औरका, वकील हो
फिरे ॥ खुद मिसल कापता नहीं, समझ ये घ-
रे ॥ क्या अमो० ॥ २ ॥ मायाके बीच अन्ध
तुझे, सूझनापरे ॥ करतामजाक औरकी जुल्मो
से नाडरे ॥ क्या अमो० ॥ ३ ॥ क्या किया न
लिया साथ, रहे खजाने सहु धरे ॥ पूछेगा ज-
वांसे जवाब, क्या देवेगा जमधरे ॥ क्या अमो०
॥ ४ ॥ गुरु हीरालाल प्रसाद, चौथमल कहे
सिरे ॥ करकबज माल धर्मका संसारसे तिरे
॥ क्या अमोल० ॥ ५ ॥

२३ गुणग्राम स्वामी महावीर

अर्जी पे हुकम श्री महावीर चढा दोगे तो
क्या होगा ॥ मुझे शिवमेलके अन्दर बुलालोगे

तो क्या होगा ॥ टेर सिवातेरे सुनेगा कौन, मुझसे गरीबकी अर्जी ॥ मुझे वदफेलके फन्दसे छुडा दोगे तो क्या होगा ॥ अर्जी ॥ १ ॥ जगें वहा पेन खाली क्या, क्यातक दीर है ऐसी ॥ नमालूमक्या सबव शकेह, मिटादोगे तो क्या होगा ॥ अर्जी० ॥ २ ॥ पडी है नाव भव जलमें चले वहांमोह की सर सर ॥ करके महरवानी आप तिरादोगे तो क्या होगा ॥ अर्जी ॥ ३ ॥ जोहै तेरी मदद मुझ पेतो, दुशमन कुछ नहीं करता ॥ भरोसाही तुम्हारा है, निभा लोगे तो क्या होगा ॥ अर्जी ॥ ४ ॥ गुरू हीरालालजी गुणवन्ता, वताया रास्ता वहांका ॥ खमा है चौथ मल आकर बुला लोगे तो क्या होगा ॥ जीं ॥ ५ ॥

२४ उपदेश. स्तवन.

॥ १ ॥ स्तवनव पुज्य. मोतीचंन्द्रजीको दे-

शीये, मेलामे बेठीहो राणी कमला वत्तीया रं-
गत, साभलहो श्रावक पुज्य मोतीचंन्दजीमे
गुण छे अति गणा. ॥ याटेर ॥ सेर रतलामना
मुनीजी वासीया. औसबंस अवतार ॥ मेघारा
कुलमै मुनीजी जनमीया, दिपु दिपु करेहो
दीदार. साभलहो श्रावग. ॥ १ ॥ संसार पक्षमै
पीताजी लषपती. पुत्रने दीया श्रुत्र भणाय.
भणी गणीने जठ पंडीत थया. सगपण कीनो
छे मन भाय ॥ सा० पुज्य ॥२॥ बनडा बनाई
नारि परणावीया. पण भतम पुरशातो उचाथाय
बैराग भाव आया नीर्मला. गरुदेव धर्मने शीश
नमाय ॥ सा० ॥ ३॥ वैरागी बनमा नीषरा पा-
दरा. आया छैगाम भणाय. बीरभाणजी गरुने
भेटीया, बै कर जोमीने शीश नमाय. ॥ सा०॥
॥ ४ ॥ संजमतो लीनो पुज्यजी दीपतो, दो
वर्श रयाहो गरुजी पास, एकल बीहारी पुज्य-

जी बीछरा. ढीलाई देषी थया उदास. ॥ सा० ॥
॥ ५ ॥ एकल वीहारी आया मालवे. मुनीवर
काकमा सुत, देवा पंथीहो श्रावक घागणा, जारी
कीरीया गणीहो अदभुत. ॥ सा० ॥ ६ ॥ अ-
णा श्रावकने पुज्यजी नमावीया. जावदकणजे
मों नीमचजाण, और बंमोरो ईत्यादीक गणा.
जारी कलमाकीनी छ पुज्य प्रमाण, ॥ सा० ॥
॥ ७ ॥ तपसा एकातर पुज्यकी दीगणी, एक
पछे वडी बारे मास, जोरलगाई जमा रोपीया,
जीन धर्मना चीत हुलास, ॥ सा० ॥ ८ ॥शीष
जो थयाहो जारे तेजशीगजी, रणवासे जाव
जेसै सुर, जीम पुज्य तेज आई पादरा. संजम
लीयोहो आप हजुर. ॥ सा० ॥ए॥ पाछे पाटो
र पुज्य तेज सीगजी, षुब दीपायो जैन धम,
रीसा सही नेषेतरकाडीया. गीतार्थ होई ने
तोडया कर्म. ॥ सा० ॥ १० ॥ समत १९ साल

गुणंतरेः गरु मोटाहो पुज्य धारचंद, तीण-
रापरसादथी जावद जोमीयो, घासीलालके
हरक आनंन्द. ॥ सा० ॥ ११ ॥ ईती सम्पुर्ण.

(२५) नसीहत उपदेश. गजल

कहताहूं भगवानके मुखारका बचन, सुन
धार लेगे जीव उने बहोतहै धन धन ॥ टेर ॥
जहर तो दुनियाके बीच बहोत है धरा ॥ परज-
बर जहर जाणजो ये क्रोधका खरा ॥कहता॥१॥
॥ पृथ्वीके उपर देखलो, अमृत है सही जिनरा-
जतो अमृत क्षमा रसने कही ॥ कहता हूं०
॥ २ ॥ संसार सागर मायने, दुखियेजो बहोत
है ॥ जिनराजने फरमाया, जादा दुख लोभहै
॥ कहताहूं ॥ ३ ॥

राणाजो राजा बादशा मुल्कोंके सिर मोड
सन्तोष बिन सुखी नही, खजाने गये छोड ॥
॥ कहता ॥ ४ ॥ बन्दूक तोप तलवार सेजो

मारता दुशमन ॥ उनसेभी अधिक जाणजो ये पापके लच्छन ॥ कहता हुं० ॥ ५ ॥ पैसेके मन्त्री जक्तमे छेह देयगा आखर ॥ जिन धर्म मंत्री जाणलो शरीर पेपाखर ॥ कहता हूं० ॥ ६ ॥ जुगजाल वीच मनुष्यको भय है वडे खरे ॥ उनसे भी अधिक जाणलो कुशीलीया घरे ॥ कहता० ॥ ७ ॥ ओपमा वतीस कही शीलजो तणी ॥ विघ्न निवारण है खरी, और सायता घणी ॥ कहता० ॥ ८ ॥ दिदायते है आठ प्रभु वीरने कही ॥ सुन धार लेगे जीव भला होयगा सही ॥ कहता ॥ ९ ॥ उगणीसे समत जाण और गुणतरे सही॥जावद गुरुप्रसाद घासीलालने कही ॥ कहता हूं० ॥ १० ॥

(२६) स्तवन गुण ग्राम

रंगत लारे लागोरे यो पाप करम दुख देलो आगोरे. यो देशी

सतगुरु मारारे सतगुरु मारारे फ-रमावे वाणी अमृत धारारे सतगुरु म्हा० ॥टेर॥ मात पिता अरु कुटम्ब कबीला, घरकी सुन्दर नारेरे ॥ स्वारथ विना नहीं कोई थारो, ज्ञान विचारेरे ॥ सतगुरु० ॥ १ ॥ कूडकपट कर ध-नको जोडे सहे भूख और प्यासेरे ॥ तू जाणे या लारे आसी, छोड सिधास्योरे ॥ सतगुरु० ॥ २ ॥ घडी घडीयो आयु छीजे, खबर पडे नहि कांईरे ॥ मनख जमारो मुशकिल पायो, भली पुन्याई रे ॥ सतगुरु० ॥ ३ ॥ इम जाणीने धर्म करो तुम, परभव साथ सखाई रे ॥ तेजमल कहे सतसट साले, उदयापुर मांईरे ॥ सत गुरु म्हारा० ॥ ४ ॥

(२७) गुणग्राम (उपरोक्त) रं.

संभव स्वामीरे २ प्राणेश्वर मारो अन्तर जामीरे ॥टेर॥राय जितारत नन्द नगीना, सन्या

दे राणी जायारे॥ दुकाल सम्याको सम्मजो कीनो, गर्भमे आयांरे ॥ संभव० ॥ १ ॥ संभव स्वामी मुझ सिरनामी, संभव मोहन गारोरे ॥ संभव जिन जी हिवडे वसियो, संभव तारोरे ॥ संभव० ॥ २ ॥ संभव २ नाम जप्यां सूं आदर वहुलो पावेरे ॥ उलट बातकी सुलटी होवे जग जस गावेरे ॥ संभव० ॥ ३ ॥ गुरु हमारा इन्दरमलजी जेठ गुणंतर मांहीरे ॥ तेजमल कहे शहर जावदमां जोड बणाईरे ॥ संभव० ॥ ४ ॥

२८ स्तवन गुणग्राम गणधरजीनो

गणधर प्यारारे २ श्री विरजी नंदजीका, शिष्य इग्यारारे ॥ गणधर प्यारारे ॥ टेर ॥ इन्द्र भुतीने अग्निभुती, वायुभुती सुखदाईरे ॥ पांच पां-निकल्या लारे सगला भाईरे ॥ गणधर ॥१॥ भुतीनु सुधरमां स्वामी, बीर पाटवी जा-ार, मडी पुत्रने मोरी पुत्रजी, अकंपित आणोरे

॥ गणध० ॥ २ ॥ अचलजीने मेतारजजी. ठेला श्रीपर भासोरे ॥ नाम जप्यां सू आनन्द वर्ते, वंचित थासोरे ॥ गणध० ॥ ३ ॥ गुरु हमारा इन्द्र मलजी, नीमचसेर पदार्या रे ॥ तेजमल कहे जेठ गुणन्तर, चवदस लारेरे ॥ गणधर० ॥ ४ ॥

(२१) गजल

सखीसे केतयूं राजुल किधर येसाम वालाहै ॥ टेर ॥ अरे क्या चूक पडी हमसे क्यो रथको फेर चाला है देखनैमीको दिल राजी फेरती राज माला है ॥ सखीसे० ॥ १ ॥ कोन सखीने नाथ मेरा, भरमके बीच डाला है ॥ मै जोबनरुप अनूपीतेरी सुरतरसाला है ॥ सखीसे ॥ २ ॥ आठ भव कीये प्रीत होती केम तोडी कृपाला है ॥ जरातुम देखलो मोकूं नाथ सेवाके लाला है ॥ सखीसे० ॥ ३ और बर नहीं सखी मेरे फक्त ये नेम काला है धनराजुल सती मोटी पिया सीयलका

प्याला है ॥ सखीसे० ॥ ४ ॥ सेर जावद वसत पंचमी गुरु प्रसाद माला है ॥ तेजमल गुणन्तर साले जोड कीटक साला है ॥ सखीसे० ॥ ५ ॥

३० स्तवन सिद्ध शीलाको

होजी सिद्ध शीला सगलासरे,जोजन पेताळीस लाख हो प्रभु०॥ उरजण सोनामें ऊजळीविस्तार उवाईमें भाखहे प्रभु शिवपुर नग्र सुहावणो ॥ टेर ॥ १ ॥ माने जावण केरो कोड हो, प्रभु पास जिनेसर बीनमु ॥ माने कर्म बन्दनथी छोड हो ॥ प्रभु शिवपुर ॥ २ ॥ थानके सदाईकाल छे सास्वतो ॥ मिल रही जोतमे जोतहो ॥ प्रभु तला लीन एकमे अनेक छे ॥ जाने कदीयन आवे दुःख ॥ हो प्रभु० ॥ ३ ॥ जन्म जरामरण कोय नहीं । नही चिन्ता । शोक हो ॥ प्रभु, सासता सुख साता घणी । ज्यारे कदीयन पडे विजोग हो ॥ प्रभु शिव०

॥ ४ ॥ जठे भूख तिरखा लागे नहो । तिरपत रहे सदा भरपूरहो प्रभु ॥ भणारत उपजे नहीं । नहीं मेलेभव अंकूरहो ॥ प्रभु शिवपुर ॥ ५ ॥ जठे ठाकुर चाकर को नहीं । सगला सरीखा होय हो प्रभु ॥ केवल ज्ञान दर्शने करी ॥ चवदे राजरया छे जोय हो ॥ प्रभु शिव० ॥ ६ ॥ जठे सेठ सन्यापती मींतरवी । सुख भोगवे मंडली कराय हो ॥ प्रभु ॥ बोहला सुख बलदेवना ॥ वासुदेव तुले नहीं थाय हो ॥ प्रभुशिव ॥ ७ ॥ जठे हय गय रथ लख चौरासी ॥ पायदल छिनवे क्रोड हो प्रभु ॥ चवदे रतन नव नीद गेरे एसा नरपत केराईद्र हों ॥ प्रभु शिव० ॥ ८ ॥ होजी चौसट सहेस अंतेवरा । नाटक पडेविध बत्तीस ॥ हो प्रभु । मेलबयालीस भोमिया । सहु राजनमे विशेष ॥ हो प्रभु शिव० ॥ ९ ॥ हो जीवीश तारस्युं करूं वरतंत छे

सुणीने छुटी आसुकी धार ॥ बन्धवसू यूं बोनवे
कांइ, मतलो संजम भार हो ॥ मुझ बंधन० ॥१॥
अठाणु आगे हुआरे, पूर्वपिताके पास ॥ ऐसो
विचार मत करो माने आपतणो विश्वास हो ॥
॥ मुरू ॥ १ ॥ योसगलोई राज लो, छत्र चंवर
ढुराय ॥ आप रेवो संसारमे कांई अर्ज कबुल
कराय हो ॥ मुरू० ॥ ३ ॥ चक्र रत्न निज स्था-
नके, आया नहीं अणी काज ॥ ले असवारी आ
वियो कई, ये अनादी राज हो ॥ मुरू ॥ ४ ॥
नगर बनीता जावतां, पग नही पडे लगार ॥
माजी साव ने जायने हूं कांइ केहूं समाचार
हो ॥ मुरू ॥ ५ ॥ बाहुबल कहे सुनो भरतजी,
नकल गया मुरू बेन, गज दन्तावत नही फिरे
ई ये सुराका बेनहो ॥ मुरू० ॥ ६ ॥ इत्या-
दक समजाविया संजम लियो हित जाण भरत
गया निज सेर बनीता, फेरे अखंडित आणहो

॥ मुऊ० ॥ ७ उगणीसे छाछटमे, उदयापुर चौमास ॥ चोथमल कहे गुरु प्रसादे वर्ते लील विलास हो ॥ मुझ बन्धव प्यारा० ॥ ७ ॥

(३२) स्तवन उपदेश (उपरोक्त) रं०

मोटाने ऐवुं करवो घटतो नथी, मे कहुंछुं पाडी बुंब अती, मोटाने ॥ टेर ॥ आपी हाते वचन बीजाने कहे आसूं थारे काज ॥ मोको आव्या वदली जावे निपटनी आवे लाज॥मोटा॥ ॥ १ ॥ पोते बाग वावीने कोई, ते वाडी मोटी थाय ॥ सींचणकी विरिया जद आवे, टालोखाई जाय ॥ मोटाने ॥ २ ॥ बुडता माणसने पकड निकारे,ला अदविचदे छिटकाय ए विश्वासघातीनो प्रभु मुखडो नथी बताय ॥ मोटा ॥ ३ ॥ मोटा थावो माणसोरे पालो बोल्या बोल ॥मोटा ढोल जेवा नथी थावे माहीं पोला पोल ॥मोटा ॥ ४ ॥ अठारे देशना राजा आव्या, चेडाराजा

नीभीड ॥ साधर्मीनो साज आप्यो निज वचना-
नी पीड ॥ मोटा० ॥ ५ ॥ सांचा थावो काचाने
थावो राखो वचन अटल ॥ गुरु हीरालाल प्र-
साद चोथमल, देवे सीख असल ॥ मोटाने०॥६॥

(३३)स्तवन मुनीराज तेजसिंगजीको (लावणीमे)

मुनीजी बालब्रमचारीहो, स्वामीजी बाल-
ब्रमचारी ॥ मुनी तेजसिंगजी महाराज संथा-
रो । पचक लीयो भारी ॥ टेर ॥ उंकार लालजी
पिता आपका मातादेऊ बाई थारी ॥ उत्तम
जातमहाजन आपहो दिलके बीच ऐसी आणी
॥ मुनीजी० ॥ होस्वा ॥ १ ॥ जगत सहु सुपने
की माया आप नही परण्या नारी ॥ ओसवं-
सबंमोडी गोतहे, नाम तेजसिंगजीहु आधारी
॥ मुनी० ॥ होस्वा० ॥ २ ॥ गाम नकूम की
जन्म भूमिका आप पुरष हो अवतारी ॥ वर्ष
न संसारमें रया, फेर मोह ममता टारी ॥

मुनी० स्वा० मु० ३ ॥ आप पदार्या सेर जाव-
दमे जाणे छे सब नरनारी गुरु भेटया पुज्य
मोतीचन्दजी, मुनी आप पुरुषकी बलिहारी
॥मुनी० स्वा० मुनी ॥ ४ ॥ समत अठारे साल
नेऊमें, पंच महाव्रत लीया धारी ॥ हर्षहुओ
मुनीबोत आपको, जाणे छे दुनिया सारी ॥
मुनी॥स्वा०॥ ५ ॥ साद सादवी श्रावक श्रावका
जाणे खुलरही केसर क्यारी ॥ संजम मोरत सी-
र सातमको, जगतमे पूजे नरनारी ॥ मुनी०
स्वा० मु० ॥ ६ ॥ जावदसे गाम नगरपुर पाट-
ण वीछडया, घणा जीव दीना तारी ॥ मुनी
ज्ञान ध्यानने घणो दिपायो, आप हुआ बडा
उपकारी मुनी० स्वामी० मुनी० ॥ ७ ॥ जीन
मार्गतो जोर दिपायो, मुनीश्रीगरुप लीनोधारी
॥ जावदमे तो आप विराज्या जगतमे मेमा हुइ
सारी मुनी० स्वा० मु० ८ ॥ दिन सातको पा-

क्यो संथारो वरत्या जे जे मंगलाचारी ॥ कर-
जोडी जोरावर वीनवे सेवियो एसा अणगारी
मुनी० स्वा० मुनी० ॥ ए ॥

(३४) स्तवन मुनी शिवलाल
जीमहाराजको (रंगत झालाकी)

पाचमा आरामे दीपता, हो मुनीवर
शिवलालजी महाराज. वाणी तो मीठी
घणी, हो मुनीवर, साकर दुधनी वार, हीवडे
रुचीरया हो मुनीवर शीवलालजी महाराज
॥ टेर ॥ पिता टीकमचंदजी० हो मुनीवर ॥
धन थाको अवतार ॥ माता कुनणा बाईथा, हो
मुनीवर ॥ जाकी कूख लियो अवतार ॥ हिवडे
चरया हो मुनीवर शिवलालजी महाराज ॥१॥
रेवासी सीर धामण्याना हो मुनीवर ॥ धन
धन थारो भाग ॥ गुरु भेटया दियालचन्दजी
हो मुनीवर जिन धर्म लीनो धार ॥ हिवडे रुचि०

॥ २ ॥ गुरु दीयालचन्दजी इम केवे हो श्रावक ॥ त्याग देवे संसार ॥ दुखमी आरो पांचमो हो श्रावक सुख थोडो दुख अपार ॥ ह्विडे ॥३॥ वचन सुएया मुनीवरतणां हो मुनीवर ॥ सेठा-लीनाधार ॥ परणामाकीलेर इम वरते हो मुनीवर ॥ लेसूं संजमभार ॥ ह्विडे० ॥ ४ ॥ रतलाममें संजम लीनो हो मुनीवर ॥ उत्तम पुरुषां के पास ॥ समत अठारासे इकाणुमेहो मुनीवर ॥ मगसर सूदी चानणी छट ॥ ह्विडे० ॥ ५ चेलातो आप छे कीदा हो मुनीवर ॥ चतु-रभुजी दे आद ॥ और चेलाको परवार घणो हो मुनीवर दीपरया रुखीराय ॥ ह्विड रुचि ॥ ६ ॥ अगड पछे वडी तीनकी हो मुनीवर ॥ रहे ढड तापरणाम वाईस परीसा जीतथां हो मुनीवर ॥ लोच छे छे मास ॥ ह्विडे ॥ ७ ॥ वेला तेला घणा कीदा हो मुनीवर ॥ एकांतर

वारे मास ॥ तपसा तो कीदी घणी हो मुनीवर तीणीरो छे यनपार ॥ हिवडे ॥ ८ ॥ वखाण वाणी वाचतां हो मुनीवर ॥ वरसे अमृत धार ॥ उपदेश तो देवो घणो हो मुनीवर ॥ समझे घणा नरनार ॥ हिवडे ॥ ९ ॥ समत उगणीसे तवीस मे हो मुनीवर जावद सेर मुजार ॥ कर जोडीने वीनमु हो मुनीवर ॥ जोरावरमल चुनीलाल ॥ हिवडे रुचीरया हो मुनीवर शिवलालजी महाराज ॥ १० ॥

(३५) स्तवन नसीहत

सुमरण नितकीजे रे प्राणी, थाने कहे छे हो गुरु ज्ञानी ॥ सुमर्ण ॥टेर॥ भजन श्री जिनराजका सरे, और भजन मती जाणो ॥ हिंसा मारग बरजीने प्राणी, निर्वद मारग आणो ॥ सुमरण ॥ १ ॥ काची काया काची माया, काचो जोवन जाणो ॥ काचो है संसार जवरता ॥

साचो जिन धर्म प्रमाणो ॥ सुमरण ॥ २ ॥ काम भोग झूठा कया सयामे खुचता होवे हा णो ॥ मीठी खाज खुजावतां सकाई, पाछे दुख की खाणो ॥ सुमरण ॥ ३ ॥ जजन किया संसारमे सरे, सुख पावे अति जीव ॥ अणी जवमे तो वधे कीरती, परभव मिले शिव पीव ॥ सुमरण ॥ ४ ॥ भजन जजन तो सब कहे सरे, जजनको वडो विचार ॥ जजन जाव जेनाके सेती कयो सास्त्र अुसार ॥ सुमरण ॥ ५ ॥ दानशील तप भाव एरादे, सोइ सुरहें सांचो ॥ ज्ञान दरशण चारित्र विना मणी खोय हाथ लियो काचो ॥ सुमरण ॥ ६ ॥ देख उपदेश बोलमापला, बोलकिताई कपाके ॥ सांचा जिनन्द्रने ओलखीया, कयो आस जडसे राखे ॥ सुमरण ॥ ७ ॥ जजन जक्ति कर मोक्षमें सरे, केही गया नरनार ॥ केइक जीव सुरपद गया सरे, के-

यक जावणहार ॥ सुमरण ॥ ८ ॥ समत उग-
णीसे तिरसटमे सरे माडल गढके माही ॥ घा-
सीलाल और इन्द्रमलने हर्षे जोड वणाई ॥
सुमरण ॥ ९ ॥

॥ अथ वाजिंदका दोहा लिख्यते) हांरे
एक चेत चेतरे चेत अज्ञानी चेतरे हांरे एक
कांकड उनी फौज बुहारया खेतरे । हांरे एक
दारू गोरी नार अडब्बा छूटसी ॥ पण हावा-
जिंद कंचनवरणी काय जडाके टुटसी ॥ १ ॥
हारे एक जजो सुवाहर नामके बैठो ताकमे,
हारे थारो दिनाचारको रंग मिलेगा खाकमें ।
हांरे थारो साहब वेग संभाल कालशिर आवेरे
पिणहां बाजिद जमके हाथ गिलोला पटकन
हाररे ॥ २ ॥ हांरे एक दया समो नहीं धर्म ज-
गतमे औररे । हांरे एक सर्व धर्मको मर्म दीप-
ती कोररे । हांरे एक दया मोक्षको राह पालजो

वीरजी ॥ पिणहां वाजिंद जहां दया जहां जा-
णजो जगदीशजी ॥ ३ ॥ हांरे एक राजावीर
विक्रमादीत तपेछो तेजरे । हांरे वांके चंवर ढुरे
था चार सिंहासन सेजरे । हांरे वांके तुरी पर-
गना गांव हजारा लख है । पिणहां वाजिंद वो
नर गया मसाण लगाया खक है ॥ ४ ॥ हांरे
एक बादशाहीकी सेज पथरना पाथरा हांरे एक
हीरा जड्या जडावक पाया खाटरा । हांरे वांके
हुरमान बी हजुर करे बे वंदगी । पिणहां वाजिंद
विना भजां भगवान पडोला गंदगी ॥ ५ ॥ हांरे
एक दासी नबी आयक दोड्या रावरी । हांरे
बीके ओढन दखनीचीर । फिरे नलावरी हांरे
एक गहली करे गुंमानक गंधी देहनो । पिण-
हां वाजिंद नीर निमाणे जायक पाणी मेहनो
॥ ६ ॥ हांरे एक धन जोबनको गर्व्वन कीजे
वीरजी हांरे एक छप्पर बुढा मेह कहां गया

नीरजी । हांरे एक देखोरे संसार सकल सहु
ऩूल है । पिणहां वाजिंद पाणी पेली पाल वंधे
सो सूल हे ॥ ७ ॥ हांरे एक रोय समाको फू-
लक वनमें फूलियो. हांरे एक झूटीसी
माया देख जगत सहु ऩूलियो. हांरे थारी
माया लेखे लगाय पवनका पेखना पिण-
हा वाजिंद दुनियामे दिन चार तमाशा देखणा
॥ ८ ॥ हांरे एक तीतर चुगवा जाय विचारो
सारमे, हारे एक कांटो उलझो पाख पडयो एक
वाडमे । हांरे वांको जीव गयो घबराय कबाजी
हो गई पिणहां वाजिंद लेमयो कंचन लूटके
कासी रहगई ॥ ९ ॥ हांरे एक उसकी धरती
ख बीजना बोविये, हांरे एक मुरखने समजाय
न। खोवीये । हारे एक नीमने मीटा होय सीच
घीयसे । पिणहां वाजिंद जांका पडया सु-
ऩावक जासी जीवसे ॥ १० हांरे एक डेडीसी

पगम्ही बांधे जरोखे जाकता हांरे एक ताता तुरी पलाण चोवटे डांकता हांरे वांके लारां चढती फौजनगारा वाजता । पिणहां वाजिंद जाने ले गयो काल सिंघजुं गाजतां ॥ ११ ॥ हांरे एक दोय दोय दिपक जोय मंदरमे पोडता हांरे एक नारी हंदानेह पलक नही छोडता। हांरे एक तेल फुलेल लगायक देही चामकी पिण हां वाजिंद गरद मरद हो जाय डुहाई रामकी. ॥१२॥ मोर्यो करे किलोलके चमके वीजरी । हांरे मारा पीव गया परदेश मुझे क्या तीजरी हारे एक ओरां कारंग राग मुझेना देखना. पिणहां वाजिंद अ-पने पिउसे काम और नहि पेखना ॥ १३ ॥ हारे एक शिर पचंरगि पागक जामा जरकसी हांरे एक हातां लाल कवान कमरमें तरकसी हांरे एक घरमें चंगी । नार वतावे आरसी पिणहा वाजींद वो नर गया मसान पढंता पारसी

॥ १४ ॥ हांरे एक राजा रूठो जान नगरने छोड्यो, हांरे एक देवल डगतो जान दूरसे धोकिये। हांरे एक वेश्या सर्प सुनार टरे तो टारिये, पिणहां वाजिंद सला रेटे हाथ कराकर काढ़िये ॥ १५ ॥ हांरे एक बुगलो ध्यान लगायक ऊबो नीरमें। हांरे एक लोग जाणे याको चित्त बसे रघुवीरमें। हांरे वांको चीत माछली मांय करे जिव घातरे पिणहां वाजिंद दगाबाजने नहीं मिले रघुनाथरे ॥ १६ ॥ हांरे एक साईके दरबार पुकारे बोकड़ो, हांरे एक काजी लियां जाय पकड़कर कानको; हांरे एक मेरा लीजे शीश ईनका नालीजिये, पिणहा वाजिंद रंक रावका [illegible]ाय अदल कर दीजिये. ॥ १७ ॥ हांरे एक [illegible]त नारा लेय धरी रहे मातरा। हांरे एक [illegible]ल्या पाव पसार बिछाया सांतरा। हांरे एक लेगया वनके मांय लगाई लायजी, पिणहां वा-

जिंद ऊभा सब परिवार अकेलो जायजी ॥१८॥
हांरे एक किलाकांगरा कोट वाग अरवावमी ।
हांरे एक रहे ठोहकाठोड थके जिम नावमी ।
हांरे एक नोपत और निसाण नगारा त्यागसी
पिणहां वाजिंद ऊभा खिजमज खेत अकेलो
जागसी ॥ १७ ॥ हांरे एक ऊंचा मंदिर महलक
नीचा मालिया, हांरे एक जारी जरोखा वारीक
परदा मोडिया; हांरे एक गलमें सुना काहांस
नाकमें वालिया पिणहां वाजिंद करती पीयासे
बात कदेदे तालिया ॥ २० ॥ हांरे एक मोटाहे
उमराव वडा सिरकारका हांरे एक हाथा लाल
कवानक भलका सारका; हांरे एक नौलख च-
ढता-हार सवालख सूररे, पिणहां वाजिंद सो
नर मारया काल होगइ धुररे ॥ २१ ॥ हांरे ए-
क विरक्त होय वाजिंद वसे जाय वनमे, गले
समूचा सर्प मरे नही मनसे; वोले कीणा वोले

ठजूंका मोरका, पिणहां वाजिंद चाले जीणी चालक लठन चोरका ॥ २२ ॥ हां रे एक आज जलो नहि काल कहतहुं तुझकु नावे वैरी जाण जीवमें मुझकुं, हां रे एक देखत अपनी दिष्टखता क्यों खातहै। पिणहां वाजिंद लोहा काला ताव चल्या क्यों जातहैं ॥ २३ ॥ हांरे एक घमी घमिघमीयालपुकारा कहतेहैं हांरे एक आऊ गइ सववीत अलपती रहतहै, हांरे एक सोवे कहा अचेत जाग जप पीवरे। पिणहां वाजिंद जाणा आजके काल वटाऊ जीवरे ॥ २४ ॥ हां रे एक बमा नयातो कहा—दरत सौ साठका। घणा पढ्या तो कहा चतुर विधि पाठका ठपा तिलक बणाय कमंमल काठका। पिणहां वाजिंद एकन आया हाथ पछेरी आठका ॥ २५ ॥ हांरे एक फरीते निशान नगारा वाजते, हां रे एक आणी फिरे चहुओर चले नर गाजते; हां रे एक हाथी

दिया दानकिया सुखरामरे । पिणहांवाजिंदई सुख निजरा देख भजनका कामरे ॥ २६ ॥ हांरे एक मनकुं जरमे मत्त मरेतो मारिये, हांरे एक कनक कामनी कलंक टले तो टालिये, हांरे एक साधां सेती प्रीत पलेतो पालिये, पिणहां वाजिंद राम भजनमे देह गलेतो गालिये ॥२७॥ हांरे एक सिरपर लंबाकेस चाले गजचालसी । हांरे एक हाथो गय शमशेर ठलकती ढालसी, हांरे एक एताजी अभिमान किहां ठेरायतो । पिणहां वाजिंदज्यों तीतरपरबाज, झपटले जायतो ॥ २८ ॥ हांरे एक जलमे झीणा जीवतो वह हायरे, हांरे एक अन छाण्यो जल आप पीओ मत कोयरे । हांरे एक कांठे कपडे गाले विनाना पोजिये । परहां वाजिंद जीवानी जलमांय जुगतसूं कीजिये ॥ २९ ॥ हांरे एक जुका उरवल देख सुख ना सोमीये, हांरे एक जा

सुमे आखी देयतो आधी तोमीये, हांरे एक आदीकी अदकोर, कोरकी कोररे, पणहां वाजीद,अन्नसरीका दान नही कोइ औररे ॥३०॥ हारे एक मुखसे कयान राम, दया नही गटरे, हांरे एक घरमे नाही अन्न फिरे कही सठरे हांरे एक माथे देदे बोज डुरकु तामीया, पी· णहा वाजीन्द; बीना भजा भगवान याही पीडाणीया ॥ ३१ ॥

(गजल.) सुणो सुजान सतकी यह कैसो बहार है। सतके विना मनुष्यका जीना धिक्कार है ॥ टेक ॥ आना हुवा हरिचंदका जल लेने कूपपे। रानी भी आई उस समय पनघट निहा रहै सुणो सुजान सत्तकीये केसी वहा· रहै ॥ १ ॥ पडी निगाह राणिकी अपने प्राणना· थपे। तनमे देख दूबला करती विचार है। सु· णो० ॥ २ ॥ आंखोंमे जान आलगीहै क्या ग-

जब हुवा, गुलहुस्न वोकहां गया, कहाये दिदार है ॥ सुणो० ॥ ३ ॥ गुरू हीरालाल प्रसाद चौथमल कहे सुनो अपना हुवेसो आपका करता विचारहै । सुणो० ॥ ४ ॥

॥ स्तवन राजा हरिश्चंदको, राग वणजारो ॥

कहे तारा अर्ज गुजारी पिउचाकरनीमैं थारी टेक ॥ मेरे शिरके ताज कहावो थें इतनो संकट उठावो, हाय देखो तकदीर हमारी । पिउ चाकरनी में थारी ॥ १ ॥ कहां राज तख्त भंडारा । कहां मणि मोतियनके हारा । करो कर्मोंने पनिहारी पिउ चाकरनीमें थारी ॥ २ ॥ लख्ते जिगर अहो प्यारे, अहो मुजने नोकेतारे प्रभु केसी वीपता डारी ॥पीउ चा०॥ ३ ॥ कहे हरीचंद राणी ताई, ना उठे गडोदे उठाई; जब राणी करे पुकारी ॥ पी० ॥ ४ ॥ तु भंगी घर रहे । कहे राणी मे वीप्र घर भरु पाणी, लग-

ती हे छोत ये भारी ॥ पी० ॥ ५ ॥ पीउ जेसा सत्य तुमारा, मुझेभी मेरा सत प्यारा जी; ईसका रण ये लाचारी ॥ पी ॥ ६ ॥ पीउ देखीने दुःख तुमारा, मुज लगता बोहत कराराजी; लेकिन सत्यभीन छुटे लगारी ॥ पी ॥ ७ ॥ राणी तरकीबबताई, लीयो हरचन्द घडो उठाइ; गया दोनोही नीज दुवारी ॥ पी ॥ ८ ॥ येसा वीरला आदम जानो, संकटमे सत्य नभानो; हुवा राजा हरचंद जाहारी ॥ पी ॥ ९ ॥ सत सीलसे लक्षमी पावे, मनवंछीत सम्पत आवे, सत धारो सबी नरनारी ॥ पी ॥ १० गुरू हीरालालजी ज्ञानी, चोथमलकुं सीखाई जीन बानी; हे गुरु वड उपगारी ॥ पी ॥ ११ ॥ सेहर जावकेमाही, मेने बीच सभाके गाई, उगणीसे सतसट साल मुजारी. ॥ पी ॥ १२ ॥

॥ अथ परदेशी राजाकी पंचरंगती लाव-

नी देशी (लंगडी) केशी कवर माहाराज, स-
मण भवसागरसे, तीरनेवाले मुनि भान ज्ञानके,
आप अज्ञान तिमरहरने वाले, मुनि भान ज्ञा-
नके आप ॥टेर॥ सावन्ती नगरीसे दयानिध,शीतं-
बका नगरी आया; उपगार जाणके, पांचशे
संतोकुं संगमें लाया. उपगार ॥ चित प्रधान,
सुणी मुनि आगम, अती चैन चितमै पाया; प-
रदेशी भुपकुं, करी तजबीज वहां लेकर आया
॥ परदेशी ॥ शेर ॥ राजा और परधान दोनु,
अस्वलिया कर धारजी, इधर उधर टेलावता,
आया नजर अणगारजी, सुण चीताये जड मु-
रख, कोनहै बेकारजी, बैनतो मीठा लगे है दी-
पता दीदारजी ॥ छोटी कडी ॥ तब चतुर चित
युं कहे सुनों महाराया, ये केशी कुवर निग्रंथ,
मैभि सुण पाया; ये अलग अलग दो माने जीव
और काया, ये पुरंन ज्ञान भंडार तजी मोह मा-

या ॥ द्रोण ॥ ईतनी सुणके नृप चीत जीसे राहा पुछी माहाराज मुनीपे, दोई मोल आयाजी; हे अवद ज्ञान तुम पास, पुछे परदेशी रायाजी, जुदा न चोर बनीया उपठराहा पुछे ॥ माहाराज मुनी द्रष्टांत सुणायाजी, तेने संतोका अपराद्ध कीया, नही शीश नमायाजी ॥ दोड ॥ सुणके संतोके बेण, नृप कीया नीचा नेण; मेरे असलमे सेण जब कठन कही,(जब)राजा बोले युं शीताब, खंम्यावंत सादु आप गुना कीजे सब माफ, मेरी भुल रही, मेरी० थोडी वखत के काज, यहा बेठु मैं आज, मृजी होयतो माहाराज, दीजे हुकम सही दीजे. जरा. समज रान, येतो तेराही आरान, हमतो साउहै महा-, करे मना नही, करे. ॥ मीलाप ॥ राजा मनमे जान गया, ये मुजे न्याल करने वाले; मुनी भान ज्ञानके, आप अज्ञान तीमर हरने

वाले ॥ १ ॥ वैग नृप पुछे करजोडी, क्या मा-
नो तुम करो मया; तब नरी सभामे मुनीश्वर
जीवरु काया अलग कया;जब मेरा दादा था अती
पापी नहींथी उनके जरा दया; वो आउष कर-
के, तुमारीके नमु जबतो,नरक गया (वो आउष)
॥ शेर ॥ मैं पोतो अती प्राण प्यारो कहै मुझे
वो आयजी, तो जीव काया है अलेदी, मानतो
तुम वायजी; मधुर वेण मुनीवर कहै सुण ध्यान
धरके रायजी, तेरा दादा नरकसे, केसे सके वो
आयजी (छोटी कडी) तेरी सुरी कंथा नार
करके शीणगारा, अन्य पुरषके साथ; बीलसे
सुख संसारा. तेने खुद आखोंसे देखलीया क्रम
सारा, सच बोल उसे क्या देवे डंडनोपाला. द्रोण
॥ततकाल खडग नीकाल उसै में मारु माहाराज
करे तुजसे नरमाईजी; मत मारो मुजे माहारा-
ज, करु ऐसा कभी नाईजी; क्या कहो आप मे

हरगीज कभी ना छोडुं, माहाराज कहै फिर तरक उठाईजी, मै मीलु कुटबसे जाय, आउ पीछे खीन माहीजी; (दोड) राजा कहै युं वीचार मेराहै वो गुनेगार; मैंतो छोडुना लगार, केसे घर जावे, केसे० ईसी भवमै साक्षात, उसके कुटंबके साथ, दुख आरामकी बात, किम दरशावे, किम० तेरा दादाकहुं साफ करके अष्टा दश पाप; गया नरकमें आप, ईया कीम आवे ईया. जीव काया न्यारी मान, राजा तुंहे बुद्धीवान; झुटी टेक मती तान; मुनि फुरमावे (मुनि) मीलाप. नही मानु माहाराज आप बुद्धीसे कथन करन वाले, मुनि भान ज्ञानके ॥ २ ॥

[illegible]ी दादीथी गुणवंती, दया धर्मसे हटी नही; करि बोहोत तपशा; तुमारी सरदासे, सुरलोक गई (करि बोहत तपशा,तुमारी उनकुं कोंन रोकने वाला; वो अपने आधीन रही, मेया अती

प्यारा; आज दीनतक ना मुजसे आन कही. मेथा शेर ॥ दादी आय मुज भाकती; सुरलोक-का बयानजी; तो जीव काया है अलेदी लतो क्यों नां मानजी; नृप कहे ईस कारणे, मेराहै मत परमानजी; कीजे खुलासा वातका; वेठ सब ईनसानजी ॥ छोटी कडी ॥ ईतनी सुणके मुनीराज नजीर सुनावे, करी सनान नरपतु देव पुजवा जावे; एक भंगी देखतारचमे तुजे बुला-वे, सच बोल वहांतुं; जावे के नही जावे. ॥ ॥ द्रोण ॥ नरनाथ कहै जानातो दुर रहै नेदो; माहाराज उधर देखुभी नाहीजी; वो माहा अ-शुची ठाम, और डुरगंध उस माहीजी, ईस म-नुष्य लोककी, डुरगंध ऊंची जावे, माहाराज पानसे जोजनताईजी, ईस कारण करके राय देवता सकेने आईजी, दोड ॥ अबतो समज तु राय, पक्ष छोडदे अन्याय; मान जीव और काय;

अपनी क्यो तानें अप सची कहुं मुनिराय, येतो बु-
द्धीसे बनाय; दीनी जुगत जमाय हम नही माने.
हम० एक चोर हात आया, लोहाकोटीमे धरा-
या; पुरा जापता कराया; ठाया पुरशाने ठा०
केही दीनोमे कडाया, वोतो मरा दरशाया; छेक
नजर न आया करी पहीचाने. करी. मीलाप ॥
केशे मानु जीव अलग, कहो शंशे दुर हरने
वाले; मुनी० आ. ॥ ३ ॥ लेकर ढोल जुंकोही
पुरष बेठे जाकर भोइरा माई; उपरसे शीला
ढाककर लेप करे अती चतुराई; उपर भीतर ढो-
लका शब्द करे वो, बाहीर नीकशे के नाही, सच
बोल नरपती, छीद्र कहो देवे कोशोकु दरशाई.
चo शेर ॥ छीद्र नही केना पडे, पण शब्द
कले आयजी; प्रतीत कर ईस न्यायसे, परदे-
शी नामे रायजी, जीवभेद पखानकुं उचाईसीत
रह जायगी; दोनु चीजेंहे अभेदी मानले मुज-

वायजी, ॥ छोटी कडी ॥ तुम बुध्दीवान मुनी, दीनी जुगत जमाई; मेरे तो दीलमे हरगीज बेठे नाई, एक दीन चोरकुं मारा सास रुकाई, लोहोकी कोठीमे, दीना उसे धराई, ॥ झोण ॥ फिर ढाकण ढांक, छिद्रकु बंद कराया, माहाराज रख्या कीतना दीन ताईजी; देखातो खोलके कीडे बोहत उसके तन माहीजी; बाहिरसे भीतर जीव जीधरसे आए, माहाराज वीइ देता दरशाईजी, तो लेता मान माहाराज तर्क करताभी नाहीजी.॥ ॥ दोड ॥ गोला लोहाकाझाल दीया अगनमे डाल;धमता देख्याथे भोपाल,हांहां भुप कही हां धमे धमण दवाय, तामे अग्न भराय, उस गोलेके राय;छीद्र होय या नही. नृप कहै युं बीचार,उस गोलेके मुजार;छेक होयना लगार,येतो वात सही० वस यही मीशाल मान मान महीपाल; मी थ्या भरमकु टाल, मुनी बोहात कही; मुनी०

(मीलाप) नही मानु माहाराज आप बुधीसे कथन करने वाले, मुनी ज्ञान ॥ ४ ॥ सब जीवोकी शक्त सरीकी हेया नही मुजे दीजे कही; तब मुनीवर बोल्या, सरी कीशगतहै ईसमै फरक नही ॥ तब ॥ तरुण पुरुष दील चाहे वहा खुद डाले तीरतो पडे जाइ, उतनीही दुरपे लघु बालकसे कहो किम जाय नही. उतनी. शेर ॥ धनुष नवा जोवानवी, द्रढबंदउसके रायजी; तरुन पुरुष जब तीरवावे, जायके नही जायजी. नुप कहै हां क्योन जावे, मुनी दीया फीर न्यायजी, धनुष्यादिक कची हुवे तव जायके नही जायजी, ॥ गेटी कडी ॥ ईतना तो दुर वो तीर जाय कबु नाही, बस यही न्याय तुं समज नमनमाही, ये तुरण पुरुष सम जिव, धनुष माही जैसा हो वैसा प्राक्रम दे दरशाही. ॥ द्रोण ॥ क्यों करे तान लेमान, जीव

थ्रौर काया, माहाराज त्रुप कहे शीश हीलाई जी, तुम बुद्धीवान महाराज, मानु मे हीरगज नाईजी, जीतना लोहाका भार तुरग ले जावे, महाराज धरी कावड के माईजी, उतनाही भार अती ब्रद्ध क्यों ना लेजाय उठाईजी ॥ दोड ॥ जो मीलती हे महान जीव काया लेतो मान, एती करनेसे तान, मेरे गरज कई, कावड नवी होतो राय, लोहा धरके उस माय, तुरग पुरष उगाय, लेजाय या नही. नृप कहे हां लेजाय, फीर वोले मुनीराय, कावड जुनी होतो राय, अव वोल सही, नही नही क्रपाल, कावड जी-रण दयाल, मुनी जीवपे मीसाल, उतार दही. (मीलाप) नही मानु माहाराज आप बुद्धीसे कथन करनेवाले, मुनी ज्ञान ॥ ५ ॥ पहेले तोल त्राजुमे चोरकु मारा खुन नीकलाभि नही, कीया प्रशन सातमा, फेर तोला तो वजनमें

(मीलाप) नही मानु माहाराज आप बुधीसे कथन करने वाले, मुनी ज्ञान ॥ ४ ॥ सब जीवोकी शक्त सरीकी हेया नही मुजे दीजे कही; तब मुनीवर बोल्या, सरी कीशगतहै ईसमै फरक नही ॥ तब ॥ तरुण पुरुष दील चाहे वहा खुद डाले तीरतो पडे जाइ, उतनीही दुरपे लघु बालकसे कहो किम जाय नही. उतनी. शेर ॥ धनुष नवा जीवानवी, द्रढबंदउसके रायजी; तरुन पुरुष जब तीरवावे, जायके नही जायजी. नृप कहै हां क्योन जावे, मुनी दीया फीर न्यायजी, धनुष्यादिक कची हुवे तब जायके नही जायजी, ॥ छोटी कडी ॥ ईतना तो दुर वो तीर जाय कबु नाही, बस यही न्याय तुं समज न मनमाही, ये तुरण पुरुष सम जिवं, धनुष माही जैसा हो वैसा प्राक्रम दे दरशाही. ॥ द्रोण ॥ क्यों करे तान लेमान, जीव

और काया, माहाराज नृप कहे शीश हीलाई जी, तुम बुद्धीवान महाराज, मानु मे हीरगज नाईजी, जीतना लोहाका भार तुरण ले जावे, महाराज धरी कावड के माईजी, उतनाही भार अती व्रद्ध क्यों ना लेजाय उठाईजी ॥ दोड ॥ जो मीलती हे महान जीव काया लेतो मान, एती करनेसे तान, मेरे गरज कई, कावड नवी होतो राय, लोहा धरके उस माय, तुरण पुरष उठाय, लेजाय या नही. नृप कहे हां लेजाय, फीर बोले मुनीराय, कावड जुनी होतो राय, अब बोल सही, नही नही कृपाल, कावड जी-रण दयाल, मुनी जीवपे मीसाल, उतार दही. (मीलाप) नही मानु माहाराज आप बुद्धीसे कथन करनेवाले, मुनी ज्ञान ॥ ५ ॥ पहेले तोल त्राजुमे चोरकु मारा खुन नीकलाभि नही, कीया मशन सातमा, फेर तोला तो वजनमें

आया वही,(कीया) कमती होता जरा बजनमे, तो मे लेता मान सही, फिरतर्क उठाके, संतो· से जुगी तान करताभी नही, फीर. ॥ शेर ॥ हवा ज्यारी चरम दीवडी देखी कभी थे रायजी, हां हां देखी शामजी, कीरपा करी फरमायजी, पहेले तोल, बंद खोलदे, नही रहे हवा उस मायजी, फीर तोले तो बजममे कमती हुवे या नायजी, (छोटी कडी) वो वजन माय कमती तो हुवे कछु नाइ; बस यही न्याय, तु समज नरप मनमाही, जोरुपी हवा नही दव ज्यार दरशाई, तो जीव अरुपी ये क्या बजन गीनाई. (द्रोण) क्यों करे तान लेमान जीव ओर काया, महाराज चुप कहे, शीश हीलाई तुम बुद्धीवान महाराज मानु मै हीरगज जी, एक मारा चोर ततकाल बोहत खंड ·, महाराज जीव फीर देखा माहीजी, जो

आता नजर तो लेता मान, हट करता नाहीजी, (दोड) मुनी कहे यु बीचार, राजा तुंतो है गवार, जेसा था वो कठीयार, कोई फर्क नही, कठीयारा कीस न्याय, मुजे कया मुनीराय, आप दीजे फुरमाय, भृम मीटे सही, मीलके बहु कठीयार, गया बनके मुजार. उसमें था एक गवार ताकु अज्ञा दई. ईस अरणीसे ततकाल लीजे अगन नीकाल करजे रशोई तयार आ वांई धन लई (मीलाप) वो मुरख अरणीकुं कापी खंड खंडमें अगनी न्हाले,मुनीज्ञा॥६॥के॥ नही मीली अरणीमें अगनी सोच करे आसु डारे ई धन ले लेके, आय जंगल सेवो सब कठीयारेई पुछि बात मुरखसे तबतो वीतक हाल कया सारे, अरणीकुं गीसके बताई अग्नकाम कर ततकालेअ॥शेर॥आहार कर फीर ईंधन लेकर गया वो नगरी मायजी, जेसा काम उसने [

तैसा कीयाथे रायजी गती अग्न अरणी वीखे नही आवे नजरे रायजी, जीवकाया है अलेदी मानले ईस न्यायजी (छोटी कडी) बीधवान मुनी तुम माय बोहत चतुराई, नही मानु मेतो ये मनसे जुगत जमाई, नवमा परशन नृप करे शभाके माही, है केशा जीव तुम दो अपना द-रशाई (द्रोण) मुनीराज कहै सुण नरपत ईस दरखतका, महाराज पत्र कहो कोन हीलावेजी, नही देवादिक माहाराज पवन ईसकुं कंपावेजी, जो पवन चीज, सत्य बोल नरप तु देखे, महा-राज नजर येतो नहीं आवेजी, तो जीव अरुपी चीज कहो हम केसे बतावेंजी (दोड) अरे छोड तान; राजा तु है बीधवान, जीव दोनु मान, बहोत देर नही, प्रशन करे राय, हाथी कुंथवाके माय, जीव सम है, या नाय मुजे दिजे कही, नीशै समजतु राय

हाथी कुंथवाके माय जीव सरीका गीणाय को-
ही फरक नही मोटी चीज मुनीराय केम छो-
टीमे समाय; कहो नजीर लगाय, मीटे भरम
शही (मीलाप) दीनजीर दीपकभांजनकी
न्यायपंथचलने वाले;मुनी ज्ञान॥७॥केशी॥अबतो
मान जीव और काया क्यों इतनीतु कहलावे, तब
बोले नरपती; पुरानी शरधा नही छोडी जावे तब
लोहो बनीयाकी तरह या दरख अरे नरपतु पछ-
तावे; मुनी शाफ शुनाई, छोड मीथ्या शरदा
कीम शरमावे, मुनी० शेर ॥ लोहो बनीया केसे
हुवा तुम कहो मुजे समजायजी, तब मुनी कहै
तुम साभलो, एक ध्यान धरके रायजी,धन अर्थी
बहु वाणीया जाताथा जंगलमायजी, एक खान
देखी लोहोकी लीनाहै सबने उठायजी (छोटी
कभी) आगे जाता तांबाकी खान जब आई
लेलीया तुरत सब लोहो दीया छटकाई, था एक

अनाफी उसने माना नाही, करी दया इष्ट सब लोग रया समजाई (डोण) रुपेकी खान सोनेकी फीर रतनोकी, माहाराज बजर हीरोकी आईजी, लेलीया अदीकसे अदीक तजा सस्तेकुं वाहीजी, सब लोक कहे लेले तुम्ही क्या देखे महाराज, मुढ हट छोडे नाहीजी, मे बहोत डुरका लीया, भार कीम दुं छटकाईजी ॥ दोरू ॥ लेलेके धनमाल, अती होयके खुशाल, घर आया सब चाल, अती सुख पावे, उस मुरखकी बात, अब सुणो नरनाथ, लीया लोहेकु साथ, बेचन जावे, सीधा बाजारमे आया बेचा लोहाजो लाया; मोल थोरूासा आया, मन पछतावे, दीनी मैनेजो मींशाल, एसाहै तु महीपाल, लीजे अबही सम्माल मुनी फुरमावे (मीलाप) साफ साफ मुनीराज कही, राजासे नही मरने वाल, मुनी ज्ञान ज्ञान॥८॥ नही बनुं लोह बनीया जैसा कहे

नरपयु करजोमी, मन वच कायासे, मेतो मी
थ्या सरदा गेडी गेडी, मान लीया जीवादीक
मेने, बोत करी लंबी चोमी, दीलमे मतलाना,
क्योकु माहाराज, हमारी बुद्ध थोडी, दिल ॥
शेर ॥ अब मुजकुं धर्मदेशना; फरमावो कीरपा
नाथजी, वैराग रंग ऐसा चडे उतरे नही दीन-
रातजी; मधुर कथा मुनीवर कही, तब जोडी
दोनु हातजी सरध्या बचनमे आपका, युबी नवे
नरनाथजी (गेटी कमी) वो धन पुरषजो सं-
जगका व्रत धारे एसातो नाव नही है महाराज
हमारे, मुजे श्रावगका व्रत दीजे, कीजे नवपारे
बीन एसा गुरुके कोन करे नीस्तारे (द्रोण)
तव मुनीराज, भुपतकु व्रत धराया, महाराज ब-
होत उपकार कमायाजी, गया नीज स्थानक
महीपाल, खुशीका पार ने पायाजी, फीर बीजे
दीन, बहु वीदसजके असवारी,

पंत वंद न आयाजी, करजोम नमाके शीश, सबही अपराध खमायाजा (डोम) राजा सुण- ले एक सीक, मत होजे (श्र रमणीक) अरे पा- रजे तुठीक, व्रत नेम लीया व्रत ॥ मेरे जीतनाहे राज इस राजके महाराज; तुम चार हीस्से आज मेने कीया कीया तीज चोथे हीस्सेका आदान दुखी दुर्बल गीलयाने, ताकु दुगा मेदान; कहुं प- गट ईहा, लीया सुजस अपार; करके बहु उप- गार; लेके संतोको लार; मुनी व्यार कीया (मी- लाप) नरनारी धुन बोल रहे, नगरीमे सुख करनेवाले मुनी ज्ञान ज्ञानके) ॥ १ ॥ महीपत पण नीज भवन गया; स्रावगका व्रत सुद्द पाले ; बेराग रंगमे सदा अतीचार दोषकु टाले हे. । करके तपसा, पुरब संचीत पाप कर्मकु गाले है. खुद उसी दीनसे, राजका काजभी नही सं- भाले हैः घुद ॥ शेर ॥ माफबल बरायनी तब

सुरीकंथा नारजी, कोई दीन मन चीतवे, अर-
म्यो है मुज भरतारजी; नीज पुतर बुलवायके,
युं बोले शंक नीवारजी, तुज पीताकुं, अगन या
वीष शस्त्रदे मारजी (गेटी कडी) तो राजपाट
सब देउगा तुज ताइ, ईतनी सुणके हांनांजी
कयो कछु नाही, फीर वोही बात दो तीन दफे,
फरमाई, विनउत्र दीया गयो ततखीन कुंवर च-
लाईः द्रोण ॥ तब पापल बुधी नार बीचारे मन-
मे, माहाराज कीजे अब कोन उपायाजी, बीष
मीश्रत अहार बनाय, पतीकु नोथ जीमायाजी;
एक लेतां ग्रास नृप जाण गयो बुधीसे; महारा-
ज रानीये रोस न लायाजी; उठ चाल्या आप,
शीताब धर्म स्थानकमे आयाजी ॥ दोरू ॥
बीदी सहीत चटपट, कीया अणसण जटपट
नही काहुसे लटपट, नृप अमोल रयानृः बहु
पापकु परवार, सुद भावोमे नोपाल, करके

काल समे काल, पेले सुर्ग गयो, माह्रा बीद इषेत्र माही, कम अष्ठकुं खपाई; जासी मुगतके माही, जीन राज कया: समत १९ से छतीस उपर अदक बतीस, पुरे दीन एकवीस; सालको टरया. ॥ मीलाप ॥ मेरे गुरु नंदलाल मुनी, जीनवरसे ध्यान धरने वाले; मुनी ज्ञान ज्ञानके ॥ १० ॥

॥ समाप्त ॥